

سُورَةُ الْبَقَرَةِ - 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سُورَةُ الْبَقَرَةِ के संक्षिप्त विषय

यह سُورَةُ الْبَقَرَةِ मदनी है, इस में 286 आयतें हैं।

- यह सुरह कुर्अन की सब से बड़ी सुरह है। इस के एक स्थान पर "बकरह" (अर्थात् गाय) की चर्चा आई है जिस के कारण इसे यह नाम दिया गया है।
- इस की आयत 1 से 21 तक में इस पुस्तक का परिचय देते हुये यह बताया गया है कि किस प्रकार के लोग इस मार्गदर्शन को स्वीकार करेंगे, और किस प्रकार के लोग इसे स्वीकार नहीं करेंगे।
- आयत 22 से 29 तक में सर्व साधारण लोगों को अपने पालनहार की आज्ञा का पालन करने के निर्देश दिये गये हैं। और जो इस से विमुख हों उन के दुराचारी जीवन और उस के दुष्परिणाम को, और जो स्वीकार कर लें उन के सदाचारी जीवन और शुभपरिणाम को बताया गया है।
- आयत 30 से 39 तक के अन्दर प्रथम मनुष्य आदम (अलैहिस्सलाम) की उत्पत्ति, और शैतान के विरोध की चर्चा करते हुये यह बताया गया है कि मनुष्य की रचना कैसे हुई, उसे क्यों पैदा किया गया, और उस की सफलता की राह क्या है?
- आयत 40 से 123 तक, बनी इस्राईल को सम्बोधित किया गया है कि यह अन्तिम पुस्तक और अन्तिम नबी वही हैं जिन की भविष्यवाणी और उन पर ईमान लाने का वचन तुम से तुम्हारी पुस्तक तौरात में लिया गया है। इस लिये उन पर ईमान लाओ। और इस आधार पर उन का विरोध न करो कि वह तुम्हारे वंश से नहीं है। वह अरबों में पैदा हुये हैं, इसी के साथ उन के दुराचारों और अपराधों का वर्णन भी किया गया है।
- आयत 124 से 167 तक आदरणीय इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के काबा का निर्माण करने तथा उन के धर्म को बताया गया है जो बनी इस्राईल तथा बनी इसमाईल (अरबों) दोनों ही के परम पिता थे कि वह यहूदी, ईसाई या किसी अन्य धर्म के अनुयायी नहीं थे। उन का धर्म यही इस्लाम था। और उन्होंने ही काबा बनाने के समय मक्का में एक नबी भेजने की

प्रार्थना की थी जिसे अल्लाह ने पूरी किया। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धर्म पुस्तक कुर्�आन के साथ भेजा।

- आयत 168 से 242 तक बहुत से धार्मिक, सामाजिक तथा परिवारिक विधान और नियम बताये गये हैं जो इस्लामी जीवन से संबन्धित हैं। और कुछ मूल आस्थाओं का भी वर्णन किया गया है जिन के कारण मनुष्य मार्गदर्शन पर स्थित रह सकता है।
- आयत 243 से 283 तक के अन्दर मार्गदर्शन केन्द्र काबा को मुश्ऱिकों के नियंत्रण से मुक्त कराने के लिये जिहाद की प्रेरणा दी गई है, तथा ब्याज को अवैध घोषित कर के आपस के व्यवहार को उचित रखने के निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 284 से 286 तक अन्तिम आयतों में उन लोगों के ईमान लाने की चर्चा की गई है जो किसी भेद-भाव के बिना अल्लाह के रसूलों पर ईमान लाये। इस लिये अल्लाह ने उन पर सीधी राह खोल दी। और उन्होंने ने ऐसी दुआयें की जो उन के ईमान को उजागर करती हैं।
- हदीस में है कि जिस घर में सूरह बक़रः पढ़ी जाये उस से शैतान भाग जाता है। (सहीह मुस्लिम- 780)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. अलिफ, लाम, मीम।
2. यह पुस्तक है, जिस में कोई संशय (संदेह) नहीं, उन को सीधी डगर दिखाने के लिये है, जो (अल्लाह से) डरते हैं।
3. जो गैब (परोक्ष)^[1] पर ईमान (विश्वास) रखते हैं, तथा नमाज़ की

الْوَلِيُّ

ذَلِكَ الْكِتَابُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ هُدًى لِلْمُسْتَقِيْمِ

الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَيَقِيْمُونَ الصَّلَاةَ

¹ इस्लाम की परिभाषा में, अल्लाह, उस के फ़रिशतों, उस की पुस्तकों, उस के रसूलों तथा अन्तिम दिवस (प्रलय) और अच्छे बुरे भाग्य पर ईमान (विश्वास) को (ईमान बिल गैब) कहा गया है। (इन्हे कसीर)

स्थापना करते हैं, और जो कुछ हम ने उन्हें दिया है, उस में से दान करते हैं।

وَمِنَ الْأَنْذِرِ^۱ مَا يُنْهَىٰ عَنِ الْمُنْهَىٰ

وَالَّذِينَ يَعْمَلُونَ بِمَا أُنزَلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أَنْزَلَ مِنْ كِتَابٍ
وَبِالْأَخْرَىٰ مُعَذَّبُونَ^۲

4. तथा जो आप (नबी) पर उतारी गई (पुस्तक-कूर्झान) तथा आप से पूर्व उतारी गई (पुस्तकों^[1]) पर ईमान रखते हैं। तथा आखिरत (परलोक)^[2] पर भी विश्वास रखते हैं।
5. वही अपने पालनहार की बताई सीधी डगर पर है, तथा वही सफल होंगे।
6. वास्तव^[3] में जो काफिर (विश्वासहीन) हो गये (हे नबी!) उन्हें आप सावधान करें या न करें, वह ईमान नहीं लायेंगे।
7. अल्लाह ने उन के दिलों तथा कानों पर मुहर लगा दी है और उन की आँखों पर पर्दे पड़े हैं। तथा उन्हीं के लिये घोर यातना है।
8. और^[4] कुछ लोग कहते हैं कि हम अल्लाह तथा आखिरत (परलोक) पर

أُولَئِكَ عَلَىٰ هُدًىٰ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَأُولَئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ^۱

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوْءَاءٌ عَلَيْهِمْ مَا نَذَرُهُمْ
أَمْ لَمْ يُنْتَنِ رُهْبَانٌ لَا يُؤْمِنُونَ^۲

خَلَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ وَعَلَىٰ
أَبْصَارِهِمْ غَشَاةٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ^۳

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ أَمْنًا بِاللَّهِ وَبِالْيَوْمِ

1 अर्थात् तौरात, इंजील तथा अन्य आकाशीय पुस्तकों पर।

2 आखिरत पर ईमान का अर्थ है: प्रलय तथा उस के पश्चात् फिर जीवित किये जाने तथा कर्मों के हिसाब एवं स्वर्ग तथा नरक पर विश्वास करना।

3 इस से अभिप्राय वह लोग हैं, जो सत्य को जानते हुए उसे अभिमान के कारण नकार देते हैं।

4 प्रथम आयतों में अल्लाह ने ईमान वालों की स्थिति की चर्चा करने के पश्चात् दो आयतों में काफिरों की दशा का वर्णन किया है। और अब अब उन मुनाफिकों (दुविधावादियों) की दशा बता रहा है जो मुख से तो ईमान की बात कहते हैं लेकिन दिल से अविश्वास रखते हैं।

ईमान ले आये। जब कि वह ईमान नहीं रखते।

9. वह अल्लाह को तथा जो ईमान लाये, उन्हें धोखा देते हैं। जब कि वह स्वयं अपने आप को धोखा देते हैं, परन्तु वह इसे समझते नहीं।
10. उन के दिलों में रोग (दूषिधा) है, जिसे अल्लाह ने और अधिक कर दिया। और उन के लिये झूठ बोलने के कारण दुखदायी यातना है।
11. और जब उन से कहा जाता है कि धरती में उपद्रव न करो, तो कहते हैं कि हम तो केवल सुधार करने वाले हैं।
12. सावधान! वही लोग उपद्रवी हैं, परन्तु उन्हें इस का बोध नहीं।
13. और^[1] जब उन से कहा जाता है कि जैसे और लोग ईमान लाये तुम भी ईमान लाओ, तो कहते हैं कि क्या मर्खों के समान हम भी विश्वास कर लैं। सावधान! वही मूर्ख हैं, परन्तु वह जानते नहीं।
14. तथा जब वह ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये, और जब अकेले में अपने शैतानों (प्रमुखों) के साथ होते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं। हम तो मात्र परिहास कर रहे हैं।

1 यह दशा उन मुनाफिकों की है जो अपने स्वार्थ के लिये मुसलमान हो गये, परन्तु दिल से इन्कार करते रहे।

الْآخِرَةِ وَمَا هُنَّ بِهُؤْمَنٍ ۝

يُغَيِّرُونَ اللَّهَ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَمَا يَغِيَّرُونَ
إِلَّا أَنفُسُهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝

فِي قُلُوبِهِمْ مَرْضٌ لَّا زَادَهُمُ اللَّهُ مَرْضًا وَلَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ إِنَّمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ۝

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ
قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ۝

الْآتَاهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَكِنْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَمْنُوا كَمَا أَمَنَ النَّاسُ قَالُوا
أَتُؤْمِنُ كَمَا أَمَنَ السُّفَهَاءُ إِنَّ الْآتَاهُمْ هُمْ
السُّفَهَاءُ وَلَكِنْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

وَإِذَا قَوَى الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا
خَلَوْا إِلَى شَيْطَانِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ
إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِئُونَ ۝

15. اَلْجَنَاحُ عَنْ سِيرِهِ حَتَّىٰ يَرَاهُ وَيَمْنَدُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ
وَعَمَّهُمْ ⑥
- اُولَئِكَ الَّذِينَ اشْرَكُوا اللَّهَ بِالْهُدَىٰ فَهَا يَرْجِعُونَ
تَجَارِتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ⑦
- مَثُلُهُمْ كَمَثُلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا فَلَمَّا أَضَاءَتْ
مَا حَوَلَهُ دَهَبَ اللَّهُ بِرُّهِيمٍ وَتَرَكَهُمْ فِي
ظُلْمٍ بِمَا لَمْ يَصْرُفُونَ ⑧
- صُنُونُكُمْ عَنِّي فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ⑨
- أَوْ كَصَيْبٍ مِّنَ الشَّهَادَةِ فَيُؤْلِمُهُمْ وَرَدْعَةً بَرْقٍ
يَجْعَلُونَ أَصَابِعَهُمْ فِي أَذْانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ
حَدَارَ الْمَوْتِ وَاللهُ خَيْطٌ بِالْكُفَّارِ ⑩
- يَكَادُ الْبَرْقُ يُخْكِفُ أَبْصَارَهُمْ كَمَّا أَضَاءَ لَهُمْ
مَّشْوَافِيهِ وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ
لَذَهَبَ بِسَعْيِهِمْ وَأَبْصَارُهُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑪
1. यह दशा उन की है जो सदेह तथा दुविधा में पड़े रह गये। कुछ सत्य को उन्होंने स्वीकार भी किया, फिर भी अविश्वास के अंधेरों ही में रह गये।
2. यह दूसरी उपमा भी दूसरे प्रकार के मुनाफिकों की दशा की है।

यदि अल्लाह चाहे तो उन के कानों को बहरा, और उन की आँखों को अंधा कर दे। निश्चय अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

21. हे लोगो! केवल अपने उस पालनहार की इबादत (वंदना) करो, जिस ने तुम्हें तथा तुम से पहले वाले लोगों को पैदा किया, इसी में तुम्हारा बचाव^[1] है।
22. जिस ने धरती को तुम्हारे लिये बिछौना तथा गगन को छत बनाया। और आकाश से जल बरसाया, फिर उस से तुम्हारे लिये प्रत्येक प्रकार के खाद्य पदार्थ उपजाये, अतः जानते हुये^[2] भी उस के साझी न बनाओ।
23. और यदि तुम्हें उस में कुछ सदेह हो जो (अथवा कुर्झान) हम ने अपने भक्त पर उतारा है, तो उस के समान कोई सूरह ले आओ। और अपने समर्थकों की भी, जो अल्लाह के सिवा हों, बुलालो, यदि तुम सच्चे^[3] हो।
24. और यदि यह न कर सको, तथा कर भी नहीं सकोगे, तो उस अग्नि

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُوكُلُّنِي خَلَقْتُمْ
وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَسْتَفِدُونَ ﴿٦﴾

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالْجَمَارَ سَاءَ وَأَنْزَلَ
مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الشَّرْتَ بِرُزْقًا
كُلُّهُ فَلَا يَجْعَلُوا إِلَيْهِ أَنْدَادًا وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٧﴾

وَلَمْ يُنْثِمُ فِي رَبِّيْبٍ مَّا نَرَى لَعَلَّ عَبْدِنَا فَانْتَوْا
بِسُورَةٍ مِّنْ مِثْلِهِ وَادْعُوا شَهِيدًا كُلُّ مَنْ
دُوْنَ الْأَرْضِ كُنْتُمْ صَدِيقِينَ ﴿٨﴾

فَإِنْ لَمْ يَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَإِنَّقُوْا لِلَّئَارَ الْأَيْمَنِ

1 अर्थात् संसार में कुकर्मा तथा परलोक की यातना से।

2 अर्थात् जब यह जानते हो कि तुम्हारा उत्पत्तिकार तथा पालनहार अल्लाह के सिवा कोई नहीं, तो वंदना भी उसी एक की करो, जो उत्पत्तिकार तथा पूरे विश्व का व्यवस्थापक है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि नबी के सत्य होने का प्रमाण आप पर उतारा गया कुर्झान है। यह उन की अपनी बनाई बात नहीं है। कुर्झान ने ऐसी चुनौती अन्य आयतों में भी दी है। (देखिये: सूरह कस्स, आयत: 49, इस्रा, आयत: 88, हूद आयत: 13, और यूनुस, आयत: 38)

(नरक) से बचो, जिस का इंधन मानव तथा पत्थर होंगे।

25. हे नबी! उन लोगों को शुभ सूचना दो, जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये कि उन के लिये ऐसे स्वर्ग हैं, जिन में नहरें बह रही होंगी। जब उन का कोई भी फल उन्हें दिया जायेगा तो कहेंगे: यह तो वही है जो इस से पहले हमें दिया गया। और उन्हें समरूप फल दिये जायेंगे। तथा उन के लिये उन में निर्मल पत्नियाँ होंगी, और वह उन में सदावासी होंगे।
26. अल्लाह,^[1] मच्छर अथवा उस से तुच्छ चीज से उपमा देने से नहीं लज्जाता। जो ईमान लाये वह जानते हैं कि यह उन के पालनहार की ओर से उचित है। और जो काफिर (विश्वासहीन) हो गये वह कहते हैं कि अल्लाह ने इस से उपमा दे कर क्या निश्चय किया है? अल्लाह इस से बहुतों को गुमराह (कुपथ) करता है, और बहुतों को मार्गदर्शन देता है। तथा जो अवैज्ञाकारी हैं, उन्हीं को कुपथ करता है।
27. जो अल्लाह से पक्का वचन करने के बाद उसे भंग कर देते हैं, तथा जिसे अल्लाह ने जोड़ने का आदेश दिया, उसे तोड़ते हैं, और धरती में उपद्रव करते हैं, यही लोग क्षति में पड़ेंगे।

¹ जब अल्लाह ने मुनाफिकों की दो उपमा दी, तो उन्होंने कहा कि अल्लाह ऐसी तुच्छ उपमा कैसे दे सकता है! इसी पर यह आयत उतरी। (दखिये: तफ्सीर इब्ने कसीर)

وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْجِجَارُ هُنَّ أَعْدَاتُ لِلْكُفَّارِينَ ﴿٢﴾

وَبَتَرَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلُوُ الظَّلِيمُونَ أَنَّ لَهُمْ جَنَاحٌ
يَجْوِي مِنْ تَعْيَاهَا الْأَنْهَارُ كُلُّمَا رُزِقُوهُمْ مِنْ شَرَقٍ
رِزْقًا فَالْأَوَاهُدُ الَّذِينَ رُزِقُوكُمْ مِنْ قَبْلٍ وَأَنْوَابٍ
مُسْكَانُهُمْ وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا
خَلِدُونَ ﴿٣﴾

إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَعْنِي أَنْ يَضْرِبَ مَثَلًا مَا بَعْدَهُ فَمَا
نُوَفَّهَا فَإِنَّمَا الَّذِينَ آمَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْعَنْ مِنْ
رَبِّهِمْ وَإِنَّمَا الَّذِينَ كَفَرُوا وَأَنْيَقُولُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ
بِهِمْ إِمَامًا مُثَلَّمًا يُضْلِلُ بِهِ كَثِيرًا وَيَهْدِي بِهِ كَثِيرًا
وَمَا يُفْلِلُ بِهِ إِلَّا الْفَسِيقُينَ ﴿٤﴾

الَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِسْأَلَةٍ
وَيَقْطَعُونَ مَا أَمْرَاهُ بِهِ أَنْ يُؤْصَلَ
وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولَئِكَ هُمُ الْخَسِرُونَ ﴿٥﴾

28. तूम अल्लाह का इन्कार कैसे करते हो? जब कि पहले तुम निर्जीव थे, फिर उस ने तुम को जीवन दिया, फिर तुम को मौत देगा, फिर तुम्हें (परलोक में) जीवन प्रदान करेगा, फिर तुम उसी की ओर लौटाये^[1] जाओगे?
29. वही है, जिस ने धरती में जो भी है, सब को तुम्हारे लिये उत्पन्न किया। फिर आकाश की ओर आकृष्ट हुआ, तो बराबर सात आकाश बना दिये। और वह प्रत्येक चीज़ का जानकार है।
30. और (हे नबी! याद करो) जब आपके पालनहार ने फरिश्तों से कहा कि मैं धरती में एक ख़लीफ़ा^[2] बनाने जा रहा हूँ। वह बोले: क्या तू उस में उसे बनायेगा जो उस में उपद्रव करेगा, तथा रक्त बहायेगा? जब कि हम तेरी प्रशंसा के साथ तेरे गुण और पवित्रता का गान करते हैं। (अल्लाह) ने कहा: जो मैं जानता हूँ, वह तुम नहीं जानते।
31. और उस ने आदम^[3] को सभी नाम सिखा दिये, फिर उन को फरिश्तों के समक्ष प्रस्तुत किया, और कहा: मुझे इन के नाम बताओ, यदि तुम सच्चे हो!
32. सब ने कहा: तू पवित्र है। हम तो उतना ही जानते हैं, जितना तू ने हमें

كَيْفَ تَكْفِرُونَ بِاللَّهِ وَكُنْتُمْ أَمْوَالًا
فَأَخْيَالُكُمْ ثُغَرٌ يُبَيِّنُكُمْ ثُغَرٌ
إِلَيْهِ شُرْجَعُونَ ⑥

هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَبِيعًا لَكُمْ
أَسْوَى إِلَى السَّمَاءِ قَسَّمْتُهُنَّ سَبْعَ سَهْوَاتٍ وَهُوَ
يَعْلَمُ شَيْئًا عَلِيمٌ ⑦

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ
خَلِيفَةً قَالَتْ أَنَا أَعْنَلُ فِيهَا مَنْ يَقْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ
الدِّمَاءَ وَنَحْنُ نُسَيْرُ بِهِ حِمْدَكَ وَقَدْنِسُ لَكَ قَالَ
إِنِّي أَعْلَمُ بِالْأَعْلَمُونَ ⑧

وَعَلَمَ ادْمَرَ الْأَسْنَاءَ كُلُّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلِكَةِ
فَقَالَ أَنِّي سُورِيٌّ بِاسْنَاءِ هُولَاهُ انْ لَكُنْ ضَرِيقُنِ ⑨

قَالُوا سُبْحَنَكَ لَا عِلْمَ لَنَا إِلَّا مَا عَلِمْتَنَا إِنَّكَ أَنْتَ

1 अर्थात् परलोक में अपने कर्मों का फल भोगने के लिये।

2 ख़लीफ़ा का अर्थ है: स्थानापन्न, अर्थात् ऐसा जीव जिस का वंश हो, और एक दूसरे का स्थान ग्रहण करे। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

3 आदम प्रथम मनु का नाम।

सिखाया है। वास्तव में तू अति ज्ञानी
तत्वज्ञ^[1] है।

الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ

33. (अल्लाह ने) कहा: हे आदम! इन्हें इन के नाम बताओ। और आदम ने जब उन के नाम बता दिये तो (अल्लाह ने) कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि मैं आकाशों तथा धरती की क्षिप्त बातों को जानता हूँ, तथा तुम जो बोलते और मन में रखते हो, सब जानता हूँ?

34. और जब हम ने फरिश्तों से कहा: आदम को सज्दा करो तो इब्लीस के सिवा सब ने सज्दा किया, उस ने इन्कार तथा अभिमान किया, और काफिरों में से हो गया।

35. और हम ने कहा: हे आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो, तथा इस में से जिस स्थान से चाहो मनमानी खाओ, और इस वृक्ष के समीप न जाना, अन्यथा अत्याचारियों में से हो जाओगो।

36. तो शैतान ने दोनों को उस से भटका दिया, और जिस (सुख) में थे उस से उन को निकाल दिया, और हम ने कहा: तुम सब उस से उतरो, तुम एक दूसरे के शत्रु हो, और तुम्हारे लिये धरती में रहना, तथा एक निश्चित अवधि^[2] तक उपभोग्य है।

قَالَ يَا آدَمُ إِنَّنِي هُمْ بِإِنْسَانَيْمْ فَلَمَّا آتَيْتَهُمْ
إِنْسَانَيْمْ قَالَ أَلَّا أَفْلِنْ لَكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ عَيْبَ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تَبَدُّلُونَ وَمَا لَنْتُمْ تَكْتُمُونَ

وَذُقْنَا لِلْمُكَبِّكَةِ اسْجُدْ وَالْأَدَمَ فَسَجَدَ وَالْأَ
رَبِّلِيْسَ أَبِي وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكُفَّارِينَ

وَقُلْنَا يَا آدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا
مِنْهَا رَغْدًا أَحَبُّ شَتَّى مَا وَلَقَرْبًا هَذِهِ الشَّجَرَةُ
مَتَّكُلُونَ مِنَ الظَّلَمِيْنَ

فَأَرْتَهُمَا الشَّيْطَانُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِنْهَا كِبِيرًا
فِيهَا وَقُلْنَا أَهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدَوْ
وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقْرَرٌ مُّتَنَاعِرٌ إِلَى جِنْ

1 तत्वज्ञः अर्थात् जो भेद तथा रहस्य को जानता हो।

2 अर्थात् अपनी निश्चित आयु तक सांसारिक जीवन के संसाधन से लाभान्तित होना है।

37. फिर आदम ने अपने पालनहार से कुछ शब्द सीखे, तो उस ने उसे क्षमा कर दिया, वह बड़ा क्षमी दयावान^[1] है।

38. हम ने कहा: इस से सब उतरो, फिर यदि तुम्हारे पास मेरा मार्गदर्शन आये तो जो मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण करेंगे, उन के लिये कोई डर नहीं होगा, और न वह उदासीन होंगे।

39. तथा जो अस्वीकार करेंगे, और हमारी आयतों को मिथ्या कहेंगे तो वही नारकी हैं, और वही उस में सदावासी होंगे।

40. हे बनी इस्राईल^[2]! मेरे उस पुरस्कार को याद करो, जो मैं ने तुम पर किया, तथा मुझ से किया गया वचन पूरा करो, मैं तुम को अपना दिया वचन पूरा करूँगा, तथा मुझी से डरो^[3]।

1 آयत का भावार्थ यह है कि: आदम ने कुछ शब्द सीखे और उन के द्वारा क्षमा याचना की, तो अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया। आदम के उन शब्दों की व्याख्या भाष्यकारों ने इन शब्दों से की है: "आदम तथा हव्वा दोनों ने कहा: हे हमारे पालनहार! हम ने अपने प्राणों पर अत्याचार कर लिया, और यदि तू ने हमें क्षमा, और हम पर दया नहीं की तो हम क्षतिग्रस्तों में हो जायेंगे।" (सूरह आराफ़, आयत 23)

2 इस्राईल आदरणीय इब्राहीम अलैहिमस्सलाम के पौत्र याकूब अलैहिस्सलाम की उपाधि है। इस लिये उन की सन्तान को बनी इस्राईल कहा गया है। यहाँ उन्हें यह प्रेरणा दी जा रही है कि: कुर्�आन तथा अन्तिम नबी को मान लें जिस का वचन उन की पुस्तक "तौरात" में लिया गया है। यहाँ यह ज्ञातव्य है कि: इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दो पुत्रों इस्राईल तथा इस्हाक़ हैं। इस्हाक़ की सन्तान से बहुत से नबी आये, परन्तु इस्राईल अलैहिस्सलाम के गोत्र से केवल अन्तिम नबी मुहम्मद सल्ललाहु अलैहि व सल्लम आये।

3 अर्थात् वचन भंग करने से।

تَلَقَّى ادْمُونْ رَبِّهِ كَلِمَاتِ فَقَاتَ عَلَيْهِ إِنَّهُ هُوَ
الْتَّوَابُ التَّوَجِيْمُ^①

قُلْنَا أَهْبِطُوا مِنْهَا حِسَابًا فَإِنَّا يَأْتِيْكُمْ مَعَ مُّهَمَّ
فَمَنْ تَبِعَ مُهَمَّهُ دَائِيَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزُنُونَ^②

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَئِكَ أَصْحَبُ
النَّارِ هُمْ فِيهَا خَلِدُونَ

يَعْلَمُ إِنَّ رَاهِيلَ أَذْلُوكَ وَأَعْمَقَ الرَّقَبَ أَنْعَمَ
عَلَيْكُمْ وَأَوْفُوا بِعَهْدِكُمْ وَإِذَا قَ
فَارَهُبُونَ^③

41. तथा उस (कुर्झान) पर ईमान लाओ जो मैं ने उतारा है, वह उस का प्रमाणकारी है, जो तुम्हारे पास^[1] है, और तुम सब से पहले इस के निवर्ती न बन जाओ, तथा मेरी आयतों को तनिक मूल्य पर न बेचो, और केवल मुझी से डरो।
42. तथा सत्य को असत्य में न मिलाओ, और न सत्य को जानत हुये छुपाओ।^[2]
43. तथा नमाज़ की स्थापना करो, और ज़कात दो तथा झुकने वालों के साथ झुको (रुकू करो)।
44. क्या तुम, लोगों को सदाचार का आदेश देते हो, और अपने आप को भूल जाते हो, जब कि: तुम पुस्तक (तौरात) का अध्ययन करते हो, क्या तुम समझ नहीं रखते?^[3]
45. तथा धैर्य और नमाज़ का सहारा लो, निश्चय नमाज़ भारी है, परन्तु विनीतों पर (भारी नहीं)^[4]

وَالْمُؤْمِنُّا بِمَا أَنزَلْتُ مُصَدِّقًا لِمَا أَعْلَمُ وَلَا يَنْهُونَ
أَوْلَى كَافِرِيهِ وَلَا شَرِيكًا لِّيَقِنًا
وَإِنَّمَا يَقْنُونَ^①

وَلَا تَلِمُسُوا أَعْنَى بِلِبَاطِلٍ وَكُلُّهُمُ الْحَقُّ وَأَنَّمُّ
عَلَمُونَ^②

وَأَقِمُوا الصَّلَاةَ وَأُولُو الْأَرْدَةَ وَأَكِفِّمُوا عَمَّا لَا يَعْلَمُونَ^③

أَكْمَلُونَ النَّاسَ بِالْبَرِّ وَتَذَكَّرُونَ الْفَسَكُ
وَأَنَّهُمْ تَشْلُونَ الْكِتَابَ أَفَلَا تَعْقِلُونَ^④

وَاسْتَعِنُوا بِالصَّبَرِ وَالصَّلَاةِ وَإِنَّهَا لِكِبِيرَةٍ إِلَّا عَلَى
الْخَيْرِ^⑤

1 अर्थात् धर्मपुस्तक तौरात।

2 अर्थात्: अन्तिम नवी के गुणों को, जो तुम्हारी पुस्तकों में वर्णित किये गये हैं।

3 नवी सल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक हदीस (कथन) में इस का दुष्परिणाम यह बताया गया है कि: प्रलय के दिन एक व्यक्ति को लाया जायेगा, और नरक में फेंक दिया जायेगा। उस की अंतिम निकल जायेंगी, और वह उन को लेकर नरक में ऐसे फिरेगा जैसे गधा चक्की के साथ फिरता है। तो नारकी उस के पास जायेंगे तथा कहेंगे कि: तुम पर यह क्या आपदा आ पड़ी है? तूम तो हमें सदाचार का आदेश देते, तथा दुराचार से रोकते थे। वह कहेगा कि मैं तुम्हें सदाचार का आदेश देता था, परन्तु स्वयं नहीं करता था। तथा दुराचार से रोकता था और स्वयं नहीं रुकता था। (सहीह बुखारी, हदीस नं: 3267)

4 भावार्थ यह है कि धैर्य तथा नमाज़ से अल्लाह की आज्ञा के अनुपालन तथा

46. जो समझते हैं कि: उन्हें अपने पालनहार से मिलना है, और उन्हें फिर उसी की ओर (अपने कर्मों का फल भोगने के लिये) जाना है।

47. हे बनी इसराईल! मेरे उस पुरस्कार को याद करो, जो मैं ने तुम पर किया, और यह कि: तुम्हें संसार वासियों पर प्रधानता दी थी।

48. तथा उस दिन से डरो, जिस दिन कोई किसी के कुछ काम नहीं आयेगा, और न उस की कोई अनुशंसा (सिफारिश) मानी जायेगी, और न उस से कोई अर्थदण्ड लिया जायेगा, और न उन्हें कोई सहायता मिल सकेगी।

49. तथा (वह समय याद करो) जब हमने तुम्हें फिर औनियों^[1] से मुक्ति दिलाई। वह तुम्हें कड़ी यातना दे रहे थे: वह तुम्हारे पुत्रों को बध कर रहे थे, तथा तुम्हारी नारियों को जीवित रहने देते थे, इस में तुम्हारे पालनहार की ओर से कड़ी परीक्षा थी।

50. तथा (याद करो) जब हम ने तुम्हारे लिये सागर को फाड़ दिया, फिर तुम्हें बचा लिया, और तुम्हारे देखते देखते फिर औनियों को छुबो दिया।

51. तथा (याद करो) जब हम न मूसा को (तौरात प्रदान करने के लिये) चालीस

सदाचार की भावना उत्पन्न होती है।

1 फिर औन मिस्र के शासकों की उपाधि होती थी।

الَّذِينَ يُظْهِنُونَ أَنَّهُمْ مُلْقُوَاتِهِمْ وَأَنَّهُمْ أَنْتُمْ
رَجُуُونَ ⑥

يَلَّا إِنَّ رَبَّهُمْ يُؤْمِنُ بِذِكْرِهِ وَإِنَّمَا يَعْمَلُ
عَلَيْهِمْ وَآئِيَ فَضْلَتُمْ عَلَى الظَّمِينِ ⑦

وَأَنْقُوا يَوْمًا لَا يَجِدُونِي نَفْسٌ عَنْ تَقْسِيسِ شَيْءٍ
وَلَا يُغَيِّبُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ
وَلَا هُمْ يُحْصِرُونَ ⑧

وَإِذْ جَعَلْنَاكُمْ مِنْ إِلَى فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ
سُوءَ الْعَذَابِ يُدَنِّيُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْجِيُونَ
نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ مِنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ⑨

وَإِذْ قَرَأْنَا بِكُوَّالْبَحْرَ قَبْجِيلَكُمْ وَأَخْرَقْنَا إِلَى
فِرْعَوْنَ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ⑩

وَإِذْ وَعَدْنَا مُوسَى أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ثُمَّ أَنْجَدْنَاهُ

रात्री का वचन दिया, फिर उन के पीछे तुम ने बछड़े को (पूज्य) बना लिया, और तुम अत्याचारी थे।

52. फिर हम ने इस के पश्चात् तुम्हें क्षमा कर दिया, ताकि तुम कृतज्ञ बनो।
53. तथा (याद करो) जब हम ने मूसा को पस्तक (तौरात) तथा फुर्कान^[1] प्रदान किया, ताकि तुम सीधी डगर पा सको।
54. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा: तुम ने बछड़े को पूज्य बना कर अपने ऊपर अत्याचार किया है, अतः तुम अपने उत्पत्तिकार के आगे क्षमा याचना करो, वह यह कि आपस में एक दूसरे^[2] को बध करो, इसी में तुम्हारे उत्पत्तिकार के समीप तुम्हारी भलाई है, फिर उस ने तुम्हारी तौबा स्वीकार कर ली, वास्तव में वह बड़ा क्षमाशील, दयावान् है।
55. तथा (याद करो) जब तुम न मूसा से कहा: हम तुम्हारा विद्वास नहीं करेंगे, जब तक हम अल्लाह को आँखों से देख नहीं लेंगे, फिर तुम्हारे देखते देखते तुम्हें कड़क ने धर लिया (जिस से सब निर्जीव होकर गिर गये)।
56. फिर (निर्जीव होने के पश्चात्) हम ने

الْعَجْلَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ طَلَمُونَ^[3]

لَمْ عَفَّنَا عَنْكُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ لَعْلَكُمْ تَذَكَّرُونَ^[4]

وَإِذَا أَتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَالْقُرْآنَ لَعْلَكُمْ تَهَمَّدُونَ^[5]

وَلَذِكْلَانْ مُوسَى لِقَوْبَاهُ يَقُولُ رَبِّكُمْ ظَلَمْنَاهُمْ
أَنْسَكْلَهُ بِإِتْخَادِكُلْمُ العَجْلَ فَتَوْبُوا إِلَى
بَارِيَكُمْ فَاقْتُلُوا أَنْسَكْلَهُ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ
عِثْدَ بَارِيَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ إِنَّهُ مُنْ
الْتَّوَابُ الرَّحِيمُ^[6]

وَإِذْ قُلْنَاهُ مُوسَى لَئِنْ تُؤْمِنَ لَكَ حَتَّى تَرَى اللَّهَ
جَهَنَّمَ فَأَخَذَنَاهُ الصَّعِيقَةَ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ^[7]

لَمْ بَعْلَمْنَا مِنْ بَعْدِ مُوْلَكَمْ لَعْلَكُمْ تَشَكُّرُونَ^[8]

1 फुर्कान का अर्थ: विवेककारी है, अर्थात् जिस के द्वारा सत्योसत्य में अन्तर और विवेक किया जाये।

2 अर्थात् जिस ने बछड़े की पूजा की है, उसे, जो निर्दोष हो वह हत करो। यही दोषी के लिये क्षमा है। (इब्ने कसीर)

तुम्हें जीवित कर दिया, ताकि तुम हमारा उपकार मानो।

57. और हम ने तुम पर बादलों की छाँव^[1] की, तथा तुम पर "मब्ब"^[2] और "सलवा" उतारा, तो उन स्वच्छ चीजों में से जो हम ने तुम को प्रदान की हैं खाओ। और उन्होंने हम पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर ही अत्याचार कर रहे थे।

58. और (याद करो) जब हम ने कहा कि इस बस्ती^[3] में प्रवेश करो, फिर उस में से जहाँ से चाहो मनमानी खाओ। और उस के द्वार में सज्दा करते (सिर झुकाये) हुये प्रवेश करो, और क्षमा-क्षमा कहते जाओ, हम तुम्हारे पापों को क्षमा कर देंगे, तथा सुकर्मियों को अधिक प्रदान करेंगे।

59. फिर इन अत्याचारियों ने जो बात उन से कही गई थी, उसे दूसरी बात से बदल दिया। तो हम ने इन अत्याचारियों पर आकाश से उन की अवैज्ञा के कारण प्रकोप उतार दिया।

60. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति के लिये जल की प्रार्थना की तो

وَظَلَّلَنَا عَذَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ
الْمَنَّ وَالشَّلُوْيٌ كُلُّوْمَنْ طَهِيْبٌ مَارَّقَنْكُلُّوْ
وَمَا ظَلَّمُونَا وَلَا كُنْ كَانُوا أَنْفَسَهُمْ
يَظْلِمُونَ ④

وَإِذْ قُلْنَا الدُّخْلُوا هَذِهِ الْقَرَيْةُ فَكُلُّوْمَنْهَا حَيْثُ
شِنْتُمْ رَغْدًا وَأَدْخُلُوا الْبَابَ سُجَدًا وَقُولُوا
حَطَّهُ لَعْقَرْنَا كُمْ خَطِيلَكُمْ وَسَرِيدُ
الْمُخْرِجِينَ ⑤

فَبَدَلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قُولًا غَيْرَ الَّذِي قُبِلَ لَهُمْ
فَأَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا رِجْزًا مِنَ الشَّهَادَةِ
بِمَا كَانُوا يَسْفَعُونَ ⑥

وَإِذَا سَتَّقَ مُوسَى لِقَوْيِهِ فَقَلَّنَا أَضْرِبُ بِعَصَادَكَ

1 अधिकांश भाष्यकारों ने इसे "तीह" के क्षेत्र से संबंधित माना है। (देखिये: तफ्सीरे कुर्तुबी)

2 भाष्यकारों ने लिखा है कि: "मब्ब" एक प्रकार का अति मीठा स्वादिष्ट गोंद था, जो ओस के समान रात्रि के समय आकाश से गिरता था। तथा "सलवा" एक प्रकार के पक्षी थे जो संध्या के समय सेना के पास हज़ारों की संख्या में एकत्र हो जाते, जिन्हें बनी इस्राईल पकड़ कर खाते थे।

3 साधारण भाष्यकारों ने इस बस्ती को "बैतुल मुक़द्दस" माना है।

हम ने कहा: अपनी लाठी को पत्थर पर मारो। तो उस से बारह^[1] सोते फूट पड़े। और प्रत्येक परिवार ने अपने पीने के स्थान को पहचान लिया। अल्लाह का दिया खाओ और पीओ, और धरती में उपद्रव करते न फिरो।

61. तथा (याद करो) जब तुम ने कहा: हे मूसा! हम एक प्रकार का खाना सहन नहीं करेंगे, तुम अपने पालनहार से प्रार्थना करो कि हमारे लिये धरती की उपज, साग, ककड़ी, लहसुन, प्याज, दाल आदि निकाले, (मूसा ने) कहा: क्या तुम उत्तम के बदले तुच्छ माँगते हो? तो किसी नगर में उत्तर पड़ो, जो तुम ने माँगा है वहाँ वह मिलेगा। और उन पर अपमान तथा दरिद्रता थोप दी गई, और वह अल्लाह के प्रकोप के साथ फिरो। यह इस लिये कि वह अल्लाह की आयतों के साथ कुफ्र कर रहे थे, और नबियों की अकारण हत्या कर रहे थे, यह इस लिये कि उन्होंने अवैज्ञानीकी, तथा (धर्म की) सीमा का उल्लंघन किया।

62. वस्तुतः जो ईमान लाये, तथा जो यहूदी हुये, और नसारा (ईसाई) तथा साबी, जो भी अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान लायेगा, और सत्कर्म करेगा, उन का प्रतिफल उन के पालनहार के पास है। और उन्हें

الْحَجَرَ قَاتَنَجَرَتْ مِنْهُ أَثْنَا عَشْرَةَ عَيْنًا مَقْدُعَةً
كُلُّ أَنَّا يُسْمِرَ بِهِمْ كُلُّوَا وَأَشْرِيُّوا مِنْ رِزْقِ اللَّهِ
وَلَا تَعْتَوْفَى الْأَرْضُ مُفْسِدِينَ ⑩

وَإِذْ قُلْنَخْ يَمُوسِي لَنْ تَصِيرَ عَلَى طَعَامِ وَاحِدٍ
فَادْعُ لَكَارَبَكْ يُغْرِجَ لَنَامَّا تَنْقِيْتُ الْأَرْضِ مِنْ
بَعْلَهَا وَقِنَّا بَهَا وَفُونَمَهَا وَعَدَسَهَا وَبَصَلَهَا
قَالَ أَسْتَبِدْ لَوْنَ الَّذِي هُوَ أَدْنَى بِالَّذِي هُوَ
خَيْرٌ إِهْبِطُوا مَصْرَاقَ اِنْ لَكْمَاسَالْتُمْ
وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الدِّلَاهُ وَالْمُسْكَنَهُ وَبَاءَوْ بِعَصَبَ
مِنَ اللَّهِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ
بِآيَتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ الْمُتَّبِّنَ بِعَيْرِ الْحَقِّ
ذَلِكَ بِمَا عَصَمُوا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالظَّاهِرِيَّ
وَالظَّاهِرِيَّ مِنْ (مَنْ يَأْتِهِ اللَّهُ وَالْيَوْمُ الْأَخِرُ وَعَيْلَ
صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرٌ هُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا حَوْنَ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَعْزِزُونَ ۝

1 इसराईली वंश के बारह कबीले थे। अल्लाह ने प्रत्येक कबीले के लिये अलग-अलग सोते निकाल दिये ताकि उन के बीच पानी के लिये झगड़ा न हो। (देखिये: तफ्सीरे कुर्तुबी)।

कोई डर नहीं होगा, और न ही वे
उदासीन होंगे।^[1]

63. और (याद करो) जब हम ने तूर (पर्वत) को तुम्हारे ऊपर करके तुम से बचन लिया, कि जो हम ने तुम को दिया है, उसे दृढ़ता से पकड़ लो, और उस में (जो आदेश-निर्देश हैं) उन्हें याद रखो, ताकि तुम (यातना से) बच सको।
64. फिर उस के बाद तुम मुकर गये, तो यदि तुम पर अल्लाह की अनुग्रह और दया न होती, तो तुम क्षतिग्रस्तों में हो जाते।
65. और तुम उन्हें जानते ही हो जिन्होंने शनिवार के बारे में (धर्म की) सीमा का उल्लंघन किया, तो हम ने कहा कि तुम तिरिस्कृत बंदर^[2] हो जाओ।
66. फिर हम ने उसे, उस समय के तथा बाद के लोगों के लिये चेतावनी, और (अल्लाह से) डरने वालों के लिये शिक्षा बना दिया।
67. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा: अल्लाह तुम्हें एक गाय

وَإِذَا أَخَذْنَا مِنْكُمْ مَا نَشَاءُ فَوَقَعْنَا فِي الظُّرُورِ بِخُدُودٍ
مَا أَتَيْنَاهُمْ يَفْتَأِرُونَ وَإِذْكُرُوا مَا فِي الْعُلُوكِ
تَسْأَلُونَ

نَفْرَتْ لَوْلَيْهِمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ
عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الظَّالِمِينَ

وَلَقَدْ عِلِّمْنَا الَّذِينَ اهْتَدَى وَأَمْلَأْنَا فِي التَّبْغِ
نَفْلَنَا اللَّهُمْ لَوْلَا فِرَدَأْلَهُ خَلِيلِنَّ

فَجَعَلْنَاهَا نَحْنُ الْمَابِينَ يَدِيهَا وَمَا خَلَفَهَا
وَمَوْعِظَةُ الْمُسَقَّينَ

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ

1 इस आयत में यहूदियों के इस ध्रम का खण्डन किया गया है कि मुकित केवल उन्हीं के गिरोह के लिये है। आयत का भावार्थ यह है कि इन सभी धर्मों के अनुयायी अपने समय में सत्य आस्था तथा सत्कर्म के कारण मुकित के योग्य थे परन्तु अब नवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन के पश्चात् आप पर ईमान लाना तथा आप की शिक्षाओं को मानना मुकित के लिये अनिवार्य है।

2 यहूदियों के लिये यह नियम है कि वे शनिवार का आदर करें। और इस दिन कोई संसारिक कार्य न करें, तथा उपासना करें। परन्तु उन्होंने इस का उल्लंघन किया और उन पर यह प्रकोप आया।

बध करने का आदेश देता है। उन्होंने कहा: क्या तुम हम से उपहास कर रहे हो? (मूसा ने) कहा: मैं अल्लाह की शरण माँगता हूँ कि मूर्खों में हो जाऊँ।

68. वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिये निवेदन करो कि हमें बता दे कि वह गाय कैसी हो? (मूसा ने) कहा: वह (अर्थात्: अल्लाह) कहता है कि वह न बूढ़ी हो, और न बछिया हो, इस के बीच आयु की हो। अतः जो आदेश तुम्हें दिया जा रहा है उसे पूरा करो।

69. वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिये निवेदन करो कि हमें उस का रंग बता दे। (मूसा ने) कहा: वह कहता है कि पीले गहरे रंग की गाय हो। जो देखने वालों को प्रसन्न कर दे।

70. वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिये निवेदन करो कि हमें बताये कि वह किस प्रकार की हो? वास्तव में हम गाय के बारे में दुविधा में पड़ गये हैं। और यदि अल्लाह ने चाहा तो हम (उस गाय का) पता लगा लेंगे।

71. मूसा बोले: वह कहता है कि वह ऐसी गाय हो जो सेवा कार्य न करती हो, न खेत (भूमि) जोतती हो, और न खेत सीचती हो, वह स्वस्थ हो, और उस में कोई धब्बा न हो। वह बोले: अब तुम ने उचित बात बताई है। फिर उन्होंने उसे बध कर दिया। जब कि वह समीप थे कि इस काम को न करें।

تَذَكَّرْ بِعَوَابِقَرَةٍ مَّا لَوْ أَتَتْ خَدْنَاهُ فَزُولَ دَقَالَ
أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنَّ الْكُوْنَ مِنَ الْجَهِيلِينَ ④

قَالُوا دُعْنَا لَنَارِبَكَ يَبْيَسْنَ لَنَامَاهِيْنَ قَالَ إِنَّهُ
يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا فَارِضٌ وَلَا يَكُونُ عَوَانٌ
بَيْسِنَ ذَلِكَ فَاعْلُمُوا مَا تُوْمِرُونَ ④

قَالُوا دُعْنَا لَنَارِبَكَ يَبْيَسْنَ لَنَامَاهِيْنَ لَنَكُونُهَا قَالَ
إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَاءُ قَاقِعَهُ لَوْنَهَا
تَسْرُّ اللَّظِيرِيْنَ ④

قَالُوا دُعْنَا لَنَارِبَكَ يَبْيَسْنَ لَنَامَاهِيْنَ إِنَّ الْبَقَرَ
تَشَبَّهَ عَلَيْنَا وَلَا كُلُّ شَاءَ لَهُ لَمْهُدُونَ ④

قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا ذُلُونٌ بُشِّرُ الْأَرْضَ
وَلَا شَقِّ الْحُرُثَ مُسْلِمَةٌ لَا شَيْئَةٌ فِيهَا قَالُوا إِنَّ
جَمْعَتَ بِالْحَقِّ فَذَبَحُوهَا سَمَا كَذُولًا يَفْعَلُونَ ④

72. और (याद करो) जब तुम ने एक व्यक्ति की हत्या कर दी, तथा एक दूसरे पर (दोष) थोपने लगे, और अल्लाह को उसे व्यक्त करना था जिसे तुम छुपा रहे थे।

73. अतः हम ने कहा कि उस (निहत व्यक्ति के शव) को उस (गाय) के किसी भाग से मारो^[1], इसी प्रकार अल्लाह मुर्दों को जीवित करेगा। और वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, ताकि तुम समझो।

74. फिर यह (निशानियाँ देखने) के बाद तुम्हारे दिल पत्थरों के समान या उन से भी अधिक कठोर हो गये। क्योंकि पत्थरों में कुछ ऐसे होते हैं, जिन से नहरें फृट पड़ती हैं। और कुछ फट जाते हैं और उन से पानी निकल आता है। और कुछ अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं। और अल्लाह तुम्हारे कर्तृतों से निश्चेत नहीं है।

75. क्या तुम आशा रखते हो कि (यहूदी) तुम्हारी बात मान लेंगे, जब कि उन में एक गिरोह ऐसा था जो अल्लाह की वाणी (तौरात) को सुनता था, और समझ जाने के बाद जान बूझ कर उस में परिवर्तन कर देता था?

وَإِذَا قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَإِذَا رَأَيْتُمْ فِيهَا مَا لَهُ مُحْرِجٌ فَلَا تُنْكِثُونَ

فَقُلْدَنَا أَضْرِبُوكُمْ بِعَيْنِهِ إِنَّا لِكَ يُنْهِي اللَّهُ الْمُؤْمِنُونَ
وَإِنَّكُمْ إِلَيْهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ

ثُمَّ قَسَّتْ قُلُوبُكُمْ مِنْ بَعْدِ ذِلْكَ فَهُنَّ كَالْجَاهَارَةِ أَوْ أَشَدُّ فَسُودًا وَإِنَّ مِنَ الْجَاهَارِ كَمَا
يَتَغَرَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَرُ وَإِنَّ مِنْهَا مَا يَسْقُطُ فِي
فِيَّغَرَّرُ مِنْهُ الْمَاءُ وَإِنَّ مِنْهَا مَا يَهْبِطُ مِنْ
خَشْيَةَ اللَّهِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ

أَفَنَظِمُّعُونَ أَنْ يُؤْمِنُوا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فِرْيقٌ
مِنْهُمْ يَسْعَوْنَ كَلَمَّا لَمْ يَكُنْ يُحِرِّرُ فُونَهُ مِنْ
بَعْدِ مَا عَقْلَوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ

1 भाष्यकारों ने लिखा है कि इस प्रकार निहत व्यक्ति जीवित हो गया। और उस ने अपने हत्यारे को बताया, और फिर मर गया। इस हत्या के कारण ही बनी इस्राईल को गाय की बलि देने का आदेश दिया गया था। अगर वह चाहते तो किसी भी गाय की बलि दे देते, परन्तु उन्होंने टाल मटोल से काम लिया, इस लिये अल्लाह ने उस गाय के विषय में कठोर आदेश दिया।

76. तथा जब वह ईमान वालों से मिलते हैं, तो कहते हैं कि हम भी ईमान^[1] लाये, और जब एकान्त में आपस में एक दूसरे से मिलते हैं, तो कहते हैं कि तुम उन्हें वह बातें क्यों बताते हो जो अल्लाह ने तुम पर खोली^[2] हैं? इस लिये कि प्रलय के दिन तुम्हारे पालनहार के पास इसे तुम्हारे विरुद्ध प्रमाण बनायें, क्या तुम समझते नहीं हो?

77. क्या वह नहीं जानते कि वह जो कुछ छुपाते तथा व्यक्त करते हैं, उस सब को अल्लाह जानता है?

78. तथा उन में कुछ अनपढ़ हैं, वह पुस्तक (तौरात) का ज्ञान नहीं रखते, परन्तु निराधार कामनायें करते, तथा केवल अनुमान लगाते हैं।

79. तो विनाश है उन के लिये^[3] जो अपने हाथों से पुस्तक लिखते हैं, फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है, ताकि उस के द्वारा तनिक मूल्य खरीदें। तो विनाश है उन के अपने हाथों के लेख के कारण! और विनाश है उन की कमाई के कारण!

80. तथा उन्हों ने कहा कि हमें नरक की अग्नि गिनती के कुछ दिनों के सिवा स्पर्श नहीं करेगी। (हे नबी!) उन से कहो कि क्या तुम ने अल्लाह से कोई वचन ले लिया है, कि अल्लाह अपना

وَإِذَا أَقْوَى الَّذِينَ أَمْسَاقُوا لَوْاً أَمْكَلَهُ وَذَا خَلَأَ
بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ قَالُوا أَعْنَبْتُمْ ثُوْنَهُمْ بِهَا فَأَقْتَمْ
اللَّهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَاجِجُوكُمْ بِهِ عِنْدَ رَبِّكُمْ أَفَلَا
يَعْقِلُونَ^①

أَوْلَاءِ عَلَمُوْنَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسْرِفُونَ وَمَا
يُعْلَمُونَ^②

وَمِنْهُمْ أَمْيُونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا أَمَانَ
فَلَمْ هُرِّبْ إِلَّا يُطْهَوْنَ^③

فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ يَكْتُبُونَ الْكِتَابَ بِأَنَّهُمْ يُهْمِلُونَ
يَقُولُونَ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ لَيَسْتَرُوا إِيمَانًا
قَلِيلًا فَوَيْلٌ لِلَّهُمَّ إِنَّمَا كَتَبْتَ إِلَيْنَا يُهْمِلُونَ
لَهُمْ فِيهَا يَكْسِبُونَ^④

وَقَالُوا لَنْ نَمْسَنَا الْكَارِبَ الْأَيَّامَ مَعْدُودَةً قُلْ
أَتَخَذُ تُرْمِيًّا عِنْدَ اللَّهِ عَهْدًا فَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ
عَهْدَهُ أَمْرَنَّا قُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا يَعْلَمُونَ^⑤

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम परा

2 अर्थात् अन्तिम नबी के विषय में तौरात में बताई है।

3 इस में यहूदी विद्वानों के कुकर्मा को बताया गया है।

वचन भंग नहीं करेगा? बल्कि तुम
अल्लाह के बारे में ऐसी बातें करते हो,
जिन का तुम्हें ज्ञान नहीं।

81. क्यों^[1] नहीं, जो भी बुराई कमायेगा,
तथा उस का पाप उसे घेर लेगा, तो
वही नारकीय है। और वही उस में
सदावासी होंगे।
82. तथा जो ईमान लायें और सत्कर्म
करें, वही स्वर्गीय है। और वह उस में
सदावासी होंगे।
83. और (याद करो) जब हम ने बनी
इस्राईल से दृढ़ वचन लिया कि
अल्लाह के सिवा किसी की इबादत
(वंदना) नहीं करोगे, तथा माता-पिता
के साथ उपकार करोगे, और
समीपवर्ती संबंधियों, अनाथों,
दीन-दुखियों के साथ, और लोगों से
भली बात बोलोगे, तथा नमाज़ की
स्थापना करोगे, और जकात दोगे,
फिर तुम में से थोड़े के सिवा सब ने
मुँह फेर लिया, और तुम (अभी भी)
मुँह फेरे हुए हो।
84. तथा (याद करो) जब हमने तुम
से दृढ़ वचन लिया कि आपस में
रक्तपात नहीं करोगे, और न अपनों
को अपने घरों से निकालोगे। फिर
तुम ने स्वीकार किया, और तुम उस
के साक्षी हो।

1. यहाँ यहूदियों के दावे का खण्डन तथा नरक और स्वर्ग में प्रवेश के नियम का
वर्णन है।

بَلِّ مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَاكَتْ بِهِ حَطَنْتَهُ
فَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَلِدُونَ ۝

وَالَّذِينَ امْسَأَوا عَمَلُوا الصَّلِيخَتِ أُولَئِكَ
أَصْحَبُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَلِدُونَ ۝

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنْتَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ لَا
تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهُ سُوْلَيْلَ الْدَّيْنِ إِحْسَانًا
وَذِي الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى وَالْمُسْكِنِينَ
وَقُولُوا إِلَيْنَا يَسِّرْ حُسْنًا وَآتِنَا مُوَالَ الصَّلَاةَ
وَأَنُّوا الرِّزْكَ لَهُ شَهَدَ تَوَيِّنُ إِلَّا قَلِيلًا
مِنْكُمْ وَأَنْتُمْ مُغْرِضُونَ ۝

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنْتَاقَكُمْ لَا سُفِّنُكُوْنَ دِمَاءً لَكُمْ وَلَا
ثُخِرُجُونَ اقْسَلَمُ مِنْ دِيَارِكُمْ شَهَدَ أَفْرَاثُمْ
وَأَنْتُمْ شَهَدُونَ ۝

85. फिर^[1] तुम वही हो, जो अपनों की हत्या कर रहे हो, तथा अपनों में से एक गिरोह को उन के घरों से निकाल रहे हो, और पाप तथा अत्याचार के साथ उन के विरुद्ध सहायता करते हो, और यदि वे बंदी होकर तुम्हारे पास आयें तो उन का अर्थदण्ड चुकाते हो, जब कि उन को निकालना ही तुम पर हराम (अवैध) था, तो क्या तुम पुस्तक के कुछ भाग पर ईमान रखते हो, और कुछ का इन्कार करते हो? फिर तुम में से जो ऐसा करते हों, तो उन का दण्ड क्या है? इस के सिवा कि सांसारिक जीवन में अपमान तथा प्रलय के दिन अति कड़ी यातना की ओर फेरे जायें, और अल्लाह तुम्हारे कर्तृतों से निश्चेत नहीं है।

86. उन्हों ने ही आखिरत (परलोक) के बदले सांसारिक जीवन ख़रीद लिया, अतः उन से यातना मंद नहीं की जायेगी, और न उन की सहायता की जायेगी।

87. तथा हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की, और उस के पश्चात् निरन्तर रसूल भेजे, और हम ने मरयम के पुत्र ईसा को खुली

لَقَدْ أَنْتُمْ هُؤُلَاءِ تَقْتُلُونَ أَنفُسَكُمْ وَتُخْرِجُونَ فَرِيقًا مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ تَظْهَرُونَ عَلَيْهِمْ بِالْإِلَيْهِمْ وَالْعُدُوَانِ وَلَنْ يَأْتُوكُمْ إِلَيْهِمْ إِلَّا مُؤْمِنُونَ بِمَعْصِيَتِ الْكِتَابِ وَتَكْفِرُونَ بِمَا يَعْصِيَنَّ أَهْمَاجَ رَأْءَاءِ مَنْ يَفْعَلُ ذَلِكَ وَمُنْكَرُ الْأَخْرَى فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يُرَدُّونَ إِلَى أَشَدِ الْعَذَابِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ

أُولَئِكَ الَّذِينَ اسْتَرَوُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ فَلَا يُحَقِّقُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ

وَلَقَدْ أَتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِهِ بِالرُّسُلِ وَأَتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيْتَ وَأَتَيْنَا نَاهِيَرُوحَ الْقَدُّسِ أَفْكَمَاهَا لَمْ رَسُولٍ

1 मदीने में यहूदियों के तीन कबीलों में बनी कैनुकाअ और बनी नजीर मदीने के अरब कबीले खजरज के सहयोगी थे। और बनी कुरैजा औस कबीले के सहयोगी थे। जब इन दोनों कबीलों में युद्ध होता तो यहूदी कबीले अपने पक्ष के साथ दूसरे पक्ष के साथी यहूदी की हत्या करते। और उसे वे घर कर देते थे। और युद्ध विराम के बाद पराजित पक्ष के बंदी यहूदी का अर्थदण्ड दे कर यह कहते हुये मुक्त करा देते कि हमारी पुस्तक तौरात का यही आदेश है। इसी का वर्णन अल्लाह ने इस आयत में किया है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

निशानियाँ दीं, और रुहुल कुदुस^[1] द्वारा उसे समर्थन दिया, तो क्या जब भी कोई रसूल तुम्हारी अपनी मनमानी के विरुद्ध कोई बात तुम्हारे पास लेकर आया तो तुम अकड़ गये, अतः कुछ नवियों को झुठला दिया, और कुछ की हत्या करने लगे?

88. तथा उन्होंने कहा कि हमारे दिल तो बंद^[2] हैं। बल्कि उन के कुफ़ (इन्कार) के कारण अल्लाह ने उन्हें धिक्कार दिया है। इसी लिये उन में से बहुत थोड़े ही ईमान लाते हैं।
89. और जब उन के पास अल्लाह की ओर से एक पुस्तक (कुर्�आन) आ गई, जो उन के साथ की पुस्तक का प्रमाणकारी है, जब कि: इस से पूर्व वह स्वयं काफिरों पर विजय की प्रार्थना कर रहे थे, तो जब उन के पास वह चीज़ आ गई जिसे वह पहचान भी गये, फिर भी उस का इन्कार कर^[3] दिया, तो

يَمَّا لَا تَهُوَى أَنْسُكُلُ اسْتَكِبَرُ تُحُمُّ فَقَرِيقًا
كَذَّابُهُمْ وَفَرِيقًا نَعْشُونَ ②

وَقَاتُلُوا قُلُوبَنَا غُلْفٌ بَلْ لَعْنَهُمُ اللَّهُ
يَكْفِرُهُمْ فَقِيلَ لِمَا يُؤْمِنُونَ ③

وَلَمَّا جَاءَهُمْ كِتْبٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ
لِمَا مَعَهُمْ وَكَانُوا مِنْ قَبْلٍ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى
الَّذِينَ كَفَرُوا وَأَقْلَمُهُمْ مَا عَرَفُوا كُفَّارٌ وَ
يَهُ قَاعِدُهُمُ اللَّهُ عَلَى الْكُفَّارِ ④

1 रुहुल कुदुस से अभिप्रेतः फ़रिश्ता जिब्रील अलैहिस्सलाम है।

2 अर्थात्: नबी की बातों का हमारे दिलों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता।

3 आयत का भावार्थ यह है कि मुहम्मद सल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस पुस्तक (कुर्�आन) के साथ आने से पहले वह काफिरों से युद्ध करते थे, तो उन पर विजय की प्रार्थना करते और बड़ी व्याकलता के साथ आप के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। जिस की भविष्यवाणी उन के नवियों ने की थी, और प्रार्थनायें किया करते थे कि आप शीघ्र आयें, ताकि काफिरों का प्रभुत्व समाप्त हो, और हमारे उत्थान के युग का शुभारंभ हो। परन्तु जब आप आ गये तो उन्होंने आप के नबी होने का इन्कार कर दिया, क्यों कि आप बनी इस्राईल में नहीं पैदा हुये, जो यहूदियों का गोत्र है। फिर भी आप इब्राहीम अलैहिस्सलाम ही के पुत्र

काफिरों पर अल्लाह की विकार है।

90. अल्लाह की उतारी हुई (पुस्तक)^[1] का इन्कार कर के बुरे बदले पर इन्होंने अपने प्राणों को बेच दिया, इस द्वेष के कारण कि अल्लाह ने अपना प्रदान (प्रकाशना) अपने जिस भक्त^[2] पर चाहा उतार दिया। अतः वह प्रकोप पर प्रकोप के अधिकारी बन गये, और ऐसे काफिरों के लिये अपमानकारी यातना है।

91. और जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह ने जो उतारा^[3] है, उस पर ईमान लाओ तो कहते हैं हम तो उसी पर ईमान रखते हैं जो हम पर उतारा है, और इस के सिवा जो कुछ है उस का इन्कार करते हैं। जब कि वह सत्य है और उस का प्रमाणकारी है जो उन के पास है। कहो कि फिर इस से पूर्व अल्लाह के नवियों की हत्या क्यों करते थे, यदि तुम ईमान वाले थे तो?

92. तथा मसा तुम्हारे पास खुली निशानियाँ ले कर आये। फिर तुम ने अत्याचार करते हुए बछड़े को पूज्य बना लिया।

93. फिर उस दृढ़ वचन को याद करो, जो हम ने तुम्हारे ऊपर तूर (पर्वत)

इस्माईल अलैहिस्सलाम के वंश से हैं, जैसे बनी इस्राईल उन के पुत्र इस्राईल की संतान हैं।

1 अर्थात् कुर्�আন।

2 भक्त अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम को नबी बना दिया।

3 अर्थात् कुर्�আন पর।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
إِنَّمَا أَشْرَقَ اللَّهُ أَنفُسَهُمْ مَن يَكْفُرُ وَإِنَّمَا
أَنْزَلَ اللَّهُ بَعْدًا مَا أَنْتَ رَأَيْتَ لَهُ مِنْ فَضْلِهِ عَلَى
مَن يَئِسَّ إِيمَانُهُ مِنْ عِبَادَةِ قَبَاءٍ وَيُغَضِّبُ كُلَّ
غَضَبٍ وَالْكُفَّارُ عَذَابٌ أَنْهَىٰ بِمُهِمَّٰنٍ^①

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ إِمْتُوْبَهَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَاتُلُوا
نُؤْمِنُ بِمَا أَنْزَلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُونَ بِمَا
وَرَأَاءُهُ وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِمَا مَعَهُمْ قُلْ
فَلَمَّا تَقْسُلُونَ أَنْبَيَاهُ اللَّهُ مِنْ قَبْلِ إِنْ كُنْتُمْ
مُؤْمِنِينَ^②

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُوسَىٰ بِالْبُيُّنَاتِ لَكُمْ
الْأَخْذُ تُحْمَلُ الْعِجْلُ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ ظَلَمُونَ^③

وَإِذَا أَخْذُكُمْ مِنْ تِائْفَكُمْ وَرَفَعْتُكُمْ فَقَمْ^٤

سُورَة النَّاس^[1] - 114

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سُورَة النَّاس के संक्षिप्त विषय
यह سُورَة مक्की है, इस में 6 आयतें हैं।

- इस में पाँच बार ((नास)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम है। जिस का अर्थ इन्सान है।^[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक शरण देने वाले के गुण बताये गये हैं।
- आयत 4 में जिस की बुराई से पनाह (शरण) माँगी गई है उस के घातक शत्रु होने से सावधान किया गया है।
- आयत 5 में बताया गया है कि वह इन्सान के दिल पर आक्रमण करता है।
- आयत 6 में सावधान किया गया है कि यह शत्रु जिन्ह तथा इन्सान दोनों में होते हैं।
- हदीस में है कि नबी (سَلَّلَ اللّٰهُ عَلٰيْهِ وَسَلَّمَ) हर रात जब विस्तर पर जाते तो सूरह इ़ख्�लास और यह और इस के पहले की सूरह (अर्थात्: फ़लक) पढ़ कर अपनी दोनों हथेलियाँ मिला कर उन पर फूंकते, फिर जितना हो सके दोनों को अपने शरीर पर फेरते। सिर से आरंभ करते और फिर आगे के शरीर से गुज़ारते। ऐसा आप तीन बार करते थे। (सहीह बुख़াرी: 6319, 5748)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) कहो कि मैं इन्सानों के पालनहार की शरण में आता हूँ।
2. जो सारे इन्सानों का स्वामी है।
3. जो सारे इन्सानों का पूज्य है।^[2]

فَلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ

مَلِكِ النَّاسِ

إِلَهِ النَّاسِ

1 यह सूरह मक्का में अवतरित हुई।

2 (1-3) यहाँ अल्लाह को उस के तीन गुणों के साथ याद कर के उस की शरण

97. (हे नबी!)^[1] कह दो कि जो व्यक्ति जिब्रील का शत्रु है (तो रहे)। उस ने तो अल्लाह की अनुमति से इस संदेश (कुर्�आन) को आप के दिल पर उतारा है, जो इस से पूर्व की सभी पुस्तकों का प्रमाणकारी तथा ईमान वालों के लिये मार्गदर्शन एवं (सफलता) का शुभ समाचार है।

98. जो अल्लाह तथा उस के फ़रिश्तों और उस के रसूलों और जिब्रील तथा मीकाईल का शत्रु हो, तो अल्लाह काफिरों का शत्रु है।^[2]

99. और (हे नबी!) हम ने आप पर खुली आयतें उतारी हैं, और इस का इन्कार केवल वही लोग^[3] करेंगे जो कुकर्मी हैं।

100. क्या ऐसा नहीं हुआ है कि जब कभी उन्हों ने कोई वचन दिया तो उन के एक गिरोह ने उसे भंग कर दिया? बल्कि इन में बहुतेरे ऐसे हैं जो ईमान नहीं रखते।

فُلُّ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلَى قَلْمَبِكَ يَأْذِنُ اللَّهُ مُصَدِّقٌ فَإِلَيْهِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدُّى وَبُشْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ ۝

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلَّهِ وَمَلِكَتِهِ وَرَسُولِهِ وَجِبْرِيلَ وَمِنْكُلَّ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوًّا لِلْكُفَّارِ ۝

وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْآيَتِ بَيْنَتِ وَمَا يَكْفِرُ بِهَا إِلَّا الظَّفِيقُونَ ۝

أَوْ كُلُّمَا عَاهَدُوا عَهْدًا أَبَدَّا فَرَيَّثُونَ مِنْهُمْ بَلْ أَكْرَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

1 यहूदी, केवल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के अन्यायियों ही को बुरा नहीं कहते थे, वह अल्लाह के फ़रिश्ते जिब्रील को भी गाँलियाँ देते थे कि वह दया का नहीं, प्रकोप का फरिश्ता है। और कहते थे कि हमारा मित्र मीकाईल है।

2 आयत का भावार्थ यह है कि जिस ने अल्लाह के किसी रसूल -चाहे वह फ़रिश्ता हो या इन्सान- से बैर रखा तो वह सभी रसूलों का शत्रु तथा कुकर्मी है। (इब्ने कसीर)

3 इब्ने अब्बास रजियल्लाह अन्हुमा कहते हैं कि यहूदियों के विद्वान इब्ने सूरिया ने कहा: हे मुहम्मद! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप हमारे पास कोई ऐसी चीज़ नहीं लाये जिसे हम पहचानते हों। और न आप पर कोई खुली आयत उतारी गई कि हम आप का अनुसरण करें। इस पर यह आयत उतरी। (इब्ने जरीर)

101. तथा जब उन के पास अल्लाह की ओर से एक रसूल उस पुस्तक का समर्थन करते हुये जो उन के पास है, आ गया^[1] तो उन के एक समुदाय ने जिन को पुस्तक दी गई अल्लाह की पुस्तक को ऐसे पीछे डाल दिया जैसे वह कुछ जानते ही न हों।
102. तथा सुलैमान के राज्य में शैतान जो मिथ्या बातें बना रहे थे उस का अनुसरण करने लगे। जब कि सुलैमान ने कभी कुफ़ (जादू) नहीं किया, परन्तु कुफ़ तो शैतानों ने किया, जो लोगों को जादू सिखा रहे थे, तथा उन बातों का (अनुसरण करने लगे) जो बाबिल (नगर) के दो फरिश्तों हारूत और मारूत पर उतारी गईं, और वह दोनों किसी को (जादू) नहीं सिखाते जब तक यह न कह देते कि: हम केवल एक परीक्षा हैं, अतः तू कुफ़ में न पड़। फिर भी वह उन दोनों से वह चीज़ सीखते जिस के द्वारा वह पति और पत्नी के बीच जुदाई डाल दें। और वह अल्लाह की अनुमति बिना इस के द्वारा किसी को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते थे, परन्तु फिर भी ऐसी बातें सीखते थे जो उन के लिये हानिकारक हों, और लाभकारी न हों। और वह भली भाँति जानते थे कि जो इस का खरीदार बना परलोक में उस का कोई भाग नहीं, तथा कितना बुरा उपभोग्य है जिस

وَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ
لِّمَا أَمَّا مَعَهُمْ بَنَدَ فِرِيقٌ مِّنَ الظَّاهِرِينَ أُوتُوا
الْكِتَابَ كِتَابُ اللَّهِ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ كَانُوكُمْ
لَا يَعْلَمُونَ

وَأَئِبْعَادُوا مَا تَنَاهُوا التَّشِيطُ عَلَى مُلْكِ
سُلَيْمَانَ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمَانُ وَلَكِنَ الشَّيْطَانُ
كَفَرَ وَإِنَّهُ لَمُؤْمِنٌ النَّاسُ السَّيْحَرُ وَمَا أَنْزَلَ عَلَى
الْمُلَكَيْنِ إِلَّا بِأَيْلَالٍ هَارُوتَ وَمَارُوتَ وَمَا يَعْلَمُونَ
مِنْ أَحَدٍ حَتَّىٰ يَقُولُوا إِنَّهَا نَعْنُ فِتْنَةٌ فَلَا
كُلُّهُ فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ يَهْ بَيْنَ
الْمُرْءَ وَزَوْجِهِ وَمَا هُمْ بِضَارِّينَ يَهْ مِنْ أَحَدٍ
إِلَّا بِأَذْنِ اللَّهِ وَمَا يَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا
يَنْفَعُهُمْ وَلَقَدْ عَلِمُوا أَنَّ اشْرَارَهُ مَالَهُ
فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَقِهِ إِنَّمَا يَتَعَلَّمُونَ
أَنْفُسُهُمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुर्�आन के साथ आ गये।

के बदले वह अपने प्राणों का सौदा कर रहे हैं^[1], यदि वह जानते होते।

103. और यदि वह ईमान लाते, और अल्लाह से डरते, तो अल्लाह के पास इस का जो प्रतिकार (बदला) मिलता, वह उन के लिये उत्तम होता, यदि वह जानते होते।
104. हे ईमान वालो! तुम "राइना"^[2] न कहो, "उन्जुरना" कहो, और ध्यान से बात सुनो, तथा काफिरों के लिये दुखदायी यातना है।

105. अहले किताब में से जो काफिर हो गये, तथा जो मिश्रणवादी हो गये, यह नहीं चाहते कि तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर कोई भलाई उतारी जायें, और

وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَآتَقْوَ الْمُتُوبَةَ فَنِعْمَتْ
اللَّهُ خَيْرٌ لَّهُمَا كُلُّا يَعْلَمُونَ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا إِنَّا
وَقُولُوا انظُرُنَا وَاسْمَعُونَا وَلِلْكَافِرِينَ
عَذَابٌ أَكْبَحٌ

مَا يَوْدُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا
الْمُشْرِكُونَ أَنْ يُنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَيْرَتِنَا
رَبِّكُمْ وَإِنَّهُ يَعْلَمُ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ
وَإِنَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

1 इस आयत का दूसरा अर्थ यह भी किया गया है कि सुलैमान ने कुफ़ नहीं किया, परन्तु शैतानों ने कुफ़ किया, वह मानव को जादू सिखाते थे। और न दो फरिश्तों पर जादू उतारा गया, उन शैतानों या मानव में से हारूत तथा मारूत जादू सिखाते थे। (तफसीरे कुर्तुबी)। जिस ने प्रथम अनुवाद किया है उस का यह विचार है कि मानव के रूप में दो फरिश्तों को उन की परीक्षा के लिये भेजा गया था।

सुलैमान अलैहिस्सलाम एक नबी और राजा हुये हैं। आप दावूद अलैहिस्सलाम के पुत्र थे।

2 इब्ने अब्बास रजियल्लाह अन्हुमा कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सभा में यहूदी भी आ जाते थे। और मुसलमानों को आप से कोई बात समझनी होती तो "राइना" कहते। अर्थात्: हम पर ध्यान दीजिये, या हमारी बात सुनिये। इबरानी भाषा में इस का बुरा अर्थ भी निकलता था, जिस से यहूदी प्रसन्न होते थे, इस लिये मुसलमानों को आदेश दिया गया कि: इस के स्थान पर तुम "उन्जुरना" कहा करो। अर्थात् हमारी ओर देखियो। (तफसीरे कुर्तुबी)

अल्लाह जिस पर चाहे अपनी विशेष
दया करता है, और अल्लाह बड़ा
दानशील है।

106. हम अपनी कोई आयत निरस्त कर
देते अथवा भुला देते हैं तो उस से
उत्तम अथवा उस के समान लाते हैं।
क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह जो
चाहे¹ कर सकता है?
107. क्या तुम यह नहीं जानते कि:
अकाशों तथा धरती का राज्य अल्लाह
ही के लिये है, और उस के सिवा
तुम्हारा कोई रक्षक और सहायक
नहीं है?
108. क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल
से उसी प्रकार प्रश्न करो, जैसे
मूसा से प्रश्न किये जाते रहे? और
जो व्यक्ति ईमान की नीति को कुफ्र
से बदल लेगा तो वह सीधी डगर से
विचलित हो गया।
109. अहले किताब में से बहुत से चाहते
हैं कि तुम्हारे ईमान लाने के पश्चात्
अपने द्वेष के कारण तुम्हें कुफ्र की
ओर फेर दों। जब कि सत्य उन के
लिये उजागर हो गया, फिर भी तुम
क्षमा से काम लो और जाने दो। यहाँ
तक कि अल्लाह अपना निर्णय कर दे
निश्चय अल्लाह जो चाहे कर
सकता है।

مَا نَتَنَسَّخُ مِنْ أَيِّهَا وَنُنَسِّخُ مَا كَانَتِ
مِثْلُهَاۚ۝ إِنَّمَا تَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ۝

إِنَّمَا تَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَمَا الْكُفَّارُ بِمُؤْمِنِ دُونِ اللَّهِ مِنْ قَبْلٍ وَلَا نَصِيرُ
بِإِلَيْهِمْ۝

أَمْرُرُّ يُدْعُونَ أَنْ تَسْعَلُوا رَسُولَكُمْ كَمَا سُبِّلَ
مُوسَىٰ مِنْ قَبْلٍ۝ وَمَنْ يَتَبَدَّلْ اللَّهُ
بِإِلَيْهِمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ التَّبَيِّنُ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ۝

وَذَكَرْتُرُّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْيَرْدُونَكُمْ مِنْ
بَعْدِ إِيمَانِكُمْ لَقَارَأَ حَسَداً مِنْ عِشْدِ آنْقِيْهِمْ
قَنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ فَاغْفُرْ
وَاصْفَحُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ۝ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ۝

1 इस आयत में यहूदियों के तौरात के आदेशों के निरस्त किये जाने तथा ईसा अलैहिस्सलाम और मुहम्मद सल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबूवत के इन्कार का खण्डन किया गया है।

110. तथा तुम नमाज़ की स्थापना करो, और ज़कात दो। और जो भी भलाई अपने लिये किये रहोगे, उसे अल्लाह के यहाँ पाओगे। तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह उसे देख रहा है।
111. तथा उन्होंने कहा कि कोई स्वर्ग में कदापि नहीं जायेगा, जब तक यहूदी अथवा नसारा^[1](ईसाई) न हो। यह उन की कामनायें हैं। उन से कहो कि यदि तुम सत्यवादी हो तो कोई प्रमाण प्रस्तुत करो।
112. क्यों नहीं?^[2] जो भी स्वयं को अल्लाह की आज्ञा पालन के समर्पित कर देगा, तथा सदाचारी होगा तो उस के पालनहार के पास उस का प्रतिफल है। और उन पर कोई भय नहीं होगा, और न वह उदासीन होंगे।
113. तथा यहूदियों ने कहा कि ईसाईयों के पास कुछ नहीं। और ईसाईयों ने कहा कि यहूदियों के पास कुछ नहीं है। जब कि वह धर्म पुस्तक^[3] पढ़ते हैं। इसी जैसी बात उन्होंने भी कही, जिन के पास धर्मपुस्तक का कोई ज्ञान^[4] नहीं,

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَأَتُو الْزَكُوَةَ وَمَا
نَهَىٰ مُوَالِنَفِسَكُمْ مِّنْ حَيْثُ شَدُّوْعَةٍ عِنْدَ اللَّهِ
إِنَّ اللَّهَ يِمَّا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ^①

وَقَالُوا إِنَّمَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ الْأَمَنُ كَانَ هُودًا
أَوْ نَصَارَىٰ إِنَّكَ أَمَانٌ لِّهُمْ فَقُلْ هَاتُوا
بِرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَدِيقِينَ^②

يَلِّي مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِنِهٰ وَمُؤْمِنٌ فَلَمَّا
أَجْرَاهُ عِنْدَ رَبِّهٰ لَاحَقُّ عَذَابُهُ وَلَا هُمْ
يَحْرَئُونَ^③

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَ النَّصَارَىٰ عَلَىٰ شَيْءٍ قَوَّلَتِ
النَّصَارَىٰ لَيْسَ الْيَهُودُ عَلَىٰ شَيْءٍ وَهُمْ يَسْتَلُونَ
الْكِتَابَ كَذِيلَكَوَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ مِثْلَ
قَوْلِهِمْ فَاللَّهُ يَعْلَمُ بِمَا هُنَّ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا
كَانُوا فِيهِ يَغْتَلُقُونَ^④

1 अर्थात् यहूदियों ने कहा कि केवल यहूदी जायेंगे, और ईसाईयों ने कहा कि केवल ईसाई जायेंगे।

2 स्वर्ग में प्रवेश का साधारण नियम अर्थात् मुकित एकेष्वरवाद तथा सदाचार पर आधारित है, किसी जाति अथवा गिरोह पर नहीं।

3 अर्थात् तौरात तथा इंजील जिस में सब नबियों पर ईमान लाने का आदेश दिया गया है।

4 धर्म पुस्तक से अज्ञान अरब थे। जो यह कहते थे कि: (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास कुछ नहीं है।

यह जिस विषय में विभेद कर रहे हैं।
उस का निर्णय अल्लाह प्रलय के दिन
उन के बीच कर देगा।

114. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा, जो अल्लाह की मस्जिदों में उस के नाम का वर्णन करने से रोके। और उन्हें उजाइने का प्रयत्न करें^[1], उन्हीं के लिये योग्य है कि उस में डरते हुये प्रवेश करें, उन्हीं के लिये संसार में अपमान है, और उन्हीं के लिये आखिरत (परलोक) में घोर यातना है।
115. तथा पूर्व और पश्चिम अल्लाह ही के हैं, तुम जिधर भी मुख करो^[2], उधर ही अल्लाह का मुख है। और अल्लाह विशाल अति ज्ञानी है।
116. तथा उन्होंने कहा^[3] कि अल्लाह ने कोई संतान बना ली। वह इस से पवित्र है। आकाशों तथा धरती में जो भी है, वह उसी का है, और सब उसी के आज्ञाकारी हैं।
117. वह आकाशों तथा धरती का अविष्कारक है। जब वह किसी बात का निर्णय कर लेता है तो उस के लिये बस यह आदेश देता है कि "हो

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ تَنْعَمَ مَسِيْدَ الْهَوَانْ يُدْكِرْ
فِيهَا أَسْمَهُ وَسَعَى فِي حَرَابِهَا، أُولَئِكَ مَا كَانَ
لَهُمْ أَنْ يَدْكُلُوهَا إِلَّا حَلَبَيْنِ دَلَاهُمْ فِي الدُّنْيَا
جَزِيْرٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ^①

وَلَهُوَ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ، فَأَيْمَانُكُوْلُوْافِلُمْ
وَجْهُهُ الْهَوَانُ اللَّهُ وَاسْعُ عَلَيْهِ^②

وَقَالُوا أَخْنَدَ اللَّهُ وَلَدُ اسْبُحْنَهُ بَلْ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ، هُنَّ لَهُ فَنِيْتُونَ^③

بَدِيْعُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ، وَإِذَا قَضَى أَمْرًا
فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ^④

1 जैसे मङ्का वासियों ने आप सल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के साथियों को सन् 6 हिजरी में काबा में आने से रोक दिया। या ईसाईयों ने बैतुल मुक़द्दस् को ढाने में बुख़त नस्सर (राजा) की सहायता की।

2 अर्थात् अल्लाह के आदेशानुसार जिधर भी रुख़ करोगे तुम्हें अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त होगी।

3 अर्थात् यहूद और नसारा तथा मिश्रणवादियों ने।

जा" और वह हो जाती है।

118. तथा उन्होंने कहा जो ज्ञान^[1] नहीं रखते कि अल्लाह हम से बात क्यों नहीं करता, या हमारे पास कोई आयत क्यों नहीं आती। इसी प्रकार की बात इन से पर्व के लोगों ने कही थी। इन के दैल एक समान हो गये। हम ने उन के लिये निशानियाँ उजागर कर दी हैं जो विश्वास रखते हैं।
119. (हे नबी!) हम ने आप को सत्य के साथ शुभ सूचना देने तथा सावधान^[2] करने वाला बना कर भेजा है। और आप से नारकियों के विषय में प्रश्न नहीं किया जायेगा।
120. हे नबी! आप से यहूदी तथा ईसाई सहमत (प्रसन्न) नहीं होंगे, जब तक आप उन की रीति पर न चलें। कह दो कि सीधी डगर वही है जो अल्लाह ने बताई है। और यदि आप ने उन की आकंक्षाओं का अनुसरण किया, इस के पश्चात् कि आप के पास ज्ञान आ गया, तो अल्लाह (की पकड़) से आप का कोई रक्षक और सहायक नहीं होगा।
121. और हम ने जिन को पुस्तक प्रदान की है, और उसे वैसे पढ़ते हैं, जैसे

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا كُلِّمَنَا اللَّهُ أَوْنَاتِنَا إِلَيْهِ كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِثْلُ قَوْلِهِمْ شَابِهُمْ فَلَوْلَا هُمْ قَدْ بَيَّنُوا الْأُبَيْتِ لِقَوْمٍ لَّمْ يُوقِنُوا [®]

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ إِنْهُ مُؤْمِنٌ
وَلَا سُنْنٌ عَنْ أَصْحَابِ الْجَنِّ [®]

وَلَئِنْ تَرْضَى عَنْكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصَارَى حَتَّى تَتَّبِعَ
مِلَّهُمْ قُلْ إِنَّهُمْ هُدَى اللَّهُ هُوَ الْهُدَى وَلَمَّا
أَبْعَدْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ الَّذِي جَاءَكُمْ مِنَ الْعِلْمِ
مَالَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَلَيْتَ وَلَا نَصِيرُ [®]

الَّذِينَ اتَّيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَتَلَوَّنُهُ حَقٌّ عَلَوْتَهُ

1 अर्थात् अरब के मिश्रणवादियों ने।

2 अर्थात् सत्य ज्ञान के अनुपालन पर स्वर्ग की शुभ सूचना देने, तथा इन्कार पर नरक से सावधान करने के लिये। इस के पश्चात् भी कोई न माने तो आप उस के उत्तरदायी नहीं हैं।

पढ़ना चाहिये, वही उस पर ईमान रखते हैं। और जो उसे नकारते हैं वही क्षतिग्रस्तों में से हैं।

122. हे बनी इसराईल! मेरे उस पुरस्कार को याद करो जो तुम पर किया। और यह कि तुम्हें (अपने युग के) संसार-वासियों पर प्रधानता दी थी।
123. तथा उस दिन से डरो जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के कुछ काम नहीं आयेगा, और न उस से कोई अर्धदण्ड स्वीकार किया जायेगा, और न उसे कोई अनुशंसा (सिफारिश) लाभ पहुँचायेगी, और न उन की कोई सहायता की जायेगी।
124. और (याद करो) जब इब्राहीम की उस के पालनहार ने कुछ बातों से परीक्षा ली। और वह उस में पूरा उतरा, तो उस ने कहा कि मैं तुम्हें सब इन्सानों का इमाम (धर्मगुरु) बनाने वाला हूँ। (इब्राहीम ने) कहा: तथा मेरी सन्तान से भी। (अल्लाह ने कहा:) मेरा वचन उन के लिये नहीं जो अत्याचारी^[1] हैं।
125. और (याद करो) जब हम ने इस घर (अर्थात्: काबा) को लोगों के लिये बार बार आने का केन्द्र तथा शान्ति स्थल निर्धारित कर दिया। तथा यह आदेश दे दिया कि "मकामे इब्राहीम" को नमाज का

أُولَئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَمَنْ يَكُفِّرْ بِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٦﴾

يَنْهَا إِنْسَانٌ إِذَا رَأَى مِنْ أَذْكُرِنَا أَصْحَابَ الْقَوْمَ الْمُنْكَرُونَ
وَإِنَّمَا نَضْلُّنَّمْ عَلَى الْغَلِيلِينَ ﴿٧﴾

وَاقْتُلُوا يَوْمًا لَا يَجِدُونَ نَفْسَ عَنْ تَقْرِيرِ شَيْءٍ وَلَا
يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا تَنْفَعُهَا سَفَاعَةٌ وَلَا
هُمُ يُنْصَرُونَ ﴿٨﴾

وَلَا يُبْطَلَ إِبْرَاهِيمُ بِحَلْمِهِ كَمَا تَهْمَئُ قَوْلَانِي
جَاءَكَ عَلَكَ لِلنَّاسِ إِنَّا لَدَقَالَ وَمَنْ ذُرَيْتَ قَالَ لَا
يَنْأِلُ عَهْدَيِ الظَّلِيلِينَ ﴿٩﴾

وَلَدْجَعَلَنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِلنَّاسِ وَأَمْنًا وَآتَيْنَا وَمِنْ
مَقْلَمِ إِبْرَاهِيمَ مُصْلَى وَعَنْهَا إِلَى إِبْرَاهِيمَ وَلَشَيْعَلَ أَنْ طَهَرَ
يَنْهَا لِلظَّالِمِينَ وَالْعَكْفِينَ وَالْزَّكَعَ الشَّجُورَ ﴿١٠﴾

1 آयत में अत्याचार से अभिप्रेत केवल मानव पर अत्याचार नहीं, बल्कि सत्य को नकारना तथा शिर्क करना भी अत्याचार में सम्मिलित है।

स्थान^[1] बना लो। तथा इब्राहीम और इस्माईल को आदेश दिया कि मेरे घर को तवाफ़ (परिक्रमा) तथा एतिकाफ़^[2] करने वालों, और सजदा तथा रुक़ करने वालों के लिये पवित्र रखो।

126. और (याद करो) जब इब्राहीम ने अपने पालनहार से प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! इस छेत्र को शान्ति का नगर बना दो तथा इस के वासियों को जो उन में से अल्लाह और अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखे, विभिन्न प्रकार की उपज (फलों) से आजीविका प्रदान करा। (अल्लाह ने) कहा: तथा जो काफिर है उन्हें भी मैं थोड़ा लाभ दूँगा, फिर उसे नरक की यातना की और बाध्य कर दूँगा। और वह बहुत बुरा स्थान है।

127. और (याद करो) जब इब्राहीम और इस्माईल इस घर की नींव ऊँची करे रहे थे। तथा प्रार्थना कर रहे थे: हे हमारे पालनहार! हम से यह सेवा स्वीकार कर लो। तू ही सब कुछ सुनता और जानता है।

128. हे हमारे पालनहार! हम दोनों को अपना आज्ञाकारी बना। तथा हमारी संतान से एक ऐसा समुदाय बना

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّي أَجْعَلْ فَهَذَا الْبَلْدُ الْمَنَاؤُ الرُّزْقُ
أَهْلَهُ مِنَ النَّبِيِّ مَنْ أَمَنَ وَمَنْ لَمْ يُأْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْغَرْبِ
قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَأُمَّيْتُهُ قَلِيلًا تُخْرَجُ أَضْطُرْرُهُ إِلَى عَذَابِ
النَّارِ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ[®]

وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ فَإِسْعِيلُ رَبِّنَا
يَقُولُ مِنَا إِنَّكَ أَنْتَ التَّسِيْرُ الْعَلِيمُ[®]

رَبِّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمِينَ لَكَ وَمَنْ ذُرَّ رَبِّنَا أَمَّهُ
مُسْلِمَةً لَكَ وَأَرْنَا مَنَّا سَكَنَا وَتُبَّ عَلَيْنَا إِنَّكَ

1 "मकामे इब्राहीम" से तात्पर्य वह पत्थर है जिस पर खड़े हो कर उन्होंने काबा का निर्माण किया। जिस पर उन के पदचिन्ह आज भी सुरक्षित हैं। तथा तवाफ़ के पश्चात् वहाँ दो रकअत नमाज़ पढ़नी सुन्नत है।

2 "एतिकाफ़" का अर्थ किसी मस्जिद में एकांत में हो कर अल्लाह की इबादत करना है।

दे जो तेरा आज्ञाकारी हो। और हमें
हमारे (हज्ज) की विधियाँ बता दे।
तथा हमें क्षमा कर। वास्तव में तू
अतिक्षमी दयावान् है।

أَنْتَ التَّوَابُ الرَّحِيمُ ⑥

129. हे हमारे पालनहार! उन के बीच
इन्हीं में से एक रसूल भेज, जो उन्हें
तेरी आयतें सुनाये, और उन्हें पुस्तक
(कुर्�आन) तथा हिक्मत (सुन्नत)
की शिक्षा दे। और उन्हें शुद्ध तथा
आज्ञाकारी बना दे। वास्तव में तू ही
प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ^[1] है।

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَنْذُرُونَ
عَلَيْهِمُ الْإِيمَانَ وَيَعْلَمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحَكْمَةَ
وَيُرِيكُمُهُمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْعَظِيمُ ٦

130. तथा कौन होगा, जो इब्राहीम के
धर्म से विमुख हो जाये परन्तु वही
जो स्वयं को मूर्ख बना ले? जब कि
हम ने उसे संसार में चुन^[2] लिया,
तथा अखिरत (परलोक) में उस की
गणना सदाचारियों में होगी।

وَمَنْ يُرْغَبُ عَنْ قِلْقَابِ إِبْرَاهِيمَ لِأَمْنِ سَفَرَةَ
نَفْسَهُ وَلَقَدِ اصْطَفَنَا فِي الدُّنْيَا وَإِنَّهُ فِي
الْآخِرَةِ لِمَنِ الصَّلِحُونَ ⑦

131. तथा (याद करो) जब उस के
पालनहार ने उस से कहा: मेरा
आज्ञाकारी हो जा। तो उस ने तुरन्त
कहा: मैं विष्व के पालनहार का
आज्ञाकारी हो गया।

إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْلِحْهُ قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِّ
الْعَلَمِينَ ⑧

1 यह इब्राहीम तथा इस्माईल अलैहिमस्सलाम की प्रार्थना का अन्त है। एक रसूल से अभिप्रेतः मुहम्मद सल्लाल्लाहू अलैहि व सल्लम हैं। क्योंकि इसमाईल अलैहिस्सलाम की संतान में आप के सिवा कोई दूसरा रसूल नहीं हुआ। होटेस में है कि आप सल्लाल्लाहू अलैहि व सल्लम ने फरमाया: मैं अपने पिता इब्राहीम की प्रार्थना, इसा की शुभ सूचना, तथा अपनी माता का स्वप्न हूं। आप की माता आमिना ने गर्भ अवस्था में एक स्वप्न देखा कि मुझ से एक प्रकाश निकला, जिस से शाम (देश) के भवन प्रकाशमान हो गये। (देखिये: हाकिम 2600)। इस को उन्होंने सहीह कहा है। और इमाम ज़हबी ने इस की पुष्टि की है।

2 अर्थात् मार्गदर्शन देने तथा नबी बनाने के लिये निर्वाचित कर लिया।

132. तथा इब्राहीम ने अपने पुत्रों को तथा याकूब ने इसी बात पर बल दिया कि: हे मेरे पुत्रो! अल्लाह ने तुम्हारे लिये यह धर्म (इस्लाम) निर्वाचित कर दिया है। अतः मरते समय तक तुम इसी पर स्थिर रहना।
133. क्या तुम याकूब के मरने के समय उपस्थित थे, जब याकूब ने अपने पुत्रों से कहा: मेरी मृत्यु के पश्चात् तुम किस की इबादत (वंदना) करोगे? उन्होंने कहा: हम तेरे तथा तेरे पिता इब्राहीम और इस्माईल तथा इस्हाक के एक पूज्य की इबादत (वंदना) करेंगे, और उसी के आज्ञाकारी रहेंगे।
134. यह एक समुदाय था जो जा चुका। उन्होंने जो कर्म किये वे उन के लिये हैं। तथा जो तुम ने किये वह तुम्हारे लिये। और उन के किये का प्रश्न तुम से नहीं किया जायेगा।
135. और वह कहते हैं कि यहूदी हो जाओ अथवा ईसाई हो जाओ, तुम्हें मार्गदर्शन मिल जायेगा। आप कह दें: नहीं। हम तो एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म पर हैं, और वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।
136. (हे मुसलमानो!) तुम सब कहो कि हम अल्लाह पर ईमान लाये, तथा उस पर जो (कुर्�आन) हमारी ओर उतारा गया। और उस पर जो इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक, याकूब, तथा उन की संतान की

وَوَضَىٰ بِهَا إِبْرَاهِيمَ بَنِيهِ وَيَعْقُوبَ بْنَيَّتِيَّ إِنَّ
اللَّهَ أَصْطَفَىٰ لِكُمُ الظَّرِيفَ فَلَا تَمُسُّوهُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ
مُسْلِمُونَ ﴿١٠﴾

أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءً إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ الْمَوْتُ إِذْ
قَالَ لِبَنِيهِ مَا نَعْبُدُونَ مِنْ أَعْيُّنِنَا قَالُوا نَعْبُدُ
إِلَهَكُمْ وَإِلَهَنَا إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ
إِلَهًا وَاجْلَاءَ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿١١﴾

تِلْكَ أَمْثَةٌ قَدْ خَلَقْتَ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَا
كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْأَلُونَ عَنَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢﴾

وَقَالُوا كُنُّوا هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ تَهْتَدُوا فَقُلْ بَلْ
وَلَلَّهِ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الشَّرِكِينَ ﴿١٣﴾

قُولُوا امْكَنَ لِلَّهِ مَا لَمْ يَرَنْ إِلَيْنَا وَمَا أَنْزَلَ إِلَيْ
إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ
وَمَا أَوْتَنَا مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَمَا أَوْتَنَا الْئَبْرِيزِيُّونَ مِنْ
رَّبِّهِمْ لَا لَغَرْبَىٰ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ
مُسْلِمُونَ ﴿١٤﴾

ओर उतारा गया। और जो मूसा
तथा ईसा को दिया गया, तथा जो
दूसरे नवियों को उन के पालनहार
की ओर से दिया गया। हम इन में
से किसी के बीच अन्तर नहीं करते,
और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।

137. तो यदि वह तुम्हारे ही समान ईमान
ले आयें, तो वह मार्गदर्शन पा लेंगे।
और यदि विमुख हों तो वह विरोध
में लीन हैं। उन के विरुद्ध तुम्हारे
लिये अल्लाह बस है। और वह सब
सुनने वाला और जानने वाला है।
138. तुम सब अल्लाह के रंग^[1] (स्वभाविक
धर्म) को ग्रहण कर लो। और
अल्लाह के रंग से अच्छा किस का
रंग होगा? हम तो उसी की इबादत
(वंदना) करते हैं।
139. (हे नबी!) कह दो कि: क्या तुम
हम से अल्लाह के (एकत्व) होने के
विषय में झगड़ते हो? जब कि वही
हमारा तथा तुम्हारा पालनहार है।^[2]
फिर हमारे लिये हमारा कर्म है,
और तुम्हारे लिये तुम्हारा कर्म है।
और हम तो बस उसी की इबादत
(वंदना) करने वाले हैं।
140. हे अहले किताब! क्या तुम कहते हो

فَإِنْ أَمْتَوْا بِهِشِّلَ مَا لَمْ يُنْهِيْهِ فَقَدْ اهْتَدَوْا
وَإِنْ تَوَلُوا فَإِنَّهَا مُهْرِنٌ شَعَاعٌ فَسِكْنٌ فِيْكُمْ
اللَّهُ عَوْهُ وَالشَّيْعُ الْعَلِيْمُ

صِبْعَةُ اللَّهِ وَمَنْ أَحْسَنْ مِنَ اللَّهِ صِبْعَةً
وَنَحْنُ لَهُ عِنْدُونَ

قُلْ أَتَحَاجُجُونَعَنِ الْأَنْوَارِ هُوَرَبِّنَا وَرَبِّكُمْ وَلَنَا
أَهْمَالُنَا وَلَكُمْ أَهْمَالُكُمْ وَنَحْنُ لَهُمْ خَلُصُونَ

أَمْ تَعُولُونَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ قَاسِمُ عِيلَ وَلَا سُخْنَ

1 इस में ईसाई धर्म की (बैटिज्म) की परम्परा का खण्डन है। ईसाईयों ने पीले रंग
का जल बना रखा था। और जब कोई ईसाई होता या उन के यहाँ कोई शिशु
जन्म लेता तो उस में स्नान करा के ईसाई बनाते थे। अल्लाह के रंग से अभिप्राय
एकेश्वरवाद पर आधारित स्वभाविक धर्म इस्लाम है। (तफ्सीरे कुर्तुबी)

2 अर्थात् फिर वंदनीय भी केवल वही है।

कि इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक, याकूब तथा उन की संतान यहदी या ईसाई थी? उन से कह दो कि तुम अधिक जानते हो अथवा अल्लाह? और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा। जिस के पास अल्लाह का साक्ष्य हो, और उसे छूपा दे? और अल्लाह तुम्हारे कर्तृतों से अचेत तो नहीं है[1]।

141. यह एक समुदाय था, जो जा चुका उन के लिये उन का कर्म है, तथा तुम्हारे लिये तुम्हारा कर्म है। तुम से उन के कर्मों के बारे में प्रश्न नहीं किया जायेगा^[2]।
142. शीघ्र ही मर्ख लोग कहेंगे कि उन को जिस किंबले^[3] पर वह थे, उस से किस बात ने फेर दिया? (हे नबी!) उन्हे बता दो कि पूर्व और पश्चिम सब अल्लाह के हैं। वह जिसे चाहे सीधी राह पर लगा देता है।
143. और इसी प्रकार हम ने तुम्हें मध्यवर्ती उम्मत (समुदाय) बना दिया, ताकि तुम सब पर साक्षी^[4]

وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ كَانُوا هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ فُلْءَانْتُمْ أَعْلَمُ أَمْ لَهُ وَمَنْ أَظْلَمُ مِنْ كَثَرِ شَهَادَةٍ عِنْدَكُمْ كَمِنَ اللَّهِ وَمَا اللَّهُ يَعْلَمُ فِي عَمَلِكُمْ ۝

تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَقْنَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُنْمَا كَسَبْتُمْ وَلَا سُنْنَنَا كَانُوا عَمَلَنَّ ۝

سَيَقُولُ الشُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَهُمْ عَنْ قِيلَابِهِمُ الَّتِي كَانُوا عَلَيْهَا فُلْئِيَّةً إِلَيْهِ الْمُرْقُ وَالْمَغْرِبُ يَهْدِي مِنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطِ مُسْتَقِيمٍ ۝

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أَمَّةً وَسَطًا لِتَعْلُونُوا شَهَادَةً عَلَى النَّاسِ وَيَكُونُ الرَّسُولُ عَلَيْهِ شَهِيدًا وَمَا جَعَلْنَا الْبَلَةَ الَّتِي

- 1 इस में यहूदियों तथा ईसाईयों के इस दावे का खण्डन किया गया है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम आदि नबी यहूदी अथवा ईसाई थे।
- 2 अर्थात् तुम्हारे पूर्वजों के सदाचारों से तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा, और न उन के पापों के विषय में तुम से प्रश्न किया जायेगा, अतः अपने कर्मों पर ध्यान दो।
- 3 नमाज़ में मुख करने की दिशा।
- 4 साक्षी होने का अर्थ जैसा कि हीस में आया है यह है कि प्रलय के दिन नूह अलैहिस्सलाम को बुलाया जायेगा और उन से प्रश्न किया जायेगा कि क्या तुम ने अपनी जाति को संदेश पहुँचाया? वह कहेंगे: हाँ। फिर उन की जाति से प्रश्न किया जायेगा, तो वह कहेंगे कि हमारे पास सावधान करने के लिये कोई नहीं

बनो, और रसूल तुम पर साक्षी हों, और हम ने वह किबला जिस पर तुम थे, इसी लिये बनाया था ताकि यह बात खोल दें कि कौन (अपने धर्म से) फिर जाता है। और यह बात बड़ी भारी थी, परन्तु उन के लिये नहीं जिन्हें अल्लाह ने मार्गदर्शन दे दिया है। और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हारे ईमान (अर्थात् बैतुल्मक्दिस की दिशा में नमाज़ पढ़ने) को व्यर्थ कर दे,^[1] वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये अत्यन्त करुणामय तथा दयावान् है।

144. (हे नबी!) हम आप के मुख को बार बार आकाश की ओर फिरते देख रहे हैं। तो हम अवश्य आप को उस किबले (काबा) की ओर फेर देंगे जिस से आप प्रसन्न हो जायें। तो (अब) अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर फेर लो^[2], तथा (हे मुसलमानो!) तुम भी जहाँ रहो उसी की ओर मुख किया करो। और निश्चय अहले किताब जानते हैं कि यह उन के पालनहार की ओर से

आया। तो अल्लाह तआला नूह अलैहिस्सलाम से कहेगा कि तुम्हारा साक्षी कौन है? वह कहेंगे: मुहम्मद सल्लाहु अलैहि व सल्लम और उन की उम्मत। फिर आप की उम्मत साक्ष्य देगी कि नूह ने अल्लाह का सन्देश पहुँचाया है। और आप सल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम पर अर्थात् मुसलमानों पर साक्षी होंगे। (सहीह बुखारी, 4486)

1 अर्थात् उस का फल प्रदान करेगा।

2 नबी सल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का से मदीना प्रस्थान करने के पश्चात् बैतुल्मक्दिस की ओर मुख कर के नमाज़ पढ़ते रहे। फिर आप को काबा की ओर मुख कर के नमाज़ पढ़ने का आदेश दिया गया।

كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَانْعَلَمَ مَنْ يَتَّبِعُ الرَّسُولَ مِنْ يَنْقُلِبُ
عَلَى عَقِيقَيْهِ وَإِنْ كَانَتْ لِكَبِيرَةً إِلَاعَلَمَ الَّذِينَ هَدَى
اللَّهُ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِيقَ إِلَيْهَا كُلُّ فَرَأَى اللَّهَ بِالْأَنْسِ
لَرْ وَفْ تَرَجِيْلُ

قَدْ نَرَى تَكَلَّبَ وَجْهَكَ فِي الشَّاءِ فَلَنُولِيكَ قَبْلَهُ
تَرْصَحَا قَوْلَ وَهُكَ شَطَرُ السُّبْحَانِ الْحَرَامِ وَحِيدُثُ مَا
كُنْتُمْ فِيْلُوا وَجُوْهَلُمْ شَطَرَهُ فَإِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
يَعْلَمُونَ أَنَّهُ أَحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ كُلَّا
يَعْلَمُونَ

सत्य है^[1], और अल्लाह उन के कर्मों से असूचित नहीं है।

145. और यदि आप अहले किताब के पास प्रत्येक प्रकार की निशानी ला दें तब भी वह आप के किब्ले का अनुसरण नहीं करेंगे। और न आप उन के किब्ले का अनुसरण करेंगे, और न उन में से कोई दूसरे के किब्ले का अनुसरण करेगा। और यदि ज्ञान आने के पश्चात् आप ने उन की अकांक्षाओं का अनुसरण किया तो आप अत्याचारियों में से हो जायेंगे।
146. और जिन्हें हम ने पुस्तक दी है वह आप को ऐसे ही^[2] पहचानते हैं जैसे अपने पुत्रों को पहचानते हैं। और उन का एक समुदाय जानते हुये भी सत्य को छूपा रहा है।
147. सत्य वही है जो आप के पालनहार की ओर से उतारा गया। अतः आप कदापि सन्देह करने वालों में न हों।
148. प्रत्येक के लिये एक दिशा है, जिस की ओर वह मुख कर रहा है। अतः तुम भलाईयों में अग्रसर बनो। तुम जहाँ भी रहोगे अल्लाह तुम सभी को (प्रलय के दिन) ले आयेगा। निश्चय अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

وَلَيْسَ أَيْمَنَ الدِّينِ أُوتُوا الْكِتَابُ كُلُّ أَيُّهُمَا يَتَعَمَّدُ
قِيلَّتَكُمْ وَمَا أَنْتَ بِإِلَيْهِ قِيلَّتُهُمْ وَمَا بَعْضُهُمْ يَتَعَمَّدُ
قِيلَّهُ بَعْضُهُمْ وَلَيْسَ أَيْمَنَ أَهْوَاءُهُمْ مِنْ بَعْدِمَا
جَاءُكُمْ مِنَ الْعُلُوِّ إِنَّكَ إِذَا أَئْتَ الظَّلَّمِيْنَ ۝

الَّذِينَ أَتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرُفُونَهُ كَمَا يَعْرُفُونَ أَبْنَاءَهُمْ
وَلَئِنْ فَرِيقًا مِنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تُكُونُنَّ مِنَ الْمُمْلَكِيْنَ ۝

وَلَكُلُّ وِجْهَةٌ هُوَ مُولِّهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ أَيْنُ مَا
تَكُونُوا يَا أَيُّتُكُمْ اللَّهُ جَبِيعَادَنَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ۝

1 क्योंकि अंतिम नबी के गुणों में उन की पुस्तकों में बताया गया है कि वह किब्ला बदल देंगे।

2 आप के उन गुणों के कारण जो उन की पुस्तकों में अंतिम नबी के विषय में वर्णित किये गये हैं।

149. और आप जहाँ भी निकलें अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर फेरें निःसन्देह यह आप के पालनहार की ओर से सत्य (आदेश) है, और अल्लाह तुम्हारे कर्मों से असूचित नहीं है।
150. और आप जहाँ से भी निकलें, अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर फेरें, और (हे मुसलमानो!) तुम जहाँ भी रहो अपने मुखों को उसी की ओर फेरो, ताकि उन को तुम्हारे विरुद्ध किसी विवाद का अवसर न मिले। मगर उन लोगों के अतिरिक्त जो अत्याचार करें अतः उन से न डरो। मुझी से डरो। और ताकि मैं तुम पर अपना पुरस्कार (धर्मविधान) पूरा कर दूँ और ताकि तुम सीधी डगर पा जाओ।
151. जिस प्रकार हम ने तुम्हारे लिये तुम्हीं में से एक रसूल भेजा जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाता तथा तुम को शुद्ध आज्ञाकारी बनाता है, और तुम्हें पुस्तक (कुर्�आन) तथा हिक्मत (सुचित) सिखाता है, तथा तुम्हें वह बातें सिखाता है जो तुम नहीं जानते थे।
152. अतः मुझे याद करो,^[1] मैं तुम्हें याद करूँगा।^[2] और मेरे आभारी रहो। और मेरे कृतघ्न न बनो।
153. हे ईमान वालो! धैर्य तथा नमाज का सहारा लो, निश्चय अल्लाह धैर्यवानों के साथ है।

1 अर्थात् मेरी आज्ञा का अनुपालन और मेरी अराधना करो।

2 अर्थात् अपनी क्षमा और पुरस्कार द्वारा।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ قَوْلَ وَهُكَ سَطْرُ الْمَسْجِدِ
الْعَرَافِ وَإِنَّ اللَّهَ عَنِ زَرِيكَ وَمَا اللَّهُ يَخَافُ كُلًا
تَعْلَمُونَ ۝

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ قَوْلَ وَهُكَ شَطْرُ الْمَسْجِدِ الْعَرَافِ
وَحِينَتُ تَأْكُلُنَّ قَوْلًا وَجُوْفَلُمْ شَطْرَةً إِنْلَالِيْكُونَ
لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ مُجَاهَدًا إِلَّا الَّذِينَ كَلَمْوَامِنْهُمْ فَلَا
عَنْتُوْهُمْ وَاحْتَشُوْنَ وَلَا يَعْمَقُ عَلَيْكُمْ وَلَعْلَمُ
تَهَدِّدُونَ ۝

كَمَا أَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِنْكُمْ يَنْذُوْعُ عَلَيْكُمْ إِنْتَنَا
وَيَزْكُرُكُمْ وَيَعْلَمُكُمُ الْكَبِيرُ وَالْحَكِيمُ وَيَعْلَمُكُمُ الْأَعْلَمُ
تَعْلَمُونَ ۝

فَادْكُرُونِي أَدْكُرْنَاهُ وَأَشْكُرُوا إِلَيَّ وَلَا تَكْفُرُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِنُو بِالصَّيْرِ وَالصَّلْوَةِ إِنَّ اللَّهَ
مَعَ الصَّيْرِ ۝

154. तथा जो अल्लाह की राह में मारे जायें उन्हें मुर्दा न कहो, बल्कि वह जीवित है, परन्तु तुम (उन के जीवन की दशा) नहीं समझते।
155. तथा हम अवश्य कुछ भय, भूक तथा धनों और प्राणों तथा खाद्य पदार्थों की कमी से तुम्हारी परीक्षा करेंगे, और धैर्यवानों को शुभ समाचार सुना दो।
156. जिन पर कोई आपदा आ पड़े तो कहते हैं कि हम अल्लाह के हैं, और हमें उसी के पास फिर कर जाना है।
157. इन्हीं पर उन के पालनहार की कृपायें तथा दया हैं, और यही सीधी राह पाने वाले हैं।
158. बेशक सफा तथा मरवा पहाड़ी^[1] अल्लाह (के धर्म) की निशानियों में से हैं। अतः जो अल्लाह के घर का हज्ज या उमरह करे तो उस पर कोई दोष नहीं कि उन दोनों का फेरा लगाये। और जो स्वेच्छा से भलाई करे, तो निःन्देह अल्लाह उस का गुणग्राही अति ज्ञानी है।
159. तथा जो हमारी उतारी हुई आयतों (अन्तिम नबी के गुणों) तथा मार्गदर्शन को इस के पश्चात् कि:

¹ यह दो पर्वत हैं जो काबा की पूर्वी दिशा में स्थित हैं। जिन के बीच सात फेरे लगाना हज्ज तथा उमरे का अनिवार्य कर्म है। जिस का आरंभ सफा पर्वत से करना सुन्नत है।

وَلَا تَنْهُوا إِمَّا مَنْ يُشَدُّ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمَّا مَنْ بَلَى
أَحْيَاهُ وَلِكُنْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٩﴾

وَلَكَبِرُوكُلُّ شَيْءٍ مِّنَ الْحُنُوفِ وَالْجُوعِ وَنَفْسٍ مِّنَ
الْأَمْوَالِ وَالْأَنْثُرِ وَالشَّرَبِ وَيَتَرَ الضَّرِيرُونَ ﴿١٠﴾

الَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمْ مُّصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا
إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴿١١﴾

أُولَئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ قَنْ نَعِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولَئِكَ هُمُ
الْمُهَمَّدُونَ ﴿١٢﴾

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَاعِ اللَّهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ
أَوْ أَعْتَصَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَظْفَرَ بِهِمَا وَمَنْ
تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلَيْهِمْ ﴿١٣﴾

إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبُيُوتِ وَالْمُدَارِ
مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنَهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ أُولَئِكَ

हम ने पुस्तक^[1] में उसे लोगों के लिये उजागर कर दिया है, छुपाते हैं उन्हीं को अल्लाह धिक्कारता है^[2], तथा सब धिक्कारने वाले धिक्कारते हैं।

160. और जिन लोगों ने तौबा (क्षमा याचना) कर ली, और सुधार कर लिया, और उजागर कर दिया, तो मैं उन की तौबा स्वीकार कर लूँगा, तथा मैं अत्यन्त क्षमाशील दयावान् हूँ।
161. वास्तव में जो काफिर (अविश्वासी) हो गये, और इसी दशा में मरे तो वही हैं जिन पर अल्लाह तथा फरिश्तों और सब लोगों की धिक्कार है।
162. वह इस (धिक्कार) में सदावासी होंगे, उन से यातना मंद नहीं की जायेगी, और न उन को अवकाश दिया जायेगा।
163. और तुम्हारा पूज्य एक ही^[3] पूज्य है, उस अत्यन्त दयालु, दयावान के सिवा कोई पूज्य नहीं।
164. बैशक आकाशों तथा धरती की रचना में, रात तथा दिन के एक दूसरे के पीछे निरन्तर आने जाने में, उन नावों में जो मानव के लाभ के साधनों को लिये सागरों में चलती फिरती हैं, और वर्षा के उस पानी में जिसे अल्लाह आकाश से बरसाता

يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ الظَّعُونَ ﴿٩﴾

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُوا فَأُولَئِكَ أُتُوبُ عَلَيْهِمْ وَآمَدُ الْتَّوَابُ الرَّحِيمُ

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَا تُؤْمِنُوا هُمْ لَذَّارٌ أُولَئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَهُ اللَّهُ وَالْمُنْكَرُ وَالثَّالِثُ اجْمَعُونَ

خَلِيلِيْنَ فِيهَا لَا يُغَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿١٠﴾

وَالْهُكْمُ لِلَّهِ وَإِلَّا إِلَهٌ لِلَّهُ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَآخْتِلَافِ الْأَيْمَلِ وَالْأَهْمَالِ وَالْفَلَكِ أَيُّ أَنْجِرُ فِي الْعُجُورِ مَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَا هُوَ فَاحِيَّا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَعْدَ فَهْمَا مِنْ مُنْفِنِ دَائِبِهِ وَتَصْرِيْفِ الرَّيْبِ وَالشَّحَابِ الْمُسْخَرِيْنَ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ لَا يَتَّلَقُهُمْ يَعْقِلُونَ ﴿١١﴾

1 अर्थात् तौरात, इंजील आदि पुस्तकों में।

2 अल्लाह के धिक्कारने का अर्थ अपनी दया से दूर करना है।

3 अर्थात् जो अपने स्तित्व तथा नामों और गुणों तथा कर्मों में अकेला है।

है, फिर धरती को उस के द्वारा उस के मरण (सुखने) के पश्चात् जीवित करता है, और उस में प्रत्येक जीवों को फैलाता है, तथा वायुओं को फेरने में, और उन बादलों में जो आकाश और धरती के बीच उस की आज्ञा^[1] के अधीन रहते हैं, (इन सब चीजों में) अगणित निशानियाँ (लक्षण) हैं, उन लोगों के लिये जो समझ बूझ रखते हैं।

165. कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उस का साझी बनाते हैं, और उन से, अल्लाह से प्रेम करने जैसा प्रेम करते हैं, तथा जो ईमान लाये वह अल्लाह से सर्वाधिक प्रेम करते हैं, और क्या ही अच्छा होता यदि यह अत्याचारी यातना देखने के समय^[2] जो बात जानेंगे इसी समय^[3] जानते कि सब शक्ति तथा अधिकार अल्लाह ही को हैं। और अल्लाह का दण्ड भी बहुत कड़ा है (तो अल्लाह के सिवा दूसरे की पूजा अराधना नहीं करते।)
166. जब यह दशा^[4] होगी कि जिस का अनुसरण किया गया^[5] वह

وَمِنَ الْكَايِسِ مَنْ يَكْنِدُ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ أَنْدَادًا
يُجْزَوُهُمْ كُلُّهُمْ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنَّهُمْ جُنَاحُ اللَّهِ وَأَنَّ
يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا أَرَدُّ يَرْؤُونَ الْعَذَابَ أَنَّ الْفُتوَّةَ
إِلَهٌ جَمِيعٌ إِنَّ اللَّهَ شَرِيكٌ لِّلْعَذَابِ

إِذْ تَبَرُّ الَّذِينَ أَتَبْغُوا مِنَ الَّذِينَ أَتَبْغُوا وَرَأَوْا

1 अर्थात् इस विश्व की पूरी व्यवस्था इस बात का तर्क और प्रमाण है कि इस का व्यवस्थापक अल्लाह ही एकमात्र पञ्च तथा अपने गुण कर्मों में एकता है। अतः पूजा अर्चना भी उसी एक की होनी चाहिये। यही समझ बूझ का निर्णय है।

2 अर्थात् प्रलय के दिन।

3 अर्थात् संसार ही में।

4 अर्थात् प्रलय के दिन।

5 अर्थात् संसार में जिन प्रमुखों का अनुसरण किया गया।

अपने अनुयायियों से विरक्त हो जायेंगे, और उन के आपस के सभी सम्बन्ध^[1] टूट जायेंगे।

167. तथा जो अनुयायी होंगे, वह यह कामना करेंगे कि एक बार और हम संसार में जाते, तो इन से ऐसे ही विरक्त हो जाते जैसे यह हम से विरक्त हो गये। ऐसे ही अल्लाह उन के कर्मों को उन के लिये संताप बना कर दिखाएगा, और वह अग्नि से निकल नहीं सकेंगे।
168. हे लोगो! धरती में जो अनुसरण किया गया हलाल (वैध) स्वच्छ चीज़ें हैं उन्हें खाओ। और शैतान की बताई राहों पर न चलो^[2], वह तुम्हारा खुला शत्रु है।
169. वह तुम को बुराई तथा निर्लज्जा का आदेश देता है, और यह कि अल्लाह पर उस चीज़ का आरोप^[3] धरो, जिसे तुम नहीं जानते हो।
170. और जब उन^[4] से कहा जाता है कि जो (कुर्�आन) अल्लाह ने उतारा है, उस पर चलो, तो कहते हैं कि हम तो उसी रीति पर चलेंगे जिस पर अपने पूर्वजों को पाया है क्या यदि उन के पूर्वज कुछ न समझते रहे, तथा कुपथ पर रहे हों (तब भी वह

الْعَذَابَ وَنَقَطَعَتْ بِهِمُ الْكُلُّ^٥

وَقَالَ الَّذِينَ اجْتَمَعُوا أَنَّ لَدُنَّا كُلُّهُ فَنَتَذَبَّرَ مِنْهُمْ
كُلَّهُاتِيَّةٌ وَأَمْنَاءٌ كُلُّهُ لِكُلِّ يُنْهِمُ اللَّهُ أَعْلَمُ الْهُدُوْرُ
حَرَرَتِ عَلَيْهِمْ وَنَاهُمْ بِخَرْجِنَّ مِنَ الظَّارِفِ^٦

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِذْ كُلُّوا مِنَ الْأَرْضِ حَلَالًا طَهِيْرًا فَلَا
تَتَبَعُوا خُطُوْتَ الشَّيْطَنِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ^٧

إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالسُّوْءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَنْ تَقُولُوْا عَلَى
اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ^٨

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَئِ يَعْلَمُونَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ كَلُوبَكُلُّ أَبْلَى
نَتِيْجَهُ مَا أَفْنَيْنَا عَلَيْهِ أَبْلَى نَاهَى أَوْلَوْ كَانَ أَبْلَى ذُهْنُ
لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ^٩

1 अर्थात् सामीप्य, अनुसरण तथा धर्म आदि के।

2 अर्थात् उस की बताई बातों को न मानो।

3 अर्थात् वैध को अवैध करने आदि का।

4 अर्थात् अहले किताब तथा मिश्रणवादियों से।

उन्हीं का अनुसरण करते रहेंगे?)

171. उन की दशा जो काफिर हो गये उस के समान है जो उस (पशु) को पुकारता है, जो हाँक पुकार के सिवा कुछ^[1] नहीं सुनता, यह (काफिर) बहरे, गूंगे तथा अँधे हैं। इस लिए कुछ नहीं समझते।
172. हे ईमान वालो! उन स्वच्छ चीजों में से खाओ जो हम ने तुम्हें दी हैं। तथा अल्लाह की कृतज्ञता का वर्णन करो। यदि तुम केवल उसी की इबादत (वंदना) करते हो।
173. (अल्लाह) ने तुम पर मुर्दार^[2] तथा (बहता) रक्त और सुअर का माँस, तथा जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया हो उन को हराम (निषेध) कर दिया है। फिर भी जो विवश हो जाये जब कि वह नियम न तोड़ रहा हो, और आवश्यकता की सीमा का उल्लंघन न कर रहा हो तो उस पर कोइ दोष नहीं। अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।^[3]
174. वास्तव में जो लोग अल्लाह की उतारी पुस्तक (की बातों) को छुपा

وَمَثْلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمَثْلُ الَّذِينَ يَنْعِيشُ بِهَا لَا
يَسْمَعُ الْأَدْعَاءُ وَنَدَاءُهُ صُمْبُكٌ لَّمْ يُفْهَمْ
لَا يَعْقِلُونَ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذْ أُمْلِأُوا مَآرِضَهُمْ فَلَمْ
وَاسْكُرُوا إِلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ إِيمَانُكُمْ رَّابِعًا
وَتَعْبُدُونَ

إِنَّا حَرَمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْجِنُودِ وَمَا
أُهْلَكَ بِهِ لَعَلَّ إِنَّهُمْ قَوْمٌ أَصْطَرَهُمُ اللَّهُ بِغَيْرِ
وَلَا عَادُ فَلَا
إِنَّمَا عَلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ عَفُوفٌ بِرَبِيعِهِ

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ الْكِتَابِ وَ

1 अर्थात् ध्वनि सुनता है परन्तु बात का अर्थ नहीं समझता।

2 जिसे धर्म विधान के अनुसार बध न किया गया हो, अधिक विवरण सूरह माइदह में आ रहा है।

3 अर्थात् ऐसा विवश व्यक्ति जो हलाल जीविका न पा सके उस के लिये निषेध नहीं कि वह अपनी आवश्यकतानुसार हराम चीजें खा ले। परन्तु उस पर अनिवार्य है कि वह उस की सीमा का उल्लंघन न करे और जहाँ उसे हलाल जीविका मिल जाये वहाँ हराम खाने से रुक जाये।

रहे हैं, और उस के बदले तनिक मूल्य प्राप्त कर लेते हैं, वही अपने उदर में केवल अग्नि भर रहे हैं। तथा अल्लाह उन से बात नहीं करेगा, और न उन को विशुद्ध करेगा। और उन्हीं के लिये दुखदायी यातना है।

175. यही वह लोग हैं जिन्होंने सुपथ (मार्गदर्शन) के बदले कुपथ ख़रीद लिया है। तथा क्षमा के बदले यातना। तो नरक की अग्नि पर वह कितने सहनशील हैं।

176. इस यातना के अधिकारी वह इस लिये हुये कि अल्लाह ने पुस्तक को सत्य के साथ उतारा। और जो पुस्तक में विभेद कर बैठे। वह वास्तव में विरोध में बहुत दूर निकल गये।

177. भलाई यह नहीं है कि तुम अपने मुख को पूर्व अथवा पश्चिम की ओर फेर लो। भला कर्म तो उस का है। जो अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान लाया। तथा फ़रिश्तों और सब पुस्तकों तथा नवियों पर, तथा धन का मोह रखते हुये, समीपवर्तियों, अनाथों, निर्धनों, यात्रियों तथा याचकों (फ़कीरों) को और दास मुकित के लिये दिया, और नमाज की स्थापना की, तथा ज़कात दी, और अपने वचन को, जब भी वचन दिया, पूरा करते रहे। और निर्धनता और रोग तथा युद्ध की

يَشْرُونَ بِهِ شَنَاقَيْلًا أَوْ لِكَ مَا يَا كُلُونَ فِي
بُطُونِهِمْ إِلَّا كَارَ وَلَا يَكُلُّهُمْ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَلَا
يُرَكِّعُهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

أَوْ لِكَ الَّذِينَ اسْتَرُوا الصَّلَةَ يَالْهُدَى
وَالْعَذَابَ يَالْمُغْفِرَةِ فَهَا أَصْبَرُهُمْ عَلَى النَّارِ

ذَلِكَ يَأْنَ اللَّهَ نَزَّلَ الْكِتَبَ يَالْعِقْنَ وَلَئِن
الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِي الْكِتَبِ لَفِي شَقَائِقِ بَعْيَدٍ

لَيْسَ الْبَرَانْ تُولُونَ وَجُوهُهُمْ قَبْلَ الْمُشْرِقِ
وَالْمُغْرِبِ وَلَكِنَ الْبَرَانْ أَمَنَ يَا لِلَّهُ وَإِلَيْهِ
الْأَخْرَوْ وَالْمُلْكُ وَالْكِتَبِ وَالثَّقَيْنِ وَأَنَّ الْمَالَ
عَلَى حُكْمِهِ ذُوِي الْقُرْبَى وَالْمُتَّمَى وَالْمَسْكِينُونَ
وَابْنُ السَّيِّدِ وَالسَّاَكِلِينَ وَفِي الرِّزْقَابِ
وَأَقْامَ الْحُصُلَةَ وَأَنَّ الرِّزْكَوَةَ وَالْمُؤْفَونَ يَعْهُدُونَ
إِذَا الْمَهْدُو وَالظَّرِيرُونَ فِي الْبَاسَاءِ
وَالضَّرَاءِ وَجِئَنَ الْبَارِيُونَ أَوْ لِكَ الَّذِينَ
صَدَقُوا وَأَوْلَيْكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ

स्थिति में धैर्यवान् रहे। यही लोग
सच्चे हैं, तथा यही (अल्लाह से)
डरते^[1] हैं।

178. हे ईमान वालो! तुम पर निहत
व्यक्तियों के बारे में किसास
(बराबरी का बदला) अनिवार्य^[2] कर
दिया गया है। स्वतंत्र का बदला
स्वतंत्र से लिया जायेगा, तथा दास
का दास से, और नारी का नारी
से, और जिस अपराधी के लिये उस
के भाई की ओर से कुछ क्षमा कर^[3]
दिया जाये, तो उसे सामान्य नियम
का अनुसरण (अनुपालन) करना
चाहिये। निहत व्यक्ति के वारिस को
भलाई के साथ दियत (अर्थदण्ड)
चुका देना चाहिये। यह तुम्हारे
पालनहार की ओर से सुविधा तथा

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْفُضْلَاتُ فِي
الْقَتْلَةِ إِنَّ الْحُرُثَ يَعْتَزِزُ بِالْعُتْرَ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْأَنْثَى
يَا إِنَّمَا مَنْ عُقِّلَ لَهُ مِنْ أَخْيُوهُ شَيْءٌ فَإِنَّمَا
بِالْمَعْرُوفِ وَإِذَا لَئِنْهُ يَرْجِسُ إِنْذِلَكَ تَغْيِيرٌ مِنْ
رِّتْكِكُمْ وَرَحْمَةٌ فَمَنْ أَعْتَدَ لَيْكَ بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ
أَلِيمٌ

1 इस आयत का भावार्थ यह है कि नमाज़ में किब्ले की ओर मुख करना अनिवार्य है, फिर भी सत्धर्म इतना ही नहीं कि धर्म की किसी एक बात को अपना लिया जाये। सत्धर्म तो सत्य आस्था, सत्कर्म और पूरे जीवन को अल्लाह की आज्ञा के अधीन कर देने का नाम है।

2 अर्थात् यह नहीं हो सकता कि निहत की प्रधानता अथवा उच्च वंश का होने के कारण कई व्यक्ति मार दिये जायें, जैसा कि इस्लाम से पूर्व जाहिलियत की रीति थी कि एक के बदले कई को ही नहीं, यदि निर्बल कबीला हो तो, पूरे कबीले ही को मार दिया जाता था। इस्लाम ने यह नियम बना दिया कि स्वतंत्र तथा दास और नर नारी सब मानवता में बराबर हैं। अतः बदले में केवल उसी को मारा जाये जो अपराधी है। वह स्वतंत्र हो या दास, नर हो या नारी। (संक्षिप्त, इब्ने कसीर)

3 क्षमा दो प्रकार से हो सकता है: एक तो यह कि निहत के लोग अपराधी को क्षमा कर दें। दूसरा यह कि किसास को क्षमा कर के दियत (अर्थदण्ड) लेना स्वीकार कर लें। इसी स्थिति में कहा गया है कि नियमानुसार दियत (अर्थदण्ड) चुका दे।

दया है इस पर भी जो अत्याचार^[1]
करे तो उस के लिये दुखदायी
यातना है।

179. और हे समझ वालो! तुम्हारे लिये
किसास (के नियम में) जीवन है,
ताकि तुम रक्तपात से बचो।^[2]
180. और जब तुम में से किसी के निधन
का समय हो, और वह धन छोड़
रहा हो तो उस पर माता पिता
और समीपवर्तियों के लिये साधारण
नियमानुसार वसिय्यत (उत्तरदान)
करना अनिवार्य कर दिया गया
है। यह आज्ञाकारियों के लिये
सुनिश्चित^[3] है।
181. फिर जिस ने वसिय्यत सुनने के
पश्चात् उसे बदल दिया तो उस का
पाप उन पर है जो उसे बदलेंगे। और
अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।

وَلَكُمْ فِي الْقَصَاصِ حِيلَةٌ إِذَا أَنْتُمْ لَعَلَّكُمْ
تَتَّمَقُونَ^[4]

لَيْلَبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدًا لِمَوْتٍ إِنْ تَرَكُوهُ
إِلَيْهِ يَوْمَ الْدِينِ وَالْأَقْرَبُونَ بِالْمَعْرُوفِ حَسْنًا
عَلَى النَّاسِ^[5]

فَمَنْ بَدَّلَهُ بَعْدَ مَا مَسَّهُ فَإِنَّمَا أَنْهَا عَنِ
الَّذِينَ يُبَيِّنُ لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلَيْهِ^[6]

1 अर्थात् क्षमा कर देने या दियत लेने के पश्चात् भी अपराधी को मार डाले तो
उसे किसास में हत किया जायेगा।

2 क्योंकि इस नियम के कारण कोई किसी को हत करने का साहस नहीं करेगा।
इस लिये इस के कारण समाज शान्तिमय हो जायेगा। अर्थात् एक किसास से
लोगों के जीवन की रक्षा होगी। जैसा कि उन देशों में जहाँ किसास का नियम
है देखा जा सकता है। कुर्�আন इসी ओर संकेत करते हुये कहता है कि किसास
नियम के अन्दर बास्तव में जीवन है।

3 यह वसिय्यत (मीरास) की आयत उत्तरने से पहले अनिवार्य थी, जिसे (मीरास)
की आयत से निरस्त कर दिया गया। आप सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम का कथन
है कि अल्लाह ने प्रत्येक अधिकारी को उस का अधिकार दे दिया है, अतः अब
वारिस के लिये कोई वसिय्यत नहीं है। फिर जो वारिस न हो तो उसे भी तिहाई
धन से अधिक की वसिय्यत उचित नहीं है। (सहीह बुखारी-4577, सुनन अबू
दावूद-2870, इब्ने माजा-2210)

182. फिर जिसे डर हो कि वसिय्यत करने वाले ने पक्षपात या अत्याचार किया है, फिर उस ने उन के बीच सुधार करा दिया तो उस पर कोई पाप नहीं। निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील तथा दयावान् है।

183. हे ईमान वालो! तुम पर रोज़े^[1] उसी प्रकार अनिवार्य कर दिये गये हैं, जैसे तुम से पूर्व लोगों पर अनिवार्य किये गये, ताकि तुम अल्लाह से डरो।

184. वह गिनती के कुछ दिन हैं। फिर यदि तुम में से कोई रोगी, अथवा यात्रा पर हो तो यह गिनती दूसरे दिनों से पूरी करो। और जो उस (रोज़े) की सहन न कर सके^[2] वह फिद्या (प्रायश्चित) दे। जो एक निर्धन को खाना खिलाना है। और जो स्वेच्छा भलाई करे वह उस के लिये अच्छी बात है। और यदि तुम समझो तो तुम्हारे लिये रोज़ा रखना ही अच्छा है।

185. रमज़ान का महीना वह है, जिस में कुर्�आन उतारा गया, जो सब मानव के लिये मार्गदर्शन है। तथा मार्गदर्शन और सत्योसत्य के बीच

فَهُنَّ خَانَ مِنْ مُؤْمِنِينَ جَنَّفَا أَوْ اتَّهَا فَأَصْلَحَهُمْ فَلَذِكْرِ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ حَمِيمٌ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتُبَ عَلَيْكُمُ الظِّيَامُ كَمَا كُتُبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَذَكَّرُونَ

إِنَّمَا مَعَدُودٌ مَا فِي الْأَرْضِ وَمَا عَلَى السَّمَاءِ فِي عَدَدٍ مِنْ أَيَّامٍ أُخْرَى وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَهُ فِي دِيَّةٍ طَعَامٌ مُسْكِنٌ لَمَنْ تَطَوعَ حِيرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ وَأَنْ تَصُومُوا خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِنَ الْهُدَى وَالْفُرْقَانِ فَمَنْ شَهَدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلِيصُمُّهُ وَمَنْ كَانَ مُرْيِضاً

1 रोज़े को अर्बी भाषा मैं "सौम" कहा जाता है, जिस का अर्थ: रुकना तथा त्याग देना है। इस्लाम में रोज़ा सन् दो हिजरी में अनिवार्य किया गया। जिस का अर्थ है प्रत्युष (भोर) से सूर्यास्त तक रोज़े की नीति से खाने पीने तथा संभोग आदि चीज़ों से रुक जाना।

2 अर्थात् अधिक बुढ़ापे अथवा ऐसे रोग के कारण जिस से आरोग्य होने की आशा न हो तो प्रत्येक रोज़े के बदले एक निर्धन को खाना खिला दिया करें।

अन्तर करने के खुले प्रमाण रखता है। अतः जो व्यक्ति इस महीने में उपस्थित^[1] हो तो वह उस का रोज़ा रखे, फिर यदि तुम में से कोई रोगी^[2] अथवा यात्रा^[3] पर हो, तो उसे दसरे दिनों से गिनती पूरी करनी चाहिये। अल्लाह तुम्हारे लिये सुविधा चाहता है, तंगी (असुविधा) नहीं चाहता। और चाहता है कि तुम गिनती पूरी करो, तथा इस बात पर अल्लाह की महिमा का वर्णन करो कि उस ने तुम्हें मार्गदर्शन दिया, इस प्रकार तुम उस के कृतज्ञ^[4] बन सको।

186. (हे नबी!) जब मेरे भक्त मेरे विषय में आप से प्रश्न करें, तो उन्हें बता दें कि निश्चय मैं समीप हूँ। मैं प्रार्थी की प्रार्थना का उत्तर देता हूँ। अतः उन्हें भी चाहिये कि मेरे आज्ञाकारी बनें, तथा मुझ पर ईमान (विश्वास) रखें, ताकि वह सीधी राह पायें।

187. तुम्हारे लिये रोज़े की रात में अपनी स्त्रियों से सहवास हलाल (उचित) कर दिया गया है। वह तुम्हारा वस्त्र^[5] है, तथा तुम उन का वस्त्र हो। अल्लाह को ज्ञान हो गया कि

أَوْلَى سَفِيرَ قَعْدَةً مِنْ أَيَّامِ الْحُجَّةِ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْبَرَّ وَلَا يُرِيدُ لَكُمُ الْعُسْرَ وَلَئِنْ كُلُّ الْعُدَّةِ لَأَدَمَ لَعْنَتُ اللَّهِ عَلَى مَا هَدَكُمْ وَلَعْنَتُ شَكَرُونَ ٨

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّيْ قَاتِلَ قَرِيبَ الْجُنُبِ
دَعْوَةُ الدَّاعِ إِذَا دَعَ عَنْ فَلَيْسَ حِبْوَانٌ وَلَيْوَمُوا
نِ لَعْنَهُمْ تَرْسُدُونَ ٩

أَحَلَّ لَكُمْ لِيلَةَ الْقِيَامِ الرَّفْثُ إِنْ
يَسِّأْكُمْ هُنَّ لِيَاسٌ لَكُمْ وَأَنْتُمْ لِيَاسٌ
لَهُنَّ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ لَكُنُّمْ حَتَّاَنُونَ أَنْفَسُكُمْ
قَتَابٌ عَلَيْكُمْ وَعَفَاعَتْكُمْ فَإِنَّمَا يَأْشِرُونَ هُنَّ

1 अर्थात् अपने नगर में उपस्थित हो।

2 अर्थात् रोग के कारण रोज़े न रख सकता हो।

3 अर्थात् इतनी दूर की यात्रा पर हो जिस में रोज़ा न रखने की अनुमति हो।

4 इस आयत में रोज़े की दशा तथा गिनती पूरी करने पर प्रार्थना करने की प्रेरणा दी गयी है।

5 इस से पति पत्नी के जीवन साथी, तथा एक की दूसरे के लिये आवश्यकता को दर्शाया गया है।

तुम अपना उपभोग^[1] कर रहे थे।
 उस ने तुम्हारी तौबा (क्षमा याचना)
 स्वीकार कर ली, तथा तुम्हें क्षमा
 कर दिया। अब उन से (रात्रि में)
 सहवास करो, और अल्लाह के (अपने
 भाग्य में) लिखे की खोज करो,
 और (रात्रि में) खाओ तथा पीओ,
 यहाँ तक कि भोर की सफेद धारी,
 रात की काली धारी से उजागर हो^[2]
 जाये फिर रोज़े को रात्रि (सुर्यास्त)
 तक पूरा करो, और उन से सहवास
 न करौ, जब मस्जिदों में ऐतिकाफ़
 (एकान्तवास) में रहो। यह अल्लाह
 की सीमायें हैं, इन के समीप भी
 न जाओ। इसी प्रकार अल्लाह लोगों
 के लिये अपनी आयतों को उजागर
 करता है, ताकि वह (उन के
 उल्लंघन) से बचें।

188. तथा आपस में एक दूसरे का धन
 अवैध रूप से न खाओ, और न
 अधिकारियों के पास उसे इस धेय से
 ले जाओ कि लोगों के धन का कोई
 भाग जान बूझ कर पाप^[3] द्वारा खा
 जाओ।

189. (हे नबी!) लोग आप से चन्द्रमा के
 (घटने बढ़ने) के विषय में प्रश्न

1 अर्थात् पत्नी से सहवास कर रहे थे।

2 इस्लाम के आरंभिक युग में रात्रि में सो जाने के पश्चात् रमज़ान में खाने पीने
 तथा स्त्री से सहवास की अनुमति नहीं थी। इस आयत में इन सब की अनुमति
 दी गयी है।

3 इस आयत में यह संकेत है कि यदि कोई व्यक्ति दूसरों के स्वत्व और धन से तथा
 अवैध धन उपार्जन से स्वयं को रोक न सकता हो इबादत का कोई लाभ नहीं।

وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تُوَاشِبُوا حَلْلَتِي
 يَتَبَيَّنَ لِكُمُ الْخَيْطُ الْأَيْمَنُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ
 مِنَ الْفَجْرِ تَحْرِيزُهُ أَتَتْهُ الْقِيَامَ إِلَى الظَّلَلِ
 وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ وَأَنْتُمْ عَكُونُونَ فِي الْمَسْجِدِ
 تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَنْقِرُوهُنَّ كَذَلِكَ
 يُبَيِّنُ اللَّهُ أَيْمَنَهُ لِلثَّالِثِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَعَّلُونَ

وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْتَكُمْ بِالْبَاطِلِ
 وَتَنْذُلُوا إِلَيْهَا إِلَى الْحُكَمِ إِلَيْكُمْ قُرْبًا
 مِنْ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْوَرِ وَأَنْتُمْ
 تَعْلَمُونَ

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَهْلَةِ قُلْ هُنَّ مَوَاقِعُ

करते हैं। कह दें: इस से लोगों को तिथियों के निर्धारण तथा हज्ज के समय का ज्ञान होता है। और यह कोई भलाई नहीं है कि घरों में उन के पीछे से प्रवेश करो, परन्तु भलाई तो अल्लाह की अवैज्ञा से बचना है। और घरों में उन के द्वारों से आओ, तथा अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम^[1] सफल हो जाओ।

190. तथा तुम अल्लाह की राह में, उन से युद्ध करो जो तुम से युद्ध करते हों। और अत्याचार न करो, अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।
191. और उन को हत करो, जहाँ पाओ, और उन्हें निकालो, जहाँ से उन्होंने तुम को निकाला है, इस लिये कि फ़ितना^[2] (उपद्रव) हत करने से भी बुरा है। और उन से मस्जिदे हराम के पास युद्ध न करो, जब तक वह तुम से वहाँ युद्ध न^[3] करें परन्तु यदि वह तुम से युद्ध करें तो उन की हत्या करो, यही काफ़िरों का बदला है।
192. फिर यदि वह (आक्रमण करने से) रुक जायें तो अल्लाह अति क्षमी, दयावान् है।

لِلْمُتَّائِسِ وَالْعَجِيجِ وَلَيْسَ الْبِرُّ يَأْتُوا
الْبَيْوَاتَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَكِنَّ الْبَرَّ مَنْ
إِشْقَى وَأَنْوَاعُ الْبَيْوَاتَ مِنْ أَبْوَابِهَا
وَأَنْقُوا اللَّهَ لَعْنَكُمْ تَقْتُلُهُونَ ④

وَقَاتُلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ نِسْكِ
يُقَاتُلُونَكُمْ وَلَا تَعْدُوا إِنَّ اللَّهَ
لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ④

وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ تَفْقِهُمْ وَآخِرُ جُوْهُمْ مِنْ
حَيْثُ أَخْرَجُوكُمْ وَالْفِتْنَةُ أَسْدُ مِنَ الْقَعْدِ
وَلَا تُقْبِلُوهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّى
يُقْتَلُوكُمْ فِيهَا إِنْ قَاتَلُوكُمْ
فَاقْتُلُوهُمْ مَكَذِيلَكَ جَرَاءُ الْكُفَّارِينَ ④

إِنْ اتَّهَمُوا إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ④

1 इस्लाम से पूर्व अरब में यह प्रथा थी कि जब हज्ज का एहराम बांध लेते तो अपने घरों में द्वार से प्रवेश न कर के पीछे से प्रवेश करते थे। इस अंधविश्वास के खण्डन के लिये यह आयत उत्तरी कि भलाई इन रीतियों में नहीं बल्कि अल्लाह से डरने और उस के आदेशों के उल्लंघन से बचने में है।

2 अर्थात् अधर्म, मिश्रणवाद और सत्थर्म इस्लाम से रोकना।

3 अर्थात् स्वयं युद्ध का आरंभ न करो।

193. तथा उन से युद्ध करो, यहाँ तक कि फितना न रह जाये, और धर्म केवल अल्लाह के लिये रह जाये, फिर यदि वह रुक जायें, तो अत्याचारियों के अतिरिक्त किसी और पर अत्याचार नहीं करना चाहिये।

194. सम्मानित^[1] मास, सम्मानित मास के बदले हैं। और सम्मानित विषयों में बराबरी है, अतः जो तुम पर अतिक्रमण (अत्याचार) करें तो तुम भी उन पर उसी के समान (अतिक्रमण) करो। तथा अल्लाह के आज्ञाकारी रहो, और जान लो कि अल्लाह आज्ञाकारियों के साथ है।

195. तथा अल्लाह की राह (जिहाद) में धन खर्च करो, और अपने आप को विनाश में न डालो, तथा उपकार करो, निश्चय अल्लाह उपकारियों से प्रेम करता है।

196. तथा हज्ज और उमरा अल्लाह के लिये पूरा करो, और यदि रोक दिये जाओ^[2] तो जो कुर्बानी सुलभ हो (कर दो), और अपने सिर न मुँडाओ, जब तक कि कुर्बानी अपने स्थान पर न पहुँच^[3] जाये, यदि तुम

وَقَاتُلُوهُمْ حَتَّى لَا يُكُونُ فِتْنَةً وَيُكْلُونَ
الَّذِينُ يَلْهُو قَلْبَهُمْ فَإِلَّا عُذْوَانَ إِلَّا
عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿٤﴾

أَشْهُرُ الْحَرَامُ يَالشَّهْرُ الْحَرَامُ وَالْحُرُمُ
يَصَاحُبُهُمْ قَمِّ إِعْتَدَى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُ وَاعْيَهُ
بِمِثْلِ مَا عَتَدَى عَلَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ
وَاعْلَمُو أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿٥﴾

وَأَنْفَقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَنْدِينِكُمْ إِلَى
الْتَّهْلِكَهُ وَأَحْسِنُوا إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿٦﴾

وَاتَّهُوا الْحَجَّةَ وَالْعُمَرَةَ إِلَهُ فَإِنْ أُخْرِجُوكُمْ فَمَا
أَسْيَسْرَمْنَ الْهَدَى وَلَا يَعْلَمُو ارْوَاهُ وَسَكُمْ حَتَّى
يَبْلُغُ الْهَدَى مَحْلَهُ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ فَرِيَضَاهُ أَوْ يَهُ
أَذْى مِنْ رَأْسِهِ فَقَنْدِيهُ مِنْ صِيَامَ أَوْ صَدَقَهُ
أَوْ نُسُكٍ فَإِذَا أَمْنَتُمْ فَمَنْ تَمَّعَرَ بِالْعُمَرَةِ إِلَى

1 सम्मानित मासों से अभिप्रेत चार अर्बी महीने: जुलादह, जुलहिज्जह, मुहर्रम तथा रजब हैं। इब्राहीम अलैहिस्सलाम के युग से इन मासों का आदर सम्मान होता आ रहा है। आयत का अर्थ यह है कि कोई सम्मानित स्थान अथवा युग में अतिक्रमण करे तो उसे बराबरी का बदला दिया जाये।

2 अर्थात् शत्रु अथवा रोग के कारण।

3 अर्थात् कुरबानी न कर लो।

में कोई व्यक्ति रोगी हो, या उस के सिर में कोई पीड़ा हो (और सिर मुँडा ले) तो उस के बदले में रोजा रखना या दान^[1] देना अथवा कुर्बानी देना है, और जब तुम निर्भय (शान्त) रहो तो जो उमरे से हज्ज तक लाभान्वित^[2] हो वह जो कुर्बानी सुलभ हो उसे करो और जिसे उपलब्ध न हो तो वह तीन रोजे हज्ज के दिनों में रखे, और सात जब रखे जब तुम (घर) वापस आओ। यह पूरे दस हुये। यह उस के लिये है जो मस्जिदे हराम का निवासी न हो। और अल्लाह से डरो, तथा जान लो कि अल्लाह की यातना बहुत कड़ी है।

197. हज्ज के महीने प्रसिद्ध हैं, तो जो व्यक्ति इन में हज्ज का निश्चय कर ले तो (हज्ज के बीच) काम वासना तथा अवैज्ञा और झगड़े की बातें न करे, तथा तुम जो भी अच्छे कर्म करोगे तो उस का ज्ञान अल्लाह को हो जायेगा, और अपने लिये पाथेय बना लो, उत्तम पाथेय अल्लाह की आज्ञाकारिता है, तथा हे समझ वालो! मुझी से डरो।

1 जो तीन रोजे अथवा तीन निर्धनों को खिलाना या एक बकरे की कुरबानी देना है (तफ्सीरे कुर्तुबी)

2 लाभान्वित होने का अर्थ यह है कि उमरे का एहराम बाँधे, और उस के कार्यक्रम पूरे कर के एहराम खोल दे, और जो चीजें एहराम की स्थिति में अवैध थीं, उन से लाभान्वित हो। फिर हज्ज के समय उस का एहराम बाँधे, इसे (हज्ज तमत्तुअ) कहा जाता है। (तफ्सीरे कुर्तुबी)

الْحَجَّ فِي الْأَسْتِيْرِ مِنَ الْهَدْنِيْرِ فَمَنْ لَمْ يَعْدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّارِ فِي الْحَجَّ وَسَبْعَةٌ إِذَا رَجَعَتْ تِلْكَ عَشَرَةُ كَامِلَةٌ ذَلِكَ لِمَنْ لَمْ يَكُنْ أَهْلَهُ حَاضِرِي السَّجِيدِ الْعَرَامِ وَأَنْقُوُ اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ

الْحَجَّ أَشْهُرٌ مَعْلُومٌ فَمَنْ فَرَضَ فِيْنَ الْحَجَّ فَلَارْفَتْ وَلَافْسُوقَ وَلَاجِدَالَ فِي الْحَجَّ وَمَا تَفَعَّلُوا مِنْ حَيْرَةٍ يَعْلَمُهُ اللَّهُ وَتَرَدُّدُوا فِيْلَ حَيْرَ الرَّازِدِ التَّقْوَى وَأَنْقُوُنَ يَأْفِلُ الْأَلْبَابِ

198. तथा तुम पर कोई दोष^[1] नहीं कि अपने पालनहार के अनुग्रह की खोज करो, तो फिर जब तुम अरफ़ात^[2] से चलो, तो मशअरे हराम (मुज़दलिफ़ह) के पास अल्लाह का स्मरण करो जिस प्रकार अल्लाह ने तुम्हें बताया है। यद्यपि इस से पहले तुम कुपथों में थे।

199. फिर तुम^[3] भी वहीं से फिरो जहाँ से लोग फिरते हैं। तथा अल्लाह से क्षमा माँगो। निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील, दयावान् है।

200. और जब तुम अपने (हज्ज के) मनासिक (कर्म) पूरे कर लो तो जिस प्रकार पहले अपने पूर्वजों की चर्चा करते रहे, उसी प्रकार बल्कि उस से भी अधिक अल्लाह का स्मरण^[4] करो। उन में से कुछ ऐसे हैं जो यह कहते हैं कि: हे हमारे पालनहार! (हमें जो देना है) संसार ही में दे दें अतः ऐसे व्यक्ति के लिये परलोक में कोई भाग नहीं है।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَجْتَعُوا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ فَإِذَا أَفْضَلُوكُمْ مِّنْ عَرَفْتُمْ فَأَذْكُرُوا اللَّهَ إِنَّمَا يُعْلَمُ الْمُشْعَرُ الْحَرَامُ وَإِذْكُرُوهُ كَمَا هَذَا كُلُّكُمْ وَإِن كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهِ لَمْ يَعْلَمْ الْمُصَارِلَيْنَ ۝

ثُمَّ أَفْيَضُوا مِنْ حَيْثُ أَقَاضَ الْأَئُمُّ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ تَرْحِيمٌ ۝

فَإِذَا قَصَدُوكُمْ مَنَا سَكَنُوا فَأَذْكُرُوا اللَّهَ كَذِنْ كُلُّهُ أَبَاءَكُلُّهُ أَوْ أَشَدَّ ذُكْرًا فِينَ الْأَئُمُّ مَنْ يَقُولُ رَبَّنَا إِلَيْنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ حَلَاقٍ ۝

1 अर्थात् व्यापार करने में कोई दोष नहीं है।

2 अरफ़ात उस स्थान का नाम है जिस में हाजी 9 ज़िलहिज्जह को विराम करते, तथा सूर्यास्त के पश्चात् वहाँ से वापिस होते हैं।

3 यह आदेश कुरैश के उन लोगों को दिया गया है जो मुजदलिफ़ह ही से वापिस चले आते थे। और अरफ़ात नहीं जाते थे। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

4 जाहिलिय्यत में अरबों की यह रीति थी कि हज्ज पूरा करने के पश्चात् अपने पूर्वजों के कर्मों की चर्चा कर के उन पर गर्व किया करते थे। तथा इन्हे अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस का अर्थ यह किया है कि जिस प्रकार शिशु अपने माता पिता को गुहारता, पुकारता है उसी प्रकार तुम अल्लाह को गुहारो और पुकारो। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

201. तथा उन में से कुछ ऐसे हैं जो यह कहते हैं कि: हमारे पालनहार! हमें संसार की भलाई दे, तथा परलोक में भी भलाई दे, और हमें नरक की यातना से सुरक्षित रख।
202. इन्हीं को इन की कमाई के कारण भाग मिलेगा, और अल्लाह शीघ्र हिसाब चुकाने वाला है।
203. तथा इन गिनती^[1] के कुछ दिनों में अल्लाह को स्मरण (याद) करो, फिर जो कोई व्यक्ति शीघ्रता से दो ही दिन में (मिना से) चल^[2] दे, तो उस पर कोई दोष नहीं, और जो विलम्ब^[3] करे, तो उस पर भी कोई दोष नहीं, उस व्यक्ति के लिये जो अल्लाह से डरा, तथा तुम अल्लाह से डरते रहो और यह समझ लो कि तुम उसी के पास प्रलय के दिन एकत्र किये जाओगे।
204. हे नबी! लोगों^[4] में ऐसा व्यक्ति भी है जिस की बात आप को सांसारिक विषय में भाती है, तथा जो कुछ उस के दिल में है, वह उस पर अल्लाह को साक्षी बनाता है, जब कि वह बड़ा झगड़ालू है।

وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ رَبِّنَا الْتَّنَاهُ فِي الدُّنْيَا
حَسَنَةٌ وَّفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةٌ وَّقِنَا عَذَاباً
@الثَّانِي

أُولَئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا وَاللَّهُ
سَرِيعُ الْحِسَابِ④

وَإِذْ كُرُّوا اللَّهَ فِي أَيَّامٍ مَّعْدُودَاتٍ لَّمْ يَنْ
تَعْجَلُ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمٌ عَلَيْهِ وَمَنْ
شَاءَ حَرَ فَلَا إِثْمٌ عَلَيْهِ لِمَنِ اتَّقَى
وَأَنْعَوْالَهُ وَأَعْدَمُوا الْكُلُّ إِلَيْهِ وَمُخْسِرُونَ⑤

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُعِجِّبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَيُشَهِّدُ اللَّهَ عَلَى مَا فِي قَلْبِهِ وَهُوَ أَكْلُ الْخَصَامِ⑥

1 गिनती के कुछ दिनों से अभिप्रेत जुलहिज्जह मास की 11, 12, और 13 तारीखें हैं। जिन को (अय्यामे तश्रीक) कहते हैं।

2 अर्थात् 12 जुलहिज्जह को ही सूर्यास्त के पहले कँकरी मारने के पश्चात् चल दें।

3 विलम्ब करे, अर्थात् मिना में रात बिताये। और तेरह जुलहिज्जह को कँकरी मारे, फिर मिना से निकल जाये।

4 अर्थात् मुनाफिकों (दुविधा वादियों) में।

205. तथा जब वह आप के पास से जाता है तो धरती में उपद्रव मचाने का प्रयास करता है, और खेती तथा पशुओं का विनाश करता है। और अल्लाह उपद्रव से प्रेम नहीं करता।
206. तथा जब उस से कहा जाता है कि अल्लाह से डर, तो अभिमान उसे पाप पर उभार देता है। अतः उस के (दण्ड) के लिये नरक काफी है। और वह बहुत बुरा बिछोना है।
207. तथा लोगों में ऐसा व्यक्ति भी है जो अल्लाह की प्रसन्नता की खोज में अपना प्राण बेच^[1] देता है। और अल्लाह अपने भक्तों के लिये अति करुणामय है।
208. हे ईमान वालो! तुम सर्वथा इस्लाम में प्रवेश^[2] कर जाओ, और शैतान की राहों पर मत चलो, निश्चय वह तुम्हारा खुला शत्रु है।
209. फिर यदि तुम खुले तर्कों (दलीलों)^[3] के आने के पश्चात् विचलित हो गये, तो जान लौ कि अल्लाह प्रभुत्वशाली तथा तत्त्वज्ञ^[4] है।
210. क्या (इन खुले तर्कों के आ जाने के पश्चात्) वह इस की प्रतिक्षा कर रहे हैं कि उन के समक्ष अल्लाह

وَإِذَا تَوَلَّ مِنْ فِي الْأَرْضِ لِيُقْسِدَ فِيهَا وَيُهُمْكِنُ
الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ وَاللهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ⑥

وَإِذَا قُتِلَ لَهُ أَئِقْنَةُ اللَّهِ أَخْدَثَتُهُ الْعَرَةُ
بِالْأَنْوَافِ حَصْبَبُهُ جَهَنَّمُ وَلَيْسَ إِلَيْهَا دُرُّ ⑦

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُشْرِكُ نَفْسَهُ بِأَبْرَعَاءِ
مَرْضَاتِ اللَّهِ وَاللهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ⑧

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْخُلُوا فِي
الْسَّلَامِ كَافِرَةً مَوْلَانِيَّعُوا خُطُوبَ
الشَّيْطَنِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ⑨

فَإِنْ زَلَّ لِلنُّعْمَ وَمِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْكُمْ
الْبَيِّنَاتُ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ⑩

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي
ظُلْلٍ وَمِنَ الْغَمَامِ وَالْمَلِئَةُ وَقُضَى

1 अर्थात् उस की राह में और उस की आज्ञा के अनुपालन द्वारा।

2 अर्थात् इस्लाम के पूरे संविधान का अनुपालन करो।

3 खुले तर्कों से अभिप्राय कुर्बान और सुब्बत है।

4 अर्थात् तथ्य को जानता और प्रत्येक वस्तु को उस के उचित स्थान पर रखता है।

बादलों के छत्र में आ जाये, तथा फ़रिश्ते भी, और निर्णय ही कर दिया जाये? और सभी विषय अल्लाह ही की ओर फेरे^[1] जायेंगे।

211. बनी इस्राईल से पूछो कि हम ने उन्हें कितनी खुली निशानियाँ दी? इस पर भी जिस ने अल्लाह की अनुकम्पा को, उस के अपने पास आ जाने के पश्चात बदल दिया, तो अल्लाह की यातना भी बहुत कड़ी है।
212. काफिरों के लिये संसारिक जीवन शोभनीय (मनोहर) बना दिया गया है। तथा जो ईमान लाये यह उन का उपहास^[2] करते हैं, और प्रलय के दिन अल्लाह के आज्ञाकारी उन से उच्च स्थान^[3] पर रहेंगे। तथा अल्लाह जिसे चाहे अगणित आजीविका प्रदान करता है।
213. (आरंभ में) सभी मानव एक ही (स्वाभाविक) सत्यर्थ पर थे। (फिर विभेद हुया)। तो अल्लाह ने नवियों को शुभ समाचार सुनाने,^[4] और

الْأَمْرُ، وَإِلَيْهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ

سَلْ بَنِي إِسْرَائِيلَ كُمْ أَتَيْنَاهُمْ مِّنْ أَيْنَ
بَيْنَنَا وَمَنْ يُبَدِّلُ نِعْمَةَ اللَّهِ مِنْ يَعْبُدُ
مَا جَاءَتْهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ

رُبَّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَيَسْهُرُونَ وَمَنْ
الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ اتَّقَوْا فَهُمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ

كَلَّا لِلنَّاسِ أُمَّةٌ وَاحِدَةٌ قَبَّعَثَ اللَّهُ
النَّمِيمِينَ مُبَشِّرِينَ وَمُنْذِرِينَ وَأَنْزَلَ مَعَهُمْ
الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِيَحُكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيمَا

1 अर्थात् सब निर्णय परलोक में वही करेगा।

2 अर्थात् उन की निर्धनता तथा दरिद्रता के कारण।

3 आयत का भावार्थ यह है कि काफिर संसारिक धन धान्य ही को महत्व देते हैं। जब कि परलोक की सफलता जो सत्यर्थ और सत्कर्म पर आधारित है वही सब से बड़ी सफलता है।

4 आयत 213 का सारांश यह है कि सभी मानव आरंभिक युग में स्वाभाविक जीवन व्यतीत कर रहे थे। फिर आपस में विभेद हुआ तो अत्याचार और उपद्रव होने लगा। तब अल्लाह की ओर से नवी आने लगे ताकि सब को एक सत्यर्थ पर कर दें। और आकाशीय पुस्तकों भी इसी लिये अवतरित हुईं कि विभेद में निर्णय

(अवैज्ञा) से सचेत करने के लिये भेजा, और उन पर सत्य के साथ पुस्तक उतारी, ताकि वह जिन बातों पर विभेद कर रहे हैं, उन का निर्णय कर दें, और आप की दुराग्रह से उन्होंने ही विभेद किया, जिन को (विभेद निवारण के लिये) यह पुस्तक दी गयी, तो जो ईमान लाये अल्लाह ने उस विभेद में उन्हें अपनी अनुमति से सत्पथ दर्शा दिया। और अल्लाह जिसे चाहे सत्पथ दर्शा देता है।

214. क्या तुम ने समझ रखा है कि यूँ ही स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे, हालाँकि अभी तक तुम्हारी वह दशा नहीं हुई जो तुम से पूर्व के ईमान वालों की हुई? उन्हें तीरियों तथा आपदाओं ने घेर लिया, और वह झँझोड़ दिये गये, यहाँ तक कि रसूल और जो उस पर ईमान लाये गुहारने लगे कि अल्लाह की सहायता कब आयेगी? (उस समय कहा गया:) सुन लो! अल्लाह की सहायता समीप^[1] है।
215. हे नबी! वह आप से प्रश्न करते हैं कि कैसे व्यय (ख़र्च) करें उन से कहो

कर के सब को एक मूल सत्यर्म पर लायें। परन्तु लोगों की दुराग्रह और आपसी द्वेष विभेद का कारण बने रहे। अन्यथा सत्यर्म (इस्लाम) जो एकता का आधार है वह अब भी सुरक्षित है। और जो व्यक्ति चाहेगा तो अल्लाह उस के लिये यह सत्य दर्शा देगा। परन्तु यह स्वयं उस की इच्छा पर आधारित है।

1 آयत का भावार्थ यह है कि ईमान के लिये इतना ही बस नहीं कि ईमान को स्वीकार कर लिया तथा स्वर्गीय हो गये। इस के लिये यह भी आवश्यक है कि उन सभी परीक्षाओं में स्थिर रहो जो तुम से पूर्व सत्य के अनुयायियों के सामने आयी, और तुम पर भी आयेंगी।

اَخْتَلَفُوا فِيهِ وَمَا اخْتَلَفَ فِيهِ إِلَّا الَّذِينَ
أُولَئِكُمْ مَنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُ شَهَرُ الْبَيْتِ نَبَغَّلُ
بَيْنَهُمْ فَهُدَى اللَّهُ الَّذِينَ امْتَنَّا لَهُمَا الْخُتْلَفُوا
فِيهِ مِنَ الْحَقِّ يَأْذِنُهُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَنْ يَشَاءُ
إِلَّا صِرَاطُ اُمَّتِنَا قَيْمَطِيٌّ[®]

أَمْ حَبَّبْرَهُ أَنْ تَدْخُلُ الْجَنَّةَ وَلَكُمْ يَأْتُكُمْ
مِّثْلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ مُّسْتَهْمِمُونَ
الْبَاسَارُ وَالظَّرَاءُ وَرُزْلُرُ لُوا حَتَّى يَقُولُونَ
الرَّسُولُ وَالَّذِينَ امْتَنَّا لَهُمَا مَعْنَى نَصْرٍ
اَللَّهُ اَلَّا رَأَى نَصْرًا لَهُ قَرِيبٌ[®]

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ ۖ قُلْ مَا آنْفَقْتُمْ مِّنْ

कि जो भी धन तुम ख़र्च करो, अपने माता पिता, समीपवर्तियों, अनाथों, निर्धनों तथा यात्रियों (को दो)। तथा जो भी भलाई तुम करते हो, उसे अल्लाह भली भाँति जानता है।

216. हे ईमान वालो! तुम पर युद्ध करना अनिवार्य कर दिया गया है, और वह तुम्हें अप्रिय है, हो सकता है कि कोई चीज़ तुम्हें अप्रिय हो, और वही तुम्हारे लिये अच्छी हो, और इसी प्रकार सम्भव है कि कोई चीज़ तुम्हे प्रिय हो, और वह तुम्हारे लिये बरी हो। अल्लाह जानता है और तुम नहीं^[1] जानते।
217. हे नबी! वह^[2] आप से प्रश्न करते हैं कि सम्मानित मास में युद्ध करना कैसा है? तो आप उन से कह दें कि उस में युद्ध करना घोर पाप है, परन्तु अल्लाह की राह से रोकना और उस का इन्कार करना, तथा मस्जिद हराम से रोकना, और उस के निवासियों को उस से निकालना, अल्लाह के समीप उस से भी घोर पाप है। तथा फ़ितना (सत्धर्म) से विचलाना हत्या से भी भारी है और वह तो तुम से युद्ध करते ही जायेंगे, यहाँ तक कि उन के बस

خَيْرٌ فِي الْمُلْكِ الْمُدِينَ وَالْأَقْرَبِينَ وَالْيَتَامَى
وَالْمَسَاكِينُ وَابْنُ السَّجِيلِ وَمَا لَقَعَ لَوْا مِنْ حَاجَةٍ
فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيهِمْ ②

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ أَكْرَبُ لَكُمْ وَعَنِي أَنْ
تَكُونُوا شَيْئًا وَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ وَعَنِي أَنْ تَجْعَلُوا
شَيْئًا وَهُوَ شَرٌ لَكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنَّمَا لَا
يَعْلَمُونَ ⑤

يَسْتَأْلُونَكَ عَنِ الْكَهْرَبِ الْعَرَامِ قَتَالٌ فِيَنْ قُلْ
قَتَالٌ فِيَنْ كَيْرٌ وَصَدٌ عَنْ سَبِيلِ الْفُوْرُوكَرِيْهِ
وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِخْرَاجُ أَهْلِهِ مِنْهُ الْكَبِيرُ عِنْدَ
اللَّهِ وَالْقَنْتَهُ الْكَبِيرُ مِنَ الْقُتْلِ وَلَا يَرَأُونَ
يُقَاتَلُونَكُمْ حَتَّى يَرَوْهُمْ عَنْ دِينِكُمْ إِنْ
أَسْتَطَاعُوْا وَمَنْ يُرَدِّدُ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ
فَمَمْتُ وَهُوَ كَافِرٌ قَوْلِيْكَ حَقَّتْ أَعْمَالُهُمْ
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَوْلَئِكَ أَصْحَبُ النَّارِ
مُهْرِفِهِمَا خَلِدُونَ ⑩

1 आयत का भावार्थ यह है कि युद्ध ऐसी चीज़ नहीं जो तुम्हें प्रिय हो। परन्तु जब ऐसी स्थिति आ जाये कि शत्रु इस लिये आक्रमण और अत्याचार करने लगे कि लोगों ने अपने पूर्वजों की आस्था परम्परा त्याग कर सत्य को अपना लिया है, जैसा कि इस्लाम के आरंभिक युग में हुआ, तो सत्धर्म की रक्षा के लिये युद्ध करना अनिवार्य हो जाता है।

2 अर्थात् मिश्रणवादी।

मैं हो तो तुम्हें तुम्हारे धर्म से फेर दें, और तुम मैं से जो व्यक्ति अपने धर्म (इस्लाम) से फिर जायेगा, फिर कुफ़्र पर ही उस की मौत होगी, तो ऐसों का किया कराया, संसार तथा परलोक में व्यर्थ हो जायेगा। तथा वही नारकी हैं। और वह उस में सदावासी होंगे।

218. (इस के विपरीत) जो लोग ईमान लाये, और उन्होंने हिजरत^[1] की, तथा अल्लाह की राह में जिहाद किया, तो वास्तव में वही अल्लाह की दया की आशा रखते हैं। तथा अल्लाह अति क्षमाशील और बहुत दयालु है।
219. हे नबी! वह आप से मदिरा और जूआ के विषय में प्रश्न करते हैं। आप बता दें कि इन दोनों में बड़ा पाप है। तथा लोगों का कुछ लाभ भी है। परन्तु उन का पाप उन के लाभ से अधिक^[2] बड़ा है। तथा वह आप से प्रश्न करते हैं कि अल्लाह की राह में क्या ख़र्च करें? उन से कह दो कि जो अपनी आवश्यकता से अधिक हो। इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये आयतों (धर्मदिशों) को उजागर करता है। ताकि तुम सोच विचार करो।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجَهَدُوا
فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ لِكَيْرَيْلَكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ
وَأَنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَّجِيْلُو^[3]

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخُمُرِ وَالْمَيْسِرِ قُلْ فِيهِمَا
إِنَّهُ كُبُرٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَإِنَّهُمْ مَا أَكْبَرُ
مِنْ نَفْعِهِمَا وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ
قُلِ الْعَفْوُ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَتِ
لَعَلَّكُمْ تَتَكَبَّرُونَ^[4]

1 हिज्रत का अर्थ है: अल्लाह के लिये स्वदेश त्याग देना।

2 अर्थात् अपने लोक परलोक के लाभ के विषय में विचार करो और जिस में अधिक हानि हो उसे त्याग दो। यद्यपि उस में थोड़ा लाभ ही क्यों न हो यह मदिरा और जूआ से सम्बन्धित प्रथम आदेश है। आगामी सूरह निसा आयत 43 तथा सूरह माइदह आयत 90 में इन के विषय में अन्तिम आदेश आ रहा है।

220. और वह आप से अनाथों के विषय में प्रश्न करते हैं। तो उन से कह दो कि जिस बात में उन का सुधार हो वही सब से अच्छी है। यदि तुम उन से मिल कर रहो तो वह तुम्हारे भाई ही है, और अल्लाह जानता है कि कौन सुधारने और कौन बिगाड़ने वाला है। और यदि अल्लाह चाहता तो तुम पर सख्ती^[1] कर देता। वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वज्ञ है।

221. तथा मुशिरक^[2] स्त्रियों से तुम विवाह न करो, जब तक वह ईमान न लायें, और ईमान वाली दासी मुशिरक स्त्री से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हारे मन को भा रही हो, और अपनी स्त्रियों का विवाह मुशिरकों से न करो जब तक वह ईमान न लायें। और ईमान वाला दास मुशिरक से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हें भा रहा हो। वह तुम्हें अग्नि की ओर बुलाते हैं तथा अल्लाह स्वर्ग और क्षमा की ओर बुला रहा है। और सभी मानव के लिये अपनी आयतें (आदेश) उजागर कर रहा है ताकि वह शिक्षा ग्रहण करे।

222. तथा वह आप से मासिक धर्म के

فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتَمِّ فَقُلْ
إِذْلِكُمْ خَيْرٌ وَمَنْ مُحَاذِطُهُمْ فَإِخْوَانُهُمْ
وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ وَلَوْسَاءَ اللَّهِ
لَكُمْ فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ⑩

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا وَلَا مُهَاجِرَةٍ
حَيْرٌ مَنْ مُشْرِكٌ وَلَا يَجِدُهُمْ وَلَا تَنْكِحُوا
الْمُشْرِكَيْنَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا وَلَا يَعْبُدُ مُؤْمِنٌ حَيْرٌ
مَنْ مُشْرِكٌ وَلَا يَجِدُهُمْ أُولَئِكَ يَدْعُونَ إِلَى
النَّارِ وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ
إِذْنِهِ وَبِئْرَتِنَ إِلَيْهِ لِلثَّالِثِ لَعَلَّهُمْ
يَذَكَّرُونَ ⑪

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَحْيِيْضِ فَقُلْ هُوَ ذُو

1 उन का खाना पीना अलग करने का आदेश दे कर।

2 इस्लाम के विरोधियों से युद्ध ने यह प्रश्न उभार दिया कि उन से विवाह उचित है या नहीं? उस पर कहा जा रहा है कि उन से विवाह सम्बन्ध अवैध है, और इस का कारण भी बता दिया गया है कि वह तुम्हें सत्य से फेरना चाहते हैं। उन के साथ तुम्हारा विवाहिक सम्बन्ध कभी सफलता का कारण नहीं हो सकता।

विषय में प्रश्न करते हैं, तो कह दें कि वह मलीनता है। और उन के समीप भी न^[1] जाओ जब तक पवित्र न हो जायें। फिर जब वह भली भाँति स्वच्छ^[2] हो जायें तो उन के पास उसी प्रकार जाओ जैसे अल्लाह ने तुम्हें आदेश^[3] दिया है। निश्चय अल्लाह तौबा करने वालों तथा पवित्र रहने वालों से प्रेम करता है।

223. तुम्हारी पत्नियाँ तुम्हारे लिये खेतियाँ^[4] हैं। तुम्हें अनुमति है कि जैसे चाहो अपनी खेतियों में जाओ। परन्तु भविष्य के लिये भी सत्कर्म करो। तथा अल्लाह से डरते रहो। और विश्वास रखो कि तुम्हें उस से मिलना है। और ईमान वालों को शुभ सूचना सुना दो।

224. तथा अल्लाह के नाम पर अपनी शपथों को उपकार तथा सदाचार और लोगों में मिलाप कराने के लिये रोक^[5] न बनाओ। और अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।

225. अल्लाह तुम्हारी निरर्थक शपथों पर तुम्हें नहीं पकड़ेगा, परन्तु जो शपथ

فَلَعْنَى لُو الْتَّسَاءِ فِي الْمَحْيَىٰ وَلَا قَرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ يَطْهُرُنَّ فَإِذَا نَطَهُرُنَّ فَأُتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمْرَكُمْ
اللَّهُ أَنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَابِينَ وَمُحِبُّ
الْمُتَطَهِّرِينَ [®]

بَسَاؤْكُمْ حَرْثٌ لَكُمْ فَأَتُوا حَرْثَكُمْ أَنْ شَئْتُمْ
وَقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُمْ وَأَنْقُوا اللَّهَ وَأَعْلَمُوا لَكُمْ
مُلْقُوْهُ وَبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ [®]

وَلَا جَعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِأَيْمَانِكُمْ أَنْ تَبْرُدُوا
وَتَسْقُوا وَتُصْبِحُوا بَيْنَ النَّارِينَ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ [®]

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلِكُنْ

1 अर्थात् संभोग करने के लिये।

2 मासिक धर्म बन्द होने के पश्चात् स्नान कर के स्वच्छ हो जायें।

3 अर्थात् जिस स्थान को अल्लाह ने उन्नित किया है, वही संभोग करो।

4 अर्थात् संतान उत्पन्न करने का स्थान और इस में यह संकेत भी है कि भग के सिवा अन्य स्थान में संभोग हराम (अनुचित) है।

5 अर्थात् सदाचार और पुण्य न करने की शपथ लेना अनुचित है।

अपने दिलों के संकल्प से लोगे,
उन पर पकड़ेगा, और अल्लाह अति
क्षमाशील सहनशील है।

226. तथा जो लोग अपनी पत्नियों से
संभोग न करने की शपथ लेते हों,
वह चार महीने प्रतीक्षा करें। फिर^[1]
यदि अपनी शपथ से इस (बीच)
फिर जायें तो अल्लाह अति क्षमाशील
दयावान् है।
227. और यदि उन्होंने तलाक का संकल्प
ले लिया हो तो निःसन्देह अल्लाह सब
कुछ सुनता और जानता है।
228. तथा जिन स्त्रियों को तलाक दी गयी
हो वह तीन बार रजवती होने तक
अपने आप को विवाह से रोकी रखें।
उन के लिये हलाल (वैध) नहीं है
कि अल्लाह ने जो उन के गर्भाषयों
में पैदा किया^[2] है, उसे छुपायें। यदि
वह अल्लाह तथा आखिरत (परलोक)
पर ईमान रखती हों। तथा उन के
पति इस अवधि में अपनी पत्नियों
को लौटा लेने के अधिकारी^[3] हैं
यदि वह मिलाप^[4] चाहते हों। तथा

يُؤَاخِذُ كُلُّهُ بِمَا كَسَبَتْ فَلَوْلَكُمْ وَإِنَّ اللَّهَ عَفُوٌ عَنْ حَلَلِهِمْ
لِلَّذِينَ يُؤْلُونَ مِنْ تَسَاءُلِهِمْ تَرْبِضُ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ فَإِنْ قَاتَلُوكُمْ فَإِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَّحِيمٌ

لِلَّذِينَ يُؤْلُونَ مِنْ تَسَاءُلِهِمْ تَرْبِضُ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ فَإِنْ قَاتَلُوكُمْ فَإِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَّحِيمٌ

وَإِنْ عَزَمُوا الظَّلَاقَ فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلَيْهِمْ

وَالْمُطَلَّقُتُ يَرَأْصُنْ بِأَنْفُسِهِنَّ شَلَّهَ فَرُوقٌ وَلَا
يَعْلَمُ لَهُنَّ أَنْ يَكُنُّ مَا مَخْلُقُ اللَّهُ فِي أَرْجَامِهِنَّ
إِنْ كُنَّ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَبِعِوْنَاهُنَّ
أَحَقُّ بِرَدْهِنَ فِي ذَلِكَ رَانٌ أَرَادُوا لِاصْلَاحًا
وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِينَ عَلَيْهِنَّ بِالسُّرُوفِ
وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ وَاللَّهُ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ

1 यदि पत्नी से संबंध न रखने की शपथ ली जाये जिसे अर्बी में "ईला" के नाम से
जाना जाता है तो उस का यह नियम है कि चार महीने प्रतीक्षा की जायेगी। यदि
इस बीच पति ने फिर संबंध स्थापित कर लिया तो उसे शपथ का कफ़ारह
(प्रायश्चित) देना होगा। अन्यथा चार महीने पूरे हो जाने पर न्यायालय उसे
शपथ से फिरने या तलाक देने के लिये बाध्य करेगा।

2 अर्थात् मासिक धर्म अथवा गर्भ को।

3 यह बताया गया है कि पति तलाक के पश्चात् पत्नी को लौटाना चाहे तो उसे
इस का अधिकार है। क्यों कि विवाह का मूल लक्ष्य मिलाप है, अलगाव नहीं।

4 हानि पहुँचाने अथवा दुःख देने के लिये नहीं।

सामान्य नियमानुसार स्त्रियों^[1] के लिये वैसे ही अधिकार हैं जैसे पुरुषों का उन के ऊपर है। फिर भी पुरुषों को स्त्रियों पर एक प्रधानता प्राप्त है। और अल्लाह अति प्रभुत्वशील तत्वज्ञ है।

229. तलाक़ दो बार है। फिर नियमानुसार स्त्री को रोक लिया जाये या भली

أَكْلَاقُ مَرْضِينَ قَامْسَالُّكُ بِمَعْرُوفٍ أُدْ

1 यहाँ यह ज्ञातव्य है कि जब इस्लाम आया तो संसार यह जानता ही न था कि स्त्रियों के भी कुछ अधिकार हो सकते हैं। स्त्री को संतान उत्पन्न करने का एक साधन समझा जाता था, और उन की मुकित इसी में थी कि वह पुरुषों की सेवा करें, प्राचीन धर्मानुसार स्त्री को पुरुष की सम्पत्ति समझा जाता था। पुरुष तथा स्त्री समान नहीं थे। स्त्री में मानव आत्मा के स्थान पर एक दूसरी आत्मा होती थी, रूमी विधान में भी स्त्री का स्थान पुरुष से बहुत नीचा था। जब कभी मानव शब्द बोला जाता तो उस से संबोधित पुरुष होता था। स्त्री पुरुष के साथ खड़ी नहीं हो सकती थी।

कुछ अमानवीय विचारों में जन्म से पाप का सारा बोझ स्त्री पर डाल दिया जाता। आदम के पाप का कारण हव्वा हुई। इस लिये पाप का पहला बीज स्त्री के हाथों पड़ा। और वही शैतान का साधन बनी। अब सदा स्त्री में पाप की प्रेरणा उभरती रहेगी, धार्मिक विषय में भी स्त्री पुरुष के समान न हो सकी।

परन्तु इस्लाम ने केवल स्त्रियों के अधिकार का विचार ही नहीं दिया बल्कि खुला एलान कर दिया कि जैसे पुरुषों के अधिकार हैं उसी प्रकार स्त्रियों के भी पुरुषों पर अधिकार हैं।

कुर्�आन ने इन चार शब्दों में स्त्री को वह सब कुछ दे दिया है जो उस का अधिकार था। और जो उसे कभी नहीं मिला था। इन शब्दों द्वारा उस के सम्मान और समता की घोषणा कर दी। दाम्पत्य जीवन तथा सामाजिकता की कोई ऐसी बात नहीं जो इन चार शब्दों में न आ गई हो। यद्यपि आगे यह भी कहा गया है कि पुरुषों के लिये स्त्रियों पर एक विशेष प्रधानता है। ऐसा क्यों है? इस का कारण हमें अगामी सूरह "निसा" में मिल जाता है कि यह इस लिये है कि पुरुष अपना धन स्त्रियों पर खर्च करते हैं। अर्थात् परिवारिक जीवन की व्यवस्था के लिये कोई व्यवस्थापक अवश्य होना चाहिये। और इस का भार पुरुषों पर रखा गया है। यही उन की प्रधानता तथा विशेषता है। जो केवल एक भार है इस से पुरुष की जन्म से कोई प्रधानता सिद्ध नहीं होती। यह केवल एक परिवारिक व्यवस्था के कारण हुआ है।

भाँति विदा कर दिया जाये। और तुम्हारे लिये यह हलाल (वैध) नहीं है कि उन्हें जो कुछ तुम ने दिया है उस में से कुछ वापिस लो। फिर यदि तुम्हें यह भय^[1] हो कि पति पत्नी अल्लाह की निर्धारित सीमाओं को स्थापित न रख सकेंगे तो उन दोनों पर कोई दोष नहीं कि पत्नी अपने पति को कुछ देकर मुक्ति^[2] करा ले। यह अल्लाह की सीमायें हैं इन का उल्लंघन न करो। और जो अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करेंगे वही अत्याचारी हैं।

230. फिर यदि उसे (तीसरी बार) तलाक दे दी तो वह स्वी उस के लिये हलाल (वैध) नहीं होगी, जब तक दूसरे पति से विवाह न कर ले। अब यदि दूसरा पति (संभोग के पश्चात्) उसे तलाक दे दे तब प्रथम पति से (निर्धारित अवधि पूरी कर के) फिर विवाह कर सकती है, यदि वह दोनों समझते हों कि अल्लाह की सीमाओं को स्थापित रख^[3] सकेंगे। और यह

سُرِّيْهُ إِيْمَانُ وَلَا يَحْلُّ لِكُمْ أَنْ تَأْخُذُوا مِنَ اتِّيَّمُوهُنَّ شَيْئاً إِلَّا نَعْلَمُ بِهِنَّا
الْأَيُّقِيمَاتِ حَدُودُ اللَّهِ قَلَاجُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيمَا افْتَدَتْ
حُدُودُ اللَّهِ قَلَاجُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيمَا افْتَدَتْ
إِنْ تَلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَعْتَدُوهَا، وَمَنْ
يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٦﴾

فَإِنْ طَلَقَهَا فَلَا تَحْلُلْ لَهُ مِنْ بَعْدِ حَدِّي
تَنْكِحَهُ رَجُلًا غَيْرَهُ ﴿٧﴾ فَإِنْ طَلَقَهَا فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْهِمَا أَنْ يَتَرَاجَعَا إِنْ طَلَقَهَا أَنْ يُقْبِلُهَا
حُدُودُ اللَّهِ وَتَلْكَ حُدُودُ اللَّهِ يُبَيِّنُهَا
لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٨﴾

1 अर्थात् पति के संरक्षकों को।

2 पत्नी के अपने पति को कुछ दे कर विवाह बंधन से मुक्त करा लेने को इस्लाम की परिभाषा में "खुल्अ" कहा जाता है। इस्लाम ने जैसे पुरुषों को तलाक का अधिकार दिया है उसी प्रकार स्त्रियों को भी "खुल्अ" ले लेने का अधिकार दिया है। अर्थात् वह अपने पति से तलाक मांग सकती है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि प्रथम पति ने तीन तलाक दे दी हों तो निर्धारित अवधि में भी उसे पत्नी को लौटाने का अवसर नहीं दिया जायेगा। तथा पत्नी को यह अधिकार होगा कि निर्धारित अवधि पूरी कर के किसी दूसरे पति से धर्मविधान के अनुसार सही ह विवाह कर ले, फिर यदि दूसरा पति उसे सम्भोग

अल्लाह की सीमायें हैं, जिन्हें उन लोगों के लिये उजागर कर रहा है जो ज्ञान रखते हों।

231. और यदि स्त्रियों को (एक या दो) तलाक़ दे दो और उन की निर्धारित अवधि (इद्दत) पूरी होने लगे तो नियमानुसार उसे रोक लो, अथवा नियमानुसार विदा कर दो। उन्हें हानि पहुँचाने के लिये न रोको, ताकि उन पर अत्याचार करो, और जो कोई ऐसा करेगा तो वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करेगा। तथा अल्लाह की आयतों (आदेशों) को उपहास न बनाओ। और अपने ऊपर अल्लाह के उपकार तथा उस पुस्तक (कुर्�आन) तथा हिक्मत (सुन्नत) को याद करो जिसे उस ने तुम पर उतारा है। और उस के द्वारा तुम को शिक्षा दे रहा है। तथा अल्लाह से डरो, और विश्वास रखो कि अल्लाह सब कुछ जानता है।^[1]

232. और जब तुम अपनी पत्नियों को (तीन से कम) तलाक़ दो, और वह अपनी निश्चित अवधि (इद्दत) पूरी

के पश्चात् तलाक़ दे, या उस का देहान्त हो जाये तो प्रथम पति से निर्धारित अवधि पूरी करने के पश्चात् नये महर के साथ नया विवाह कर सकती है। लेकिन यह उस समय है जब दोनों यह समझते हों कि वे अल्लाह के आदेशों का पालन कर सकेंगे।

1 آयत का अर्थ यह है कि पत्नी को पत्नी के रूप में रखो, और उन के अधिकार दो। अन्यथा तलाक़ दे कर उन की राह खोल दो। जाहिलियत के युग के समान अंधेरे में न रखो। इस विषय में भी नैतिकता एवं संयम के आदर्श बनो और कुर्�आन तथा सुन्नत के आदेशों का अनुपालन करो।

وَإِذَا أَطْلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَلْيَغْلُظُنَّ
فَأَنْتُمْ كُوْهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ سَرِّحُوهُنَّ
بِمَعْرُوفٍ وَلَا تُنْسِكُوهُنَّ ضَرَارًا
لِتَعْتَدُوا وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ
نَفْسَهُ وَلَا تَتَخَذُوا إِلَيْتِ اللَّهُ هُرُوا
وَإِذْ كُرُوا يَعْمَلُوا اللَّهُ عَلَيْكُمْ وَمَا أَنْزَلَ
عَلَيْكُمْ مِنَ الْكِتَابِ وَالْحِكْمَةُ يَعْظَمُ بِهِ
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ شَيْءًا
عَلَيْهِمْ^{۱۰}

وَإِذَا أَطْلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَلْيَغْلُظُنَّ
فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ يَنْكِحُنَّ أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا

कर लें, तो (स्त्रियों के संरक्षको!) उन्हें अपने पतियों से विवाह करने से न रोको, जब कि सामान्य नियमानुसार वह आपस में विवाह करने पर सहमत हों, यह तुम में से उसे निर्देश दिया जा रहा है जो अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान (विश्वास) रखता है, यही तुम्हारे लिये अधिक स्वच्छ तथा पवित्र है। और अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते।

233. और मातायें अपने बच्चों को पूरे दो वर्ष दूध पिलायें, और पिता को नियमानुसार उन्हें खाना कपड़ा देना है, किसी पर उस की सकत से अधिक भार नहीं डाला जायेगा, न माता को उस के बच्चे के कारण हानि पहुँचाई जाये, और न पिता को उस के बच्चे के कारण। और इसी प्रकार उस (पिता) के वारिस (उत्तराधिकारी) पर (खाना कपड़ा देने का) भार है। फिर यदि दोनों आपस की सहमति तथा परामर्श से (दो वर्ष से पहले) दूध छुड़ाना चाहें तो दोनों पर कोई दोष नहीं। और यदि (तुम्हारा विचार किसी अन्य स्त्री से) दूध पिलवाने का हो तो इस में भी तुम पर कोई दोष नहीं, जब कि जो कुछ नियमानुसार उसे देना है उस को चुका दिया हो, तथा अल्लाह से डरते रहो। और जान लो कि तुम जो कुछ करते हो उसे

تَرَاضُوا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوفِ ذَلِكَ
يُوَعْظِيهِ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكُمْ أَكْمَلُهُمْ وَأَطْهَرُ
وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَإِنَّمَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٤﴾

وَالْوَالِدَاتُ يُرِضِّعْنَ أُولَادَهُنَّ حَوْلَنِينَ كَامِلَنِ
لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يُبَيِّنَ الرَّفَاعَةَ وَعَلَى الْمُؤْلُودِ لَهُ
رِزْقُهُنَّ وَكَيْمَانُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ لَا يُحَكِّمُ نَفْسُ إِلَّا
وَسُعْهَا لَا يُنْصَارُ وَالْوَالِدَةُ يُوكِلُهَا وَلَا مُؤْلُودُ لَهُ
يُوَلِّهَا وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذَلِكَ فَإِنْ أَرَادَ ا
فِصَالًا عَنْ تَرَاضِ مِنْهُمَا وَتَشَاءُ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْهِمَا وَإِنْ أَرَدْتُمْ أَنْ تَسْرِفُوا أُولَادَكُمْ فَلَا
جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا أَسْلَمْتُمْ مَا أَنْتُمْ بِالْمَعْرُوفِ
وَاتَّقُو اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ

अल्लाह देख रहा^[1] है।

234. और तुम में से जो मर जायें और अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ जायें तो वह स्वयं को चार महीने दस दिन रोके रखें^[2] फिर जब उन की अवधि पूरी हो जाये तो वह सामान्य नियमानुसार अपने विषय में जो भी करें उस में तुम पर कोई दोष^[3] नहीं। तथा अल्लाह तुम्हारे कर्मों से सूचित है।

235. इस अवधि में यदि तुम (उन) स्त्रियों को विवाह का संकेत दो अथवा अपने मन में छुपाये रखो तो तुम पर कोई दोष नहीं। अल्लाह जानता है कि उन का विचार तुम्हारे मन में आयेगा, परन्तु उन्हें गुप्त रूप से विवाह का बचन न दो। परन्तु यह कि नियमानुसार^[4] कोई बात कहो। तथा विवाह के बंधन का निश्चय उस समय तक न करो जब तक

وَالَّذِينَ يَتَوَفَّونَ مِنْكُمْ وَيَذَارُونَ أَذْلَاجُهَا تَرْكُصُنَ
إِنَّفِيهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا فَإِذَا أَبْلَغُنَ
أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنْفِيهِنَّ
بِالْمَعْرُوفِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَعْمَلُونَ حَسِيرٌ^⑩

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَضْتُمُوهُ مِنْ خُطْبَةِ
النِّسَاءِ إِذَا أَنْتُمْ فِي أَنْسِكُمْ عِلْمَ اللَّهِ أَكْلَمُ
سَنَدُكُلُوْهُنَّ وَلَكُنْ كَلُوْعَادُهُنَّ سِرِّ الْآنَ
نَقُولُوا قَوْلًا مَعْرُوفًا لَا يَعْزِمُوا عَقْدَةَ النِّكَاحِ
حَتَّى يَبْلُغُ الْكِبْرُ أَجَلَهُ وَاعْلَمُوْا أَنَّ اللَّهَ
يَعْلَمُ مَا فِي أَنْسِكُمْ فَاحْدَرُوهُ وَاعْلَمُوْا أَنَّ
اللَّهَ عَفُوْرٌ حَلِيمٌ^{١١}

1 तलाक की स्थिति में यदि माँ की गोद में बच्चा हो तो यह आदेश दिया गया है कि माँ ही बच्चे को दूध पिलाये और दूध पिलाने तक उस का ख़र्च पिता पर है। और दूध पिलाने की अवधि दो वर्ष है। साथ ही दो मूल नियम भी बताये गये हैं कि न तो माँ को बच्चे के कारण हानि पहुँचाई जाये और न पिता को। और किसी पर उस की शक्ति से अधिक ख़र्च का भार न डाला जाये।

2 उस की निश्चित अवधि चार महीने दस दिन है। वह तुरंत दूसरा विवाह नहीं कर सकती, और न इस से अधिक पति का सोग मनाये। जैसा कि जाहिलियत में होता था कि पत्नी को एक वर्ष तक पति का सोग मनाना पड़ता था।

3 यदि स्त्री निश्चित अवधि के पश्चात् दूसरा विवाह करना चाहे, तो उसे रोका न जाये।

4 विवाह के विषय में जो बात की जाये वह खुली तथा नियमानुसार हो, गुप्त नहीं।

निर्धारित अवधि पूरी न हो जाये^[1],
तथा जान लो कि जो कुछ तुम्हारे
मन में है उसे अल्लाह जानता है।
अतः उस से डरते रहो और जान लो
कि अल्लाह क्षमाशील, सहनशील है।

236. और तुम पर कोई दोष नहीं यदि
तुम स्त्रियों को संभोग करने तथा
महर (विवाह उपहार) निर्धारित
करने से पहले तलाक़ दे दो।
(इस स्थिति में) उन्हें कुछ दो।
नियमानुसार धनी पर अपनी शक्ति
के अनुसार तथा निर्धन पर अपनी
शक्ति के अनुसार देना है। यह
उपकारियों पर आवश्यक है।
237. और यदि तुम उन को उन से संभोग
करने से पहले तलाक़ दो इस स्थिति
में कि तुम ने उन के लिये महर
(विवाह उपहार) निर्धारित किया
है तो निर्धारित महर का आधा
देना अनिवार्य है। यह और बात है
कि वह क्षमा कर दें। अथवा वह
क्षमा कर दें जिन के हाथ में विवाह
का बंधन^[2] है। और क्षमा कर देना
संयम से अधिक समीप है। और

لَا جُنَاحَ لَكُمْ إِنْ طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ مَا لَمْ
تَمْسُهُنَّ أَوْ نَفَرْتُمُوهُنَّ فِرْيَضَةٌ
عَلَى الْمُؤْسِعِ قَدَرُهُ وَعَلَى التَّقِيرِ قَدَرُهُ مِنْتَاعًا
يَا مَعْرُوفٌ حَفَاعَ الْمُحْسِنِينَ

وَإِنْ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُهُنَّ وَقَدْ
فَرِضْتُمُوهُنَّ فِرْيَضَةً فَنِصْفُ مَا فَرِضْتُمُوا لَا
أَنْ يَعْفُونَ أَوْ يَغْفِلُوا إِلَيْهِ عُقْدَةٌ
النِّكَارُ وَإِنْ تَغْفِلُوا أَقْرَبُ لِلتَّغْفِلَى وَلَا تَنْسِى
الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ

1 जब तक अवधि पूरी न हो विवाह की बात तथा वचन नहीं होना चाहिये।

2 अर्थात् पति अपनी ओर से अधिक अर्थात् पूरा महर दे तो यह प्रधानता की बात होगी। इन दो आयतों में यह नियम बताया गया है कि यदि विवाह के पश्चात् पति और पत्नी में कोई सम्बंध स्थापित हुआ हो, तो इस स्थिति में यदि महर निर्धारित न किया गया हो तो पति अपनी शक्ति अनुसार जो भी दे सकता हो, उसे अवश्य दे। और यदि महर निर्धारित हो तो इस स्थिति में आधा महर पत्नी को देना अनिवार्य है। और यदि पुरुष इस से अधिक दे सके तो संयम तथा प्रधानता की बात होगी।

आपस में उपकार को न भूलो। तूम्
जो कछु कर रहे हो अल्लाह सब देख
रहा है।

238. नमाजों का, विशेष रूप से
माध्यमिक नमाज़ (अस्र) का ध्यान
रखो।^[1] तथा अल्लाह के लिये विनय
पूर्वक खड़े रहो।
239. और यदि तुम्हें भय^[2] हो तो पैदल
या सवार (जैसे संभव हो) नमाज़
पढ़ो, फिर जब निश्चिंत हो जाओ
तो अल्लाह ने तुम्हें जैसे सिखाया है,
जिसे पहले तुम नहीं जानते थे, वैसे
अल्लाह को याद करो।
240. और जो तुम में से मर जायें, तथा
पत्नियाँ छोड़ जायें, वह अपनी
पत्नियों के लिये एक वर्ष तक उन
को खर्च देने, तथा (घर से) न
निकालने की वसिय्यत कर जायें तो
यदि वह स्वयं निकल जायें^[3] तथा
सामान्य नियमानुसार अपने विषय में
कुछ भी करें, तो तुम पर कोई दोष
नहीं। अल्लाह प्रभावशाली तत्वज्ञ है।
241. तथा जिन स्त्रियों को तलाक़ दी
गयी हो, तो उन्हें भी उचित रूप
से सामग्री मिलनी चाहिये, यह
आज्ञाकारियों पर आवश्यक है।

حَافِظُوا عَلَى الصَّلَاةِ وَالصَّلَاةُ الْوُسْطَىٰ
وَقُوْمًا يَلْهُو قُونِتِينَ^④

فَإِنْ خَفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ لِبَانًا فَإِذَا أَمْنَمْ فَادْكُرُوا
اللَّهَ كَمَا عَلِمْتُمْ مَا لَمْ تَلْعُمُوا أَعْلَمُونَ^⑤

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَدْرُوْنَ أَرْوَاحُهُمْ^۶
وَصَيْبَرَةً لِأَرْوَاهِهِمْ مَتَّعْجَلًا إِلَى الْحُكْمِ عَيْنَهُ
إِحْرَاجٌ فَإِنْ خَرَجُوا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا
فَعَلُوا فِي أَنْفُسِهِمْ مِنْ مَعْرُوفٍ وَاللَّهُ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ^۷

وَالْمُمْلَكَاتِ مَتَّاعٌ بِالْمَعْرُوفِ حَقُّا عَلَى
الْمُتَّقِينَ^۸

1 अस्र की नमाज़ पर ध्यान रखने के लिये इस कारण बल दिया गया है कि व्यवसाय में लीन रहने का समय होता है।

2 अर्थात् शत्रु आदि का।

3 अर्थात् एक वर्ष पूरा होने से पहले। क्यों कि उन की निश्चित अवधि चार महीनों और दस दिन ही निर्धारित है।

242. इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों को उजागर कर देता है ताकि तुम समझो।
243. क्या आप ने उन की दशा पर विचार नहीं किया जो अपने घरों से मौत के भय से निकल गये^[1], जब कि उन की संख्या हज़ारों में थी, तो अल्लाह ने उन से कहा कि मर जाओ, फिर उन्हें जीवित कर दिया। वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये बड़ा उपकारी है, परन्तु अधिकांश लोग कृतज्ञयता नहीं करते^[2]
244. और तुम अल्लाह (के धर्म के समर्थन) के लिये युद्ध करो, और जान लो कि अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।
245. कौन है, जो अल्लाह को अच्छा उधार^[3] देता है, ताकि अल्लाह उसे उस के लिये कई गुना अधिक कर दे? और अल्लाह ही थोड़ा और अधिक करता है, और उसी की ओर तुम सब फेरे जावोगे।
246. हे नबी! क्या आप ने बनी इस्लाम के प्रमुखों के विषय पर विचार नहीं किया, जो मूसा के बाद सामने आया? जब उस ने अपने नबी से कहा: हमारे लिये एक राजा बना दो।

كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ أَيْتَهُ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٧﴾

أَلَّا تَرَى إِلَيَّ الَّذِينَ حَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمُ الْأُولُو
حَدَّرَ الْمَوْتُ فَقَالَ لَهُمُ اللَّهُ مُوْلَاؤْنَا إِنَّا لَعَلَّهُمْ مُّرَدُّونَ
إِنَّ اللَّهَ لَدُّهُ وَقْصِيلٌ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَشْكُرُونَ ﴿٨﴾

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ سَيِّدُ
عِلْمِكُمْ ﴿٩﴾

مَنْ ذَا الَّذِي يُنْهِي رُسُلَ اللَّهِ فَرِضَ اللَّهُ أَعْلَمُ حَسَنَاتِ فِضْلِهِ لَهُ
أَضْعَافًا كَثِيرَةً وَاللَّهُ يَعِيشُ وَيَمْلُظُ وَإِنَّهُ
رُجُوعُهُنَّ ﴿١٠﴾

أَلَّا تَرَى إِلَيَّ الْمُلَائِكَةُ بَنِي إِسْرَاءِيلَ مِنْ بَعْدِ
مُوسَى إِذَا قَاتَلُوا النَّبِيَّ لَهُمْ بُعْثَتْ لَنَّا مِلِكُ الْأَنْجَانَاتِ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ قَالَ هَلْ عَسِيْتُمْ إِنْ كُبَيْرَ عَلَيْكُمْ
الْقَتَالُ أَلَا إِنَّمَا تُلَوَّدُ قَاتِلُوا وَمَا لَنَا أَلَّا نَعْلَمَ فِي

1 इस में बनी इस्लाम के एक गिरोह की ओर संकेत किया गया है।

2 आयत का भावार्थ यह है कि जो लोग मौत से डरते हों, वह जीवन में सफल नहीं हो सकते, तथा जीवन और मौत अल्लाह के हाथ में हैं।

3 अर्थात् जिहाद के लिये धन खर्च करना अल्लाह को उधार देना है।

हम अल्लाह की राह में युद्ध करेंगे, (नबी ने) कहा: ऐसा तो नहीं होगा कि तुम्हें युद्ध का आदेश दे दिया जाये तो अवैज्ञा कर जाओ? उन्होंने कहा: ऐसा नहीं हो सकता कि हम अल्लाह की राह में युद्ध न करें। जब कि हम अपने घरों और अपने पुत्रों से निकाल दिये गये हैं। परन्तु जब उन्हें युद्ध का आदेश दे दिया गया तो उन में से थोड़े के सिवा सब फिर गये। और अल्लाह अत्याचारियों को भली भाँति जानता है।

247. तथा उन के नबी ने कहा: अल्लाह ने "तालूत" को तुम्हारा राजा बना दिया है। वह कहने लगे: "तालूत" हमारा राजा कैसे हो सकता है? हम उस से अधिक राज्य का अधिकार रखते हैं, वह तो बड़ा धनी भी नहीं है। (नबी ने) कहा: अल्लाह ने उसे तुम पर निर्वाचित किया है, और उसे अधिक ज्ञान तथा शारिरिक बल प्रदान किया है। और अल्लाह जिसे चाहे अपना राज्य प्रदान करे तथा अल्लाह ही विशाल, अति ज्ञानी^[1] है।

248. तथा उन के नबी ने उन से कहा: उस के राज्य का लक्षण यह है कि वह ताबूत तुम्हारे पास आयेगा, जिस में तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे लिये संतोष तथा मूसा और हारून के घराने के छोड़े हुये

سَيِّدِ اللَّهِ وَقَدْ أُخْرَجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَأَبْنَائِنَا
فَلَنَا كِتَابٌ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلُّوا لِلْأَقْدِيلِ لِمَنْ هُمْ
وَإِنَّهُ عَلَيْهِمْ بِالظُّلْمِينَ ⑩

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَائُوتَ
مِدْبَانٍ فِي الْوَآتِي يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْكُمْ وَمَنْعَنْ
أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِنَ الْمَالِ
قَالَ إِنَّ اللَّهَ أَصْطَفَهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَ لَهُ بَسْطَةً فِي
الْعِلْمِ وَالْحِسْبَرِ وَاللَّهُ يُؤْتِ مُلْكَهُ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ
وَاسْعُ عَلَيْهِ ⑪

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ مُلْكَكُمْ أَنْ يَأْتِيَكُمْ
الثَّابُوتُ رِفْعَهُ سَكِينَتُهُ مِنْ رَتِيكُهُ وَقِيَةً مِنْهَا تَرَكَهُ
أَلْ مُوسَى وَالْهُرُونَ حَمِيلُهُ الْمُنْكَكَهُ إِنَّ فِي
ذِلِكَ لَرَاهْ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ⑫

1 अर्थात् उसी के अधिकार में सब कुछ है। और कौन राज्य की क्षमता रखता है? उसे भी वही जानता है।

अबशेष हैं, उसे फ़रिश्ते उठाये हुये होंगे। निश्चय यदि तुम ईमान वाले हो तो इस में तुम्हारे लिये बड़ी निशानी^[1] (लक्षण) है।

249. फिर जब तालूत सेना ले कर चला, तो उस ने कहा: निश्चय अल्लाह एक नहर द्वारा तुम्हारी परीक्षा लेने वाला है। तो जो उस में से पीयेगा वह मेरा साथ नहीं देगा, और जो उसे नहीं चखेगा, वह मेरा साथ देगा, परन्तु जो अपने हाथ से चुल्हा भर पी ले (तो कोई दोष नहीं। तो थोड़े के सिवा सब ने उस में से पी लिया। फिर जब उस (तालूत) ने और जो उस के साथ ईमान लाये, उस (नहर) को पार किया, तो कहा आज हम में (शत्रु) जालत और उस की सेना से युद्ध करने की शक्ति नहीं। (परन्तु) जो समझ रहे थे कि उन्हें अल्लाह से मिलना है उन्होंने कहा: बहुत से छोटे दल अल्लाह की अनुमति से भारी दलों पर विजय प्राप्त कर चुके हैं और अल्लाह सहनशीलों के साथ है।

250. और जब वह जालूत और उस की सेना के सम्मुख हुये तो प्रार्थना की, हे हमारे पालनहार! हम को धैर्य प्रदान कर। तथा हमारे चरणों को (रणक्षेत्र में) स्थिर कर दो। और काफिरों पर हमारी सहायता कर।

251. तो उन्होंने अल्लाह की अनुमति से

فَلَمَّا قَصَلَ طَالُوتٌ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَدِئُ الْفَتْحِ فَإِنَّمَا شَرَبَ مِنْهُ فَلَمْ يُسْرِيْمْ فَوْقَ أَعْرَافِ عَرَقَةٍ تَبَرَّأَ فَلَمَّا جَاءَهُ مُوسَىٰ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْجَلُوتِ وَجْنُودِهِ قَالَ الَّذِينَ يُظْهِرُونَ أَنَّهُمْ مُلْكُو اللَّهِ أَكْلَمُ مِنْ فِتْنَةٍ قَلِيلٌ مَوْلَاهُ غَلِيقَتْ فِتْنَةً كَثِيرَةً بِلَادُنْ اللَّهُ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ②

وَلَمَّا بَرَزَ الْجَلُوتُ وَجْنُودُهُ قَالُوا رَبِّنَا أَفْرُغْ عَلَيْنَا صِرْبُرْ وَتَبَرَّ أَفْدَأْمَنَا وَأَنْصَرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَفِرِيْنَ ③

فَهَزَمُوهُمْ بِلَادِنْ اللَّهُ وَقَتَلُ دَاؤُدْجَلُوتَ وَاللَّهُ

1 अर्थात् अल्लाह की ओर से तालूत को निर्वाचित किये जाने की।

उन्हें पराजित कर दिया, और दावूद ने जालूत का बध कर दिया। तथा अल्लाह ने उस (दावूद)^[1] को राज्य और हिक्मत (नुबूवत) प्रदान की, तथा उसे जो ज्ञान चाहा दिया, और यदि अल्लाह कुछ लोगों की कुछ लोगों द्वारा रक्षा न करता तो धरती की व्यवस्था बिगड़ जाती, परन्तु संसार वासियों पर अल्लाह बड़ा दयाशील है।

252. (हे नबी!) यह अल्लाह की आयतें हैं, जो हम आप को सुना रहे हैं, तथा वास्तव में आप रसूलों में से हैं।

253. वह रसूल हैं उन को हम ने एक दूसरे पर प्रधानता दी है। उन में से कुछ ने अल्लाह से बात की। और कुछ को कई श्रेणियाँ ऊँचा किया। तथा मरयम के पुत्र ईसा को खुली निशानियाँ दी। और रुहुलकुदुस^[2] द्वारा उसे समर्थन दिया। और यदि अल्लाह चाहता तो इन रसूलों के पश्चात् खुली निशानियाँ आ जाने पर लोग आपस में न लड़ते, परन्तु उन्होंने विभेद किया, तो उन में से कोई ईमान लाया, और किसी ने कुफ्र किया। और यदि अल्लाह चाहता तो

اللَّهُ الْمُنَّاَكُ وَالْعَلِيُّهُ وَعَلَيْهِ مَا يَأْتِي مَوْلَوَادَفَعَ
اللَّهُ النَّاَسَ بَعْضُهُمْ بَعْضٌ لَفَسَدَتِ الْأَرْضُ
وَلِكَيْنَ اللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَلَمِينَ ①

تَلَكَ أَيُّهُ اللَّهُ تَشْتُرُهُ فَاعْلَمُكَ بِالْحَقِّ
وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ②

تَلَكَ الرَّسُولُ فَصَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيْهِ
مِنْهُمْ مَنْ كَلَمَ اللَّهُ وَرَقَعَ بَعْضُهُمْ دَرَجَتٌ
وَإِنَّنَا عَيْنَى ابْنَ مَرِيَمَ الْبَيْتَ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ
الْقُدُّسِ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أُفْتَلَ الَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ
مَنْ كَعْدَ نَاجِعَهُمُ الْبَيْتَ وَلِكَيْنَ اخْتَلَوْا فِيهِمْ
أَمَنَ وَمِنْهُمْ مَنْ كَفَرَ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَفْتَلَوْا
وَلِكَيْنَ اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ③

1. दावूद अलैहिस्सलाम तालूत की सेना में एक सैनिक थे, जिन को अल्लाह ने राज्य देने के साथ नबी भी बनाया। उन्हीं के पुत्र सुलैमान अलैहिस्सलाम थे। दावूद अलैहिस्सलाम को अल्लाह ने धर्मपुस्तक ज़बूर प्रदान की। सूरह साद में उन की कथा आ रही है।

2. "रुहुलकुदुस" का शाब्दिक अर्थ: पवित्रात्मा है। और इस से अभिप्रेत एक फरिशता है, जिस का नाम "जिब्रील" अलैहिस्सलाम है।

वह नहीं लड़ते, परन्तु अल्लाह जो चाहता है करता है।

254. हे ईमान वालो! हम ने तुम्हें जो कुछ दिया है उस में से दान करो, उस दिन (अर्थात् प्रलय) के आने से पहले, जिस में कोई सौदा नहीं होगा, और न कोई मैत्री, तथा न कोई अनुशंसा (सिफारिश) काम आयेगी, तथा काफिर लोग^[1] ही अत्याचारी^[2] हैं।

255. अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित^[3] तथा नित्य स्थाई है, उसे ऊँघ तथा निद्रा नहीं आती। आकाश और धरती में जो कुछ है, सब उसी का^[4] है। कौन है जो उस के पास उस की अनुमति के बिना अनुशंसा (सिफारिश) कर सके? जो कुछ उन के समक्ष और जो कुछ उन से ओझल है सब को जानता है। वह उस के ज्ञान में से वही जान सकते हैं जिसे वह चाहे। उस की कुर्सी आकाश तथा धरती को समोये हुये हैं। उन दोनों की रक्षा उसे नहीं थकाती। वही सर्वोच्च^[5] महान् है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّفَعُوا مِنَ الْأَذْفَالِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَنِي يَوْمٌ لَّا يَعْلَمُ فِيهِ وَلَا دَخْلَةٌ وَلَا شَفَاعَةٌ وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢﴾

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَلَا تَوْمَدْنَاهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ لَا يَأْذِنُهُ يَعْلَمُ بِإِيمَانِ أَيِّنْ يُهُمْ وَمَا خَلَقُوهُ وَلَا يُجْعِلُونَ بِئْسُ مَنْ عَلِمَهُ إِلَيْهَا شَاءَ وَسَعَ لِرَبِّيَّةِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَا يَنْهَا حَفْظُهُمَا وَهُوَ عَلَىٰ الْعَظِيمِ ﴿٣﴾

1 अर्थात् जो इस तथ्य को नहीं मानते वही स्वयं को हानि पहुँचा रहे हैं।

2 आयत का भावार्थ यह है कि परलोक की मुकित ईमान और सदाचार पर निर्भर है, न वहाँ मुकित का सौदा होगा न मैत्री और सिफारिश काम आयेगी।

3 अर्थात् स्वयंभू, अनन्त है।

4 अर्थात् जो स्वयं स्थित तथा सब उस की सहायता से स्थित है।

5 यह कुर्�আn की सর्वमहान् आयत है। और इस का नाम "आयतुलकुर्सी" है। हदीस में इस की बड़ी प्रधानता बताई गई है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

256. धर्म में बल प्रयोग नहीं। सुपथ कुपथ से अलग हो चुका है। अतः अब जो तागूत (अर्थात् अल्लाह के सिवा पूज्यों) को नकार दे, तथा अल्लाह पर ईमान लाये तो उस ने दृढ़ कड़ा (सहारा) पकड़ लिया जो कभी खण्डित नहीं हो सकता। तथा अल्लाह सब कुछ सुनता जानता^[1] है।

257. अल्लाह उन का सहायक है जो ईमान लाये। वह उन को अंधेरों से निकालता है। और प्रकाश में लाता है। और जो काफिर (विद्वासहीन) हैं। उन के सहायक तागूत (उन के मिथ्या पूज्य) हैं। जो उन्हें प्रकाश से अंधेरी की ओर ले जाते हैं। यही नारकी है, जो उस में सदावासी होंगे।

258. हे नबी! क्या आप ने उस व्यक्ति की दशा पर विचार नहीं किया, जिस ने इब्राहीम से उस के पालनहार के विषय में विवाद किया, इसलिये कि अल्लाह ने उसे राज्य दिया था? जब इब्राहीम ने कहा: मेरा पालनहार वह है जो जीवित करता तथा मारता है तो उस ने कहा: मैं भी जीवित^[2] करता

لَا إِكْرَاهٌ فِي الدِّينِ قَدْ بَيَنَ الرُّشُدُ مِنَ الْغَيْرِ
فَمَنْ يَكْفُرُ بِالظَّاغُوتِ وَلَوْمَنْ يَأْتِهِ نَعْذِبٌ
إِسْمَكَ بِالْمُرْوَةِ الْوُثْقَى لَا إِنْصَامَ لَهَا وَاللهُ
سَمِيعٌ عَلَيْهِ^(۱)

اللَّهُ وَلِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا مُبْرَجُهُمْ مِنَ الظَّلَمِ
إِلَى التُّورَةِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أُولَئِكُمُ الظَّالِمُونَ
يُبَرِّجُوهُمْ مِنَ التُّورَةِ إِلَى الظَّلَمِ أُولَئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ فَهُمْ فِيهَا خَلِدُونَ^(۲)

أَنَّمَا تَرَى إِلَى الَّذِي حَاجَرَ إِبْرَاهِيمَ فِي رَبِّهِ أَنَّ
إِلَهُهُ اللَّهُ الْمُلْكُ إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّي الَّذِي
يُهْبِي وَيُمْبِي ثُقَلًا كَانَ أَهْبِي وَأَمْبِي ثُقَلًا
إِبْرَاهِيمُ قَالَ أَنَّمَا يُهْبِي وَيُمْبِي ثُقَلًا
إِلَهُهُ فَوَأَنَّ اللَّهُ يَأْتِي بِالثَّمَنِ مِنَ الشَّرِقِ
قَاتِلُ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبِهِتَ الَّذِي كَفَرَ وَاللَّهُ
لَا يَهُدِي الْقَوْمَ الظَّلِيمِينَ^(۳)

1. आयत का भावार्थ यह है कि धर्म तथा आस्था के विषय में बल प्रयोग की अनुमति नहीं, धर्म दिल की आस्था और विश्वास की चीज़ है। जो शिक्षा दिक्षा से पैदा हो सकता है, न कि बल प्रयोग और दबाव से। इस में यह संकेत भी है कि इस्लाम में जिहाद अत्याचार को रोकने तथा सत्यर्थ की रक्षा के लिये है न कि धर्म के प्रसार के लिये। धर्म के प्रसार का साधन एक ही है, और वह प्रचार है, सत्य प्रकाश है। यदि अंधकार हो तो केवल प्रकाश की आवश्यकता है। फिर प्रकाश जिस ओर फिरेगा तो अंधकार स्वयं दूर हो जायेगा।

2. अर्थात् जिसे चाहूँ मार दूँ, और जिसे चाहूँ क्षमा कर दूँ। इस आयत में अल्लाह

तथा मारता हूँ। इब्राहीम ने कहा:
अल्लाह सूर्य को पूर्व से लाता है, तू
उसे पश्चिम से ला दे। (यह सुन कर)
काफिर चकित रह गया। और अल्लाह
अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

259. अथवा उस व्यक्ति के प्रकार जो
एक ऐसी नगरी से गुज़रा जो अपनी
छतों सहित ध्वस्त पड़ी थी? उस ने
कहा: अल्लाह इस के ध्वस्त हो जाने
के पश्चात् इसे कैसे जीवित (आबाद)
करेगा? फिर अल्लाह ने उसे सौ वर्ष
तक मौत दे दी। फिर उसे जीवित
किया। और कहा: तुम कितनी अवधि
तक मुर्द पड़े रहे? उस ने कहा:
एक दिन अथवा दिन के कुछ क्षण।
(अल्लाह ने) कहा: बल्कि तुम सौ
वर्ष तक पड़े रहे। अपने खाने पीने
को देखो कि तनिक परिवर्तन नहीं
हुआ है। तथा अपने गधे की ओर
देखो, ताकि हम तुम्हें लोगों के लिये
एक निशानी (चिन्ह) बना दें। तथा
(गधे की) स्थियों को देखो कि हम
उसे कैसे खड़ा करते हैं। और उन
पर केसे माँस चढ़ाते हैं। इस प्रकार
जब उस के समक्ष बातें उजागर हो
गयीं, तो वह^[1] पुकार उठा कि मुझे
ज्ञान (प्रत्यक्ष) हो गया कि अल्लाह
जो चाहे कर सकता है।

के विष्व व्यवस्थापक होने का प्रमाणिकरण है। और इस के पश्चात् की आयत में
उस के मुर्द को जीवित करने की शक्ति का प्रमाणिकरण है।

1) इस व्यक्ति के विषय में भाष्यकारों ने विभेद किया है। परन्तु सम्भवतः वह
व्यक्ति (उज़ैर) थे। और नगरी (बैतुल मक्किदस) थी। जिसे बुख़त नस्सर राजा ने
आक्रमण कर के उजाड़ दिया था। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

أَوْ كَائِنُ مَرْعَلٌ قَرِيبٌ وَهِيَ خَوْيَةٌ عَلَى
عُرُوشَهَا قَالَ أَتِيْ يُخْبِي هَذِهِ اللَّهُ بَعْدَ
مَوْتِهَا فَإِنَّمَا اللَّهُ مَا يَشَاءُ نَمْ بَعْثَةٌ قَالَ
كُلُّ إِيمَانٍ قَالَ لَيْسَتِ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ
قَالَ بَلْ لَيْسَتِ مَا يَشَاءُ عَالِمٌ قَاتَنَظَرَ إِلَى
طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ كُمْبَسَةٌ وَأَنْظَرَ إِلَى
جَمَارِكَ وَلَنْجَعَلَكَ أَيَّهُ لِلثَّابِسِ وَأَنْظَرَ
إِلَى الْعُظَامِ كَيْفَ نُنْشِرُهَا نَمْ نَكْسُوهَا لَعْنَاهُ
فَلَمَّا كَبَيْكَ لَهُ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ[®]

260. तथा (याद करो) जब इब्राहीम ने कहा: हे मेरे पालनहार! मुझे दिखा दे कि तू मुर्दे को कैसे जीवित कर देता है? कहा: क्या तुम ईमान नहीं लाये? उस ने कहा: क्यों नहीं? परन्तु ताकि मेरे दिल को संतोष हो जाये अल्लाह ने कहा: चार पक्षी ले आओ। और उन को अपने से परचा लो। (फिर उन को बध कर के) उन का एक एक अंश (भाग) पर्वत पर रख दो। फिर उन को पकारो। वह तुम्हारे पास दौड़े चले आयेंगे। और यह जान ले कि अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

261. जो अल्लाह की राह में अपने धनों को दान करते हैं, उस की दशा, उस एक दाने जैसी है जिस ने सात बालियाँ उगाई हों। (उस की) प्रत्येक बाली में सौ दाने हों। और अल्लाह जिसे चाहे और भी अधिक देता है। तथा अल्लाह विशाल^[1] ज्ञानी है।

262. जो अपना धन अल्लाह की राह में दान करते हैं, फिर दान करने के पश्चात् उपकार नहीं जताते, और न (जिसे दिया हो) दुःख देते हैं उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास उन का प्रतिकार (बदला) है, और उन पर कोई डर नहीं होगा, और न ही वह उदासीन^[2] होंगे।

263. भली बात बोलना तथा क्षमा, उस दान से उत्तम है जिस के पश्चात्

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّيْ كَيْفَ تُهْبِيْ الْمُوْتَىْ
قَالَ أَوْلَئِكُمْ نَوْمُنْ: قَالَ بَلْ وَلَكِنْ لِيْطَهِيْنَ قَلْيَىْ
قَالَ فَخُدْ أَرْبَعَةً مِنَ الظَّلَّارِ فَصَرْهُنَ إِلَيْكَ ثُمَّ
أَجْعَلْ عَلَىْ طَلْ جَبَلَ قَنْهُنَ جُزْءَ اثْلَادُهُنَ
يَا إِيْكِنَكَ سَعْيَا وَاعْلَمَ أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

مَقْلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
كَمْثِلِ حَجَةِ الْيَمِينِ سَبْعَ سَنَائِلَ فِي كُلِّ سُبْلَكِ
مِنْهُ حَجَةُهُ وَاللَّهُ يُضَعِّفُ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْهُ
وَإِسْمَ عَلِيِّمٌ

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ
لَا يُنْبِئُونَ مَا انْفَقُوا مَنْذُ لَا أَذَى لَهُ أَجْرٌ هُوَ
عِنْدَ رَبِّهِ وَلَا خُوفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

قَوْلٌ مَعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِنْ صَدَقَةٍ يَتَبَعَهَا

1 अर्थात् उस का प्रदान विशाल है, और उस के योग्य को जानता है।

2 अर्थात् संसार में दान न करने पर कोई संताप होगा।

दुःख दिया जाये। तथा अल्लाह निस्पृह सहनशील है।

اَذْلَى وَاللَّهُ عَنِّي حَلِيمٌ ﴿٧﴾

264. हे ईमान वालो! उस व्यक्ति के समान उपकार जता कर तथा दुःख दे कर, अपने दानों को वर्षा न करो जो लोगों को दिखाने के लिये दान करता है, और अल्लाह तथा अन्तिम दिन (परलोक) पर ईमान नहीं रखता। उस का उदाहरण उस चटेल पत्थर जैसा है जिस पर मिट्टी पड़ी हो, और उस पर घोर वर्षा हो जाये, और उस (पत्थर) को चटेल छोड़ दो। वह अपनी कमाई का कछु भी न पा सकेंगे, और अल्लाह काफ़िरों को सीधी डगर नहीं दिखाता।
265. तथा उन की उपमा जो अपना धन अल्लाह की प्रसन्नता की इच्छा में अपने मन की स्थिरता के साथ दान करते हैं, उस बाग़ (उद्यान) जैसी है, जो पृथ्वी तल के किसी ऊँचे भाग पर हो, उस पर घोर वर्षा हुई, तो दुगना फल लाया, और यदि घोर वर्षा नहीं हुई, तो (उस के लिये) फुहार ही बस^[1] हो, तथा तुम जो कछु कर रहे हो उसे अल्लाह देख रहा है।
266. क्या तुम में से कोई चाहेगा कि उस के खजूर तथा अङ्गूरों के बाग़ हों,

يَا يَاهُمَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُبْطِلُو اصْدَقَاتُكُمْ بِالْمُبَغَّضِ
وَالَّذِي كَانَ الَّذِي يُنْعَقُ مَالَهُ رِئَامُ الْكَافِرِينَ وَلَا
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْأَخْرَى فَمِثْلُهُ كَمِثْلِ صَفْوَانَ
عَلَيْهِ وَرَبُّ فَاصَابَهُ وَإِنْ قَرَرْهُ صَلْدَ الْأَيْقَنِدُونَ
عَلَى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا وَاللَّهُ لَيَهْدِي الْقَوْمَ
الْكَافِرِينَ ﴿٨﴾

وَمِثْلُ الَّذِينَ يُنْفَقُونَ أَمْوَالَهُمْ أَبْتِغَاءَ
مَرْضَاتِ اللَّهِ وَسَيِّئَاتِهِنَّ أَنْفَسُهُمْ كَمِثْلِ
جَنَاحِ لِرَبِّوْقَةِ أَصَابَهَا وَإِلَّا قَاتَتْ أَكْلَهَا
ضَعْفَيْنِ فَإِنْ لَحِقْبِسُهَا وَإِلَّا قَطَلَنِ ﴿٩﴾
بِمَا نَعْمَلُونَ بِصِيرَتِهِنَّ

أَبُودُّ أَحَدُكُمْ أَنْ تَكُونَ لَهُ جَنَاحٌ وَمَنْ تَفْيِيلٌ

1. यहाँ से अल्लाह की प्रसन्नता के लिये जिहाद तथा दीन, दुखियों की सहायता के लिये धन दान करने की विभिन्न रूप से प्रेरणा दी जा रही है। भावार्थ यह है कि यदि निः स्वार्थता से थोड़ा दान भी किया जाये, तो शुभ होता है, जैसे वर्षा की फुहारें भी एक बाग़ (उद्यान) को हरा भरा कर देती हैं।

जिन में नहरें वह रही हों, उन में उस के लिये प्रत्येक प्रकार के फल हों, तथा वह बूढ़ा हो गया हो, और उस के निर्बल बच्चे हों, फिर वह बगोल के आधात से जिस में आग हो, झुलस जाये।^[1] इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये आयतों को उजागर करता है, ताकि तुम सोच विचार करो।

267. हे ईमान वालो! उन स्वच्छ चीजों में से जो तुम ने कमाई है, तथा उन चीजों में से जो हम ने तुम्हारे लिये धरती से उपजाई है, दान करो। तथा उस में से उस चीज को दान करने का निश्चय न करो जिसे तुम स्वयं न ले सको, परन्तु यह कि अदेखी कर जाओ। तथा जान लो कि अल्लाह निःस्पृह प्रशंसित है।

268. शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है, तथा निलंज्जा की प्रेरणा देता है, तथा अल्लाह तुम को अपनी क्षमा और अधिक देने का वचन देता है, तथा अल्लाह विशाल जानी है।

269. वह जिसे चाहे प्रबोध (धर्म की समझ) प्रदान करता है, और जिसे प्रबोध प्रदान कर दिया गया, उसे

وَأَعْنَابٌ بَجْرُونِ مِنْ تَمْحُورِهَا الْأَنْهَرُوكَةُ فِيهَا مِنْ كُلِّ الشَّمَرَاتِ وَأَصَابَةَ الْكَبِرَوَلَهُ دُرَرَةٌ ضَعَافَةٌ قَاصِمَاتِهَا أَغْصَارٌ فِيهَا نَارٌ فَأَخْتَرَقَتْ كَذَلِكَ يُبَرِّئُنَ اللَّهُ لَكُمُ الْأَيْتِ لَعَلَّكُمْ تَتَقَرَّبُونَ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّفُوَامُ طَيِّبَتْ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَلَا يَتَّقْبَلُوا الْحَيْثَ مِنْهُ تُنْفَقُونَ وَلَسْتُ بِإِذْنِيْهِ إِلَّا أَنْ تُعِظِّمُوا فِيهِ وَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَفِيَّ حَمِيدٌ

أَشْيَطْنُ يَعِدُكُمُ الْفَقَرُ وَيَأْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَاءِ وَاللَّهُ يَعِدُكُمْ مَغْفِرَةً مِنْهُ وَفَضْلًا وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلَيْهِ

يُؤْتَى الْحِكْمَةُ مَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يُؤْتَ إِلْحَانَهُ فَقَدْ أُوتَى حِلْيَةً كَثِيرًا وَمَا

1 अर्थात् यही दशा प्रलय के दिन काफिर की होगी। उस के पास फल पाने के लिये कोई कर्म नहीं होगा। और न कर्म का अवसर होगा। तथा जैसे उस के निर्बल बच्चे उस के काम नहीं आ सके, उसी प्रकार उस श का दिखावे का दान भी काम नहीं आयेगा, वह अपनी आवश्यकता के समय अपने कर्मों के फल से बच्चित कर दिया जायेगा। जैसे इस व्यक्ति ने अपने बुढ़ापे तथा बच्चों की निर्बलता के समय अपना बाग खो दिया।

बड़ा कल्याण मिल गया, और समझ वाले ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।

270. तथा तुम जो भी दान करो, अथवा मनौती^[1] मानो, अल्लाह उसे जानता है, तथा अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।

271. यदि तुम खुले दान करो, तो वह भी अच्छा है, तथा यदि छूपा कर करो और कंगालों को दो तो वह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा^[2] है। यह तुम से तुम्हारे पापों को दूर कर देगा। तथा तुम जो कछ कर रहे हो उस से अल्लाह सूचित है।

272. उन को सीधी डगर पर लगा देना आप का दायित्व नहीं, परन्तु अल्लाह जिसे चाहे सीधी डगर पर लगा देता है। तथा तुम जो भी दान देते हो तो अपने लाभ के लिये देते हो, तथा तुम अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये ही देते हो, तथा तुम जो भी दान दोगे, तुम्हें उस का भरपर प्रतिफल (बदला) दिया जायेगा, और तुम पर अत्याचार^[3] नहीं किया जायेगा।

273. दान उन निर्धनों (कंगालों) के लिये है जो अल्लाह की राह में ऐसे घिर-

1 अर्थात् अल्लाह की विशेष रूप से इबादत (वन्दना) करने का संकल्प ले। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

2 आयत का भावार्थ यह है कि दिखावे के दान से रोकने का यह अर्थ नहीं है कि छूपा कर ही दान दिया जाये, बल्कि उस का अर्थ केवल यह है कि निःस्वार्थ दान जैसे भी दिया जाये, उस का प्रतिफल मिलेगा।

3 अर्थात् उस के प्रतिफल में कोई कमी न की जायेगी।

يَدْكُرُ إِلَّا أَوْلُ الْأَلْبَابِ ⑩

وَمَا أَنْفَقُمُ مِنْ نَفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُهُ مِنْ
ثَدْرٍ فِي كُلِّ الْأَنْوَارِ وَمَا لِلظَّالِمِينَ
مِنْ أَنْصَارٍ ⑪

إِنْ تُبْدِي وَالصَّدَقَاتِ فَإِنْعِمَّاهُ وَإِنْ
تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا الْفَقَرَاءُ فَهُوَ خَيْرٌ
لَّهُمْ وَيَكْفِرُ عَنْكُمْ مِنْ سَيِّئَاتِكُمْ وَاللهُ
بِمَا تَعْمَلُونَ حَمِيرٌ ⑫

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدًى لَّهُمْ وَلِكُنَّ اللَّهَ يَهْدِي
مَنْ يَشَاءُ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ
فَلَا يُنْكِسُكُمْ وَمَا تُنْفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ
وَجْهِ اللَّهِ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ يُوَقَّطُ إِلَيْكُمْ
وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ⑬

لِلْفَقَرَاءِ الَّذِينَ أَحْسَرُوا فِي سَيِّئَاتِهِمْ

गये हों कि धरती में दौड़ भाग न कर^[1] सकते हों, उन्हें अज्ञान लोग न माँगने के कारण धनी समझते हैं, वह लोगों के पीछे पड़ कर नहीं माँगते। तुम उन्हें उन के लक्षणों से पहचान लोगों तथा जो भी धन तुम दान करोगे, निस्सन्देह अल्लाह उसे भली भाँति जानने वाला है।

274. जो लोग अपना धन रात दिन, खुले छुपे दान करते हैं तो उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास, उन का प्रतिफल (बदला) है। और उन को कोई डर नहीं होगा। और न वह उदासीन होंगे।

275. जो लोग व्याज खाते हैं ऐसे उठेंगे जैसे वह उठता है जिसे शैतान ने छू कर उन्मत्त कर दिया हो। उन की यह दशा इस कारण होगी कि उन्होंने कहा कि व्यापार भी तो व्याज ही जैसा है, जब कि अल्लाह ने व्यापार को हलाल (वैध), तथा व्याज को हराम (अवैध) कर दिया^[2] है। अब

لَا يَسْتَطِعُونَ صَرْبَانِ الْأَرْضِ يَعْصِمُهُ
الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءُ مِنَ التَّعْقِفِ تَعْرِفُهُمْ
بِسِيمَاهُ لَا يَسْتَلُوْنَ النَّاسَ إِلَّا حَافِّاً مَوْمَا
شَفَقُوا مِنْ خَيْرٍ فَأَنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيهِمْ

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ بِالْإِيمَانِ
وَالَّذِينَ يَرْسِلُونَ وَعْلَامِيَّةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ
عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْرَثُونَ ⑥

الَّذِينَ يَا كُلُّونَ إِلَيْهِمُ الْأَيْقُومُونَ إِلَّا كُمَا
يَقُومُ الَّذِي يَسْخَبُهُ الشَّيْطَانُ مِنَ الْمُنَى
ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَاتُلُوكُمْ بَيْعٌ مُثُلُ الْإِلَيْهِمْ وَأَحَدٌ
اللَّهُ الْبَيْعُ وَحْرَمَ الرَّبِّلَوْاقُونُ جَاءَهُمْ مَوْعِظَةً
مِنْ رَبِّهِمْ فَأَنْتَهُمْ فَلَهُمْ نَاسَلَةٌ وَأَمْرَةٌ إِلَى اللَّهِ
وَمَنْ عَادَ فَأُولَئِكَ أَصْحَبُ التَّلَارِهِمْ فِيهَا
حَلِيدُونَ ⑦

1 इस से सांकेतिक वह मुहाजिर हैं जो मक्का से मदीना हिज्रत कर गये। जिस के कारण उन का सारा सामान मक्का में छूट गया। और अब उन के पास कुछ भी नहीं बचा। परन्तु वह लोगों के सामने हाथ फैला कर भीख नहीं माँगते।

2 इस्लाम मानव में परस्पर प्रेम तथा सहानुभूति उत्पन्न करना चाहता है, इसी कारण उस ने दान करने का निर्देश दिया है कि एक मानव दूसरे की आवश्यकता पूर्ति करो। तथा उस की आवश्यकता को अपनी आवश्यकता समझो। परन्तु व्याज खाने की मांसिकता सर्वथा इस के विपरीत है। व्याज भक्षी किसी की आवश्यकता को देखता है तो उस के भीतर उस की सहायता की भावना उत्पन्न नहीं होती। वह उस की विवशता से अपना स्वार्थ पूरा करता तथा उस की आवश्यकता को अपने धनी होने का साधन बनाता है। और क्रमशः एक निर्दयी हिंसक पशु बन

जिस के पास उस के पालनहार की ओर से निर्देश आ गया, और इस कारण उस से रुक गया, तो जो कुछ पहले लिया वह उसी का हो गया। तथा उस का मुआमला अल्लाह के हवाले है, और जो फिर वही करें तो वही नारकी है, जो उस में सदावासी होंगे।

276. अल्लाह व्याज को मिटाता है, और दानों को बढ़ाता है। और अल्लाह किसी कृतज्ञ घोर पापी से प्रेम नहीं करता।
277. वास्तव में जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये, तथा नमाज़ की स्थापना करते रहे, और ज़कात देते रहे तो उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास उन का प्रतिफल है, और उन्हें कोई डर नहीं होगा और न उदासीन होंगे।
278. हे ईमान वालो! अल्लाह से डरो, और जो व्याज शेष रह गया है उसे छोड़ दो, यदि तुम ईमान रखने वाले हो तो।
279. और यदि तुम ने ऐसा नहीं किया, तो अल्लाह तथा उस के रसूल से युद्ध के लिये तैयार हो जाओ। और यदि तुम तौबा (क्षमा याचना) कर लो तो तुम्हारे लिये तुम्हारा मूल धन है।

कर रह जाता है, इस के सिवा व्याज की रीति धन को सीमित करती है, जब कि इस्लाम धन को फैलाना चाहता है, इस के लिये व्याज को मिटाना, तथा दान की भावना का उत्थान चाहता है। यदि दान की भावना का पूर्णतः उत्थान हो जाये तो कोई व्यक्ति दीन तथा निर्धन रह ही नहीं सकता।

يَمْحُقُ اللَّهُ الرِّبُوَا وَيُرِيبُ الصَّدَقَاتِ وَاللَّهُ
لِمُحِبِّ كُلِّ كَلَارِ أَثِيمٍ ⑩

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلَاحَتِ وَأَقَامُوا
الصَّلَاةَ وَأَتُوا الزَّكَاةَ لَهُمْ أَجْرٌ هُمْ عِنْدَ
رَبِّهِمْ وَلَا خُوفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزُنُونَ ⑪

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذْ قُوَّا اللَّهُ وَذُرُوا مَابَقَى
مِنَ الرِّبُوَا لَمْ يُنْكِنُ مُؤْمِنِينَ ⑫

فَإِنْ أَخْرَجُوكُمْ فَإِذَا ذُرْتُمْ حَرْبًا مِنَ اللَّهِ
وَرَسُولِهِ وَلَا تُبْتُمُ فَلَمَّا رُوْسُ أَمْوَالَكُمْ
لَا نَظِلُّمُونَ وَلَا نُظْلَمُونَ ⑬

न तुम अत्याचार करो^[1], न तुम पर अत्याचार किया जाये।

280. और यदि तुम्हारा ऋणी असुविधा में हो तो उसे सुविधा तक अवसर दो। और अगर क्षमा कर दो (अर्थात् दान कर दो) तो यह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा है, यदि तुम समझो तो।
281. तथा उस दिन से डरो जिस में तुम अल्लाह की ओर फेरे जाओगे, फिर प्रत्येक प्राणी को उस की कमाई का भरपर प्रतिकार दिया जायेगा, तथा किसी पर अत्याचार न होगा।
282. हे ईमान वालो! जब तुम आपस में किसी निश्चित अवधि तक के लिये उधार लेन देन करो, तो उसे लिख लिया करो, तुम्हारे बीच न्याय के साथ कोई लेखक लिखे, जिसे अल्लाह ने लिखने की योग्यता दी है। वह लिखने से इन्कार न करो तथा वह लिखवाये जिस पर उधार है। और अपने पालनहार अल्लाह से डरो। और उस में से कुछ कम न करो। यदि जिस पर उधार है वह निर्बोध अथवा निर्बल हो, अथवा लिखवा न सकता हो तो उस का संरक्षक न्याय के साथ लिखवाये। तथा अपने में से दो पुरुषों को साक्षी (गवाह) बना लो। यदि दो पुरुष न हों तो एक पुरुष तथा दो स्त्रियों को उन साक्षियों में से जिन को साक्षी बनाना पसन्द करो। ताकि दोनों

فَلَمْ يَكُنْ ذُو عُشْرَةً فَنَظَرَ إِلَى مَيْسَرَةٍ وَأَنْ تَصَدِّقُوا خَيْرًا لَمْ يَكُنْ لَكُمْ تَعْلَمُونَ ۝

وَإِنْفَوَا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى اللَّهِ تَحْتَوْنِي
كُلُّ نَفْسٍ تَأْكِبُتْ وَهُنْ لَا يَظْلَمُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا أَتَتْهُمْ بِدَيْنُهُنَّ إِلَى أَحَدٍ
مُسْئِلٍ فَإِنْ كَبُوْرٌ وَلَيَكْتَبْ بِيَنْتَلْمُ كَاتِبْ بِالْعَدْلِ
وَلَا يَأْبَيْ كَاتِبْ أَنْ يَكْتَبْ كَمَا عَلَمَهُ اللَّهُ فَلَيَكْتَبْ
وَلَيَنْهِلِلِ الَّذِي عَلَيْهِ الْحُقْقُ وَلَيَنْتَقِيَ اللَّهُ رَبِّهِ وَلَا
يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْئًا فَإِنْ كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ الْحُقْقُ
سَفِيهِاً أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْتَطِعُمْ أَنْ يَبْلِلْ هُوَ
فَلَيَنْهِلِلِ وَلَيَلْتَهِ بِالْعَدْلِ وَاسْتَهْدِ وَأَشْهِدِهِنَّ
مِنْ رِجَالِ الْكُفَّارِ فَإِنْ لَمْ يَكُونُ نَارًا جُلِّيْنِ فَرَجُلٌ
وَأَمْرَاتِنِ وَمَنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشَّهَدَاءِ أَنْ
تَضْلِلَ إِحْدَى هُنْمَا فَتَذَكَّرَ حَدَّهُمَا الْأُخْرَى وَلَا
يَأْبَ الشَّهَدَاءِ أَمْ إِذَا مَأْدُغُوا وَلَا سَمُوا أَنْ
تَكْتُبُوهُ صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا إِلَى أَحَدِهِ ذَلِكُمْ أَقْسَطُ
عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنِي الْأَسْرَارِ إِنَّمَا
إِلَّا أَنْ تَكُونَ بِعَاجِرَةٍ حَافِرَةً ثُدِّيْرُونَهَا
بِيَنْتَكُمْ فَلَيَكُسْ عَلَيْكُمْ جُنَاحُكُمْ أَكَلِ
تَكْتُبُوهُا وَأَشْهِدُ وَلَا إِذَا بَأْعَثْتُمُو لَا

¹ अर्थात् मूल धन से अधिक लो।

(स्त्रियों) में से एक भूल जाये तो दूसरी याद दिला दे। तथा जब साक्षी बुलाये जायें तो इन्कार न करें। तथा विषय छोटा हो या बड़ा उस की अवधि सहित लिखवाने में आलस्य न करो, यह अल्लाह के समीप अधिक न्याय है। तथा साक्ष्य के लिये अधिक सहायक। और इस से अधिक समीप है कि संदेह न करो। परन्तु यदि तुम व्यापारिक लेन देन हाथों हाथ (नगद करते हो) तो तुम पर कोई दोष नहीं कि उसे न लिखो। तथा जब आपस में लेन देन करो तो साक्षी बना लो। और लेखक तथा साक्षी को हानि न पहुँचाई जाये। और यदि ऐसा करोगे तो तुम्हारी अवैज्ञा ही होगी, तथा अल्लाह से डरो। और अल्लाह तुम्हें सिखा रहा है। और निःन्देह अल्लाह सब कुछ जानता है।

283. और यदि तुम यात्रा में रहो, तथा लिखने के लिये किसी को न पाओ तो धरोहर रख दो। और यदि तुम में परस्पर एक दूसरे पर भरोसा हो (तो धरोहर की भी आवश्यकता नहीं) जिस पर अमानत (उधार) है, वह उसे चुका दे। तथा अल्लाह (अपने पालनहार) से डरे, और साक्ष्य को न छुपाओ, और जो उसे छुपायेगा तो उस का दिल पापी है, तथा तुम जो करते हो अल्लाह सब जानता है।

284. आकाशों तथा धरती में जो कुछ है सब अल्लाह का है। और जो तुम्हारे मन में है उसे बोलो अथवा मन

يُضَارُّ كَا تِبْ وَ لَا شَهِيدُّهُ وَ إِنْ تَفْعَلُوْ فَإِنَّهُ
فُسُوقٌ بِكُمْ وَ اتَّقُوا اللَّهَ وَ مَوْعِدُكُمُ اللَّهُ
وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلَيْهِمْ ۝

وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَى سَفَرٍ وَلَحْمَ حُجُودًا كَانِيْ فَرَهِنْ
مَغْبُوْصَهُ فَإِنْ أَوْنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلَيْوَدَ الَّذِي
أُؤْتِيَنَ آمَانَتَهُ وَلَيَقْتَلَ اللَّهَ رَبِّهُ وَلَا يَكْتُلُوا
الشَّهَادَهُ وَمَنْ يَكْتُلُهَا فَإِنَّهُ ابْطَلَهُ وَاللَّهُ
يَعْلَمُ مَمْلُوْنَ عَلَيْهِمْ ۝

يَلْهُومَانِيْ التَّمَلُوتِ وَيَأْنِيْ الْأَرْضَ وَإِنْ شُبُدُ دُوَامًا
فِيْ أَنْسِكُمْ أَوْ تُخْفُوْهُ يَحْاسِبُكُمْ بِوَاللهِ

ही में रखो अल्लाह तुम से उस का हिसाब लेगा। फिर जिसे चाहे क्षमा कर देगा। और जिसे चाहे दण्ड देगा। और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

285. रसूल उस चीज़ पर ईमान लाया जो उस के लिये अल्लाह की ओर से उतारी गई। तथा सब ईमान वाले उस पर ईमान लाये। वह सब अल्लाह तथा उस के फ़रिश्तों और उस की सब पुस्तकों एवं रसूलों पर ईमान लाये। (वह कहते हैं:) हम उस के रसूलों में से किसी के बीच अन्तर नहीं करते। हम ने सुना, और हम आज्ञाकारी हो गये। हे हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे, और हमें तेरे ही पास^[1] आना है।

286. अल्लाह किसी प्राणी पर उस की सकत से अधिक (दायित्व का) भार नहीं रखता। जो सदाचार करेगा उस का लाभ उसी को मिलेगा, और जो दुराचार करेगा उस की हानि भी उसी को होगी। हे हमारे पालनहार! यदि हम भूल चूक जायें तो हमें न पकड़ा हे हमारे पालनहार! हमारे ऊपर इतना बोझ न डाल जितना हम से पहले के लोगों पर डाला गया। हे हमारे पालनहार! हमारे पापों की अनदेखी कर दे, और हमें क्षमा कर दे, तथा हम पर दया कर, तू ही हमारा स्वामी है, तथा काफिरों के विरुद्ध हमारी सहायता कर।

فَيَغْفِرُ لِمَنِ يَشَاءُ وَلَا يَعْذِبُ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ^①

أَمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلُّ أَمَنَ بِاللَّهِ وَمَلِكَتِهِ وَكُلُّهُ وَرُسُلِهِ لَا تَرْجِعُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رَسُولِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَآتَعْنَا أَعْفُرُ أَنَّكَ رَبُّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ^②

لَا يَكْلُفُ اللَّهُ نَفْسًا لَا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ مَرَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ سِينَا أَوْ أَخْطَلْنَا أَرْبَبَنَا وَلَا تَحْمِلْنَا إِنْرَبْرَبَنَا كَمَا حَمَلْنَا عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا أَرْبَبَنَا وَلَا حَمَلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُنَا عَنْهَا وَأَغْفِرْلَنَا وَارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَانَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكُفَّارِينَ ۝

¹ इस आयत में सत्यर्म इस्लाम की आस्था तथा कर्म का सारांश बताया गया है।